विक्रम संवत् 2080 ■ पौष/माघ मास(11) ■ 01 जनवरी 2024 ■ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

26 जनवरी 2024 — 75 वां गणतंत्र दिवस

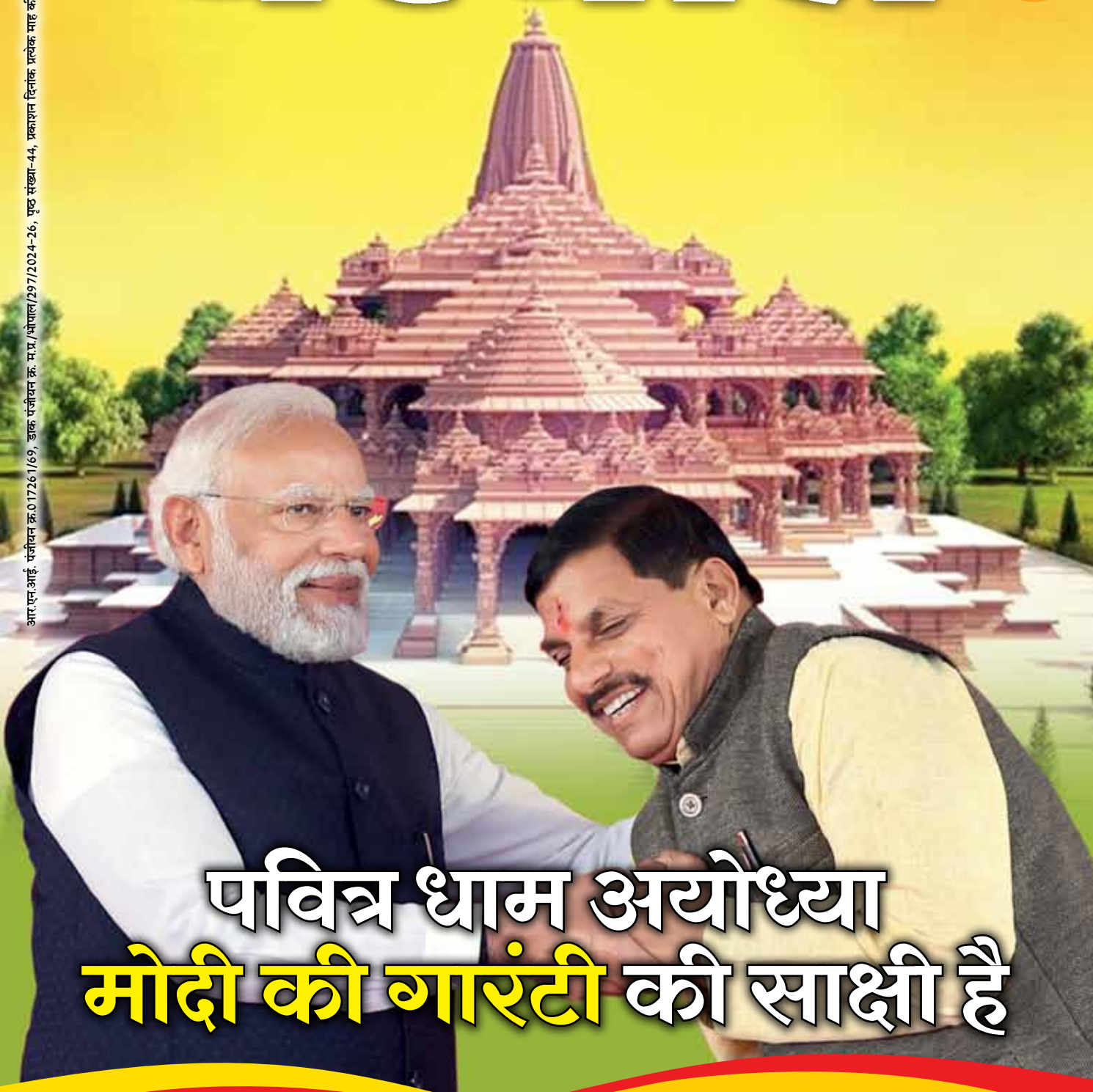

पवित्र धाम अयोध्या मोदी की गारंटी की साक्षी है

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संसद हमले में शहीद हुए बहादुर सुरक्षाकर्मियों को पुष्पांजलि अर्पित की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बाबासाहेब डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर जी को उनके महापरिनिर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी और गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने गुरुद्वारा बारा सिख्ख संगत (पश्चिम बंगाल) में प्रार्थना की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत मंडपम में ''वीर बाल दिवस'' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों के साथ बातचीत की।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

- श्री राम जी से मोदी जी तक का भारत

कवर स्टोरी 05

- पवित्र धाम अयोध्या मोदी की गारंटी की साक्षी है

विकास का पलड़ा भारी : 08
» विधानसभा चुनावों में भाजपा की शानदार जीत...

मोदी की गारंटी वाली गाड़ी : 10
» जहाँ दूसरों से उम्मीद खत्म, वहाँ से मोदी की गारंटी शुरु...

एक भारत-श्रेष्ठ भारत : 13
» हर घर अयोध्या और हर घर में राम...

भारत के सशक्त कानून : 17
» आजादी के अमृत काल में सशक्त भारत के सशक्त कानून...

मत और बढ़ाना है : 19
» योजनाओं को मोर्चा पदाधिकारी जन-जन तक पहुंचाएं...

आलेख : 20
» चार मुए तो क्या हुआ जीवित कई हजार...

सशक्त साझी विरासत : 22
» काशी-तमिल संगमम की आवाज पूरी दुनिया में जा रही है...

फैसला : अनुच्छेद 370 : 24
» सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 370 पर अपने फैसले में भारत...

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना : 27
» प्रधानमंत्री मुद्रा योजना में 69 प्रतिशत ऋण महिलाओं को...

भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था : 28
» अंतरिक्ष भारत की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक बनता...

मन की बात : 30
» भारत का Innovation Hub बनना, इस बात का...

कविता : अटल बिहारी वाजपेयी : 35
» गगन मे लहरता है भगवा हमारा...

पुण्यतिथि : 36
» भारत को विश्वगुरु बनना है

जयंती : 37
» 11 सितम्बर 1893 :स्वामी विवेकानन्द द्वारा शिकागो...
» क्रांतिकारी विचारों के प्रेरक थे लालाजी...

त्यौहार : 39
» सूर्य नारायण का पर्व है मकर संक्रान्ति

विचार प्रवाह : 40
» भारत के राष्ट्रवाद की अवधारणा...

■ मुख्य व्रत-त्यौहार

4. रूक्मिणी अष्टमी 6. भ. पार्श्वनाथ जन्म क. 7. सफला एकादशी व्रत 8. सुरूप द्वादशी 9. प्रदोष व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत 10. पाक्षिक प्रतिक्रमण 11. स्नान दान श्राद्ध, पौषी अमावस 12. चन्द्रदर्शन 14. विनायकी चतुर्थी व्रत 15. मकर संक्रांति पुण्यकाल 21. पुत्रदा एकादशी व्रत, रोहिणी व्रत 23. प्रदोष व्रत 25. स्नानदान व्रत, पौषी पूर्णिमा, षोडषकारण व्रत प्रारम्भ 28. कुमुहूर्ता उत्तर्या 29. संकटा गणेश चतुर्थी, तिल चतुर्थी व्रत

■ मुख्य जयंती-दिवस

7. राजिम भक्तिन माता जयंती 10. विश्व हिन्दी दिवस 12. महर्षि महेश योगी जयंती 13. तिलका मांझी बलिदान दिवस 15. थल सेना दिवस 20. अ.भा. मारवाड़ी युवा मंच स्था. दि. 21. वीर हेमूकालाणी शहीद दिवस 26. छेरछेरा 28. लाला लाजपतराय जयंती 30. शहीद स्मृति दिवस 31. अवतार मेहेरबाबा की अमरतिथि

वर्ष-55, अंक : 11, भोपाल, जनवरी 2024

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

बिना किसी उद्देश्य या दिशा के जिये गये नीरस जीवन का कोई मतलब नहीं है। जीवन में कुछ बड़ा प्राप्त करने के लिए आपको अपना सर्वस्व दांव पर लगा देना चाहिए और अपने विश्वास के बल पर छलांग लगानी चाहिए।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

संपादकीय

श्रीराम जी से मोदी जी तक का भारत

श्री राम को मन-मस्तिष्क में रखकर कर्मभूमि पर उतरने का प्रयास भी श्री रामजी को पाने का एक तरीका है, साधन है। श्री राम तक पहुंचना संभव नहीं है पर श्री राम के दिखाये मार्ग का अनुसरण तो किया जा सकता है। राम भक्ति से प्राप्त सकारात्मक ऊर्जा से, प्रेरणा से,भक्ति भाव से जन-जन का कल्याण तो होता ही है।

प्रभु श्री राम, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, दशरथ नंदन श्री राम, अवधपति श्री राम, दीनदयालु श्री राम, भक्तों के श्री राम, अधर्मियों को भी मुक्ति देकर अपने परमधाम पहुंचाने वाले श्री राम, महर्षि वाल्मीकि के श्री राम, तुलसीदासजी के श्री राम, केवट के प्रभु श्री राम, वानरों के प्रभु श्री राम, जटायु के प्रभु श्री राम, इन्द्र पुत्र जयन्त के प्रभु श्री राम, देवताओं के रक्षक प्रभु श्री राम, बाली के प्रभु श्री राम, तारा के प्रभु श्री राम, सुग्रीव के प्रभु श्री राम, अंगद के प्रभु श्री राम, विभीषण के प्रभु श्री राम, कुंभकरण के प्रभु श्री राम, मंदोदरी के प्रभु श्री राम, रावण के प्रभु श्री राम,श्री राम विराट हैं, श्री राम सर्वत्र है, श्री राम सर्वस्व हैं, श्री राम सदैव हैं, श्री राम साधु संतों के हैं,श्री राम जानकी के हैं, श्री राम जनक के हैं, सर्वत्र श्री राम है, कौशल्या के श्री राम हैं, कैकयी के श्री राम हैं, कैकयी नंदन भरत के श्री राम है, सर्वत्र राम ही राम हैं, राम अलौकिक हैं, भक्तों के साथ चलने वाले श्री राम हैं, श्री राम कहां नहीं है, श्री राम सदैव हैं।

यों तो कालचक्र है, समय की धारा है, पर श्रीराम स्थाई हैं क्योंकि श्री राम जी युगों-युगों से दिलों पर राज करते हैं, सनातनी तो राम-राम रटते-रटते भवसागर को पार कर जाते हैं पर आसुरी शक्तियां भी जो भूल से एक बार भी श्री राम का नाम ले लेती हैं वह भी राम जी के परमधाम को प्राप्त कर लेती हैं। ऐसे श्री राम की महिमा तो स्वयं सरस्वती भी बखान नहीं कर सकती तो साधारण इंसान के लिए तो कल्पना से भी परे है। कोशिश करना संभव ही नहीं है, श्री राम को जितना खोजा गया है-उतना ही गहरा और गहरा पाया गया। ना आदि है ना अंत है श्री राम तो अनंत हैं।

श्री राम को मन-मस्तिष्क में रखकर कर्मभूमि पर उतरने का प्रयास भी श्री रामजी को पाने का एक तरीका है, साधन है। श्री राम तक पहुंचना संभव नहीं है पर श्री राम के दिखाये मार्ग का अनुसरण तो किया जा सकता है। राम भक्ति से प्राप्त सकारात्मक ऊर्जा से, प्रेरणा से,भक्ति भाव से जन-जन का कल्याण तो होता ही है। श्री रामजी की प्रेरणा से महिलाओं के प्रति सम्मान, आदर भाव, गरीबों के लिए चिंता, पीड़ितों-शोषित वर्ग के लिए समानता व सम्मान का भाव, कल्याण का प्रयास, किसानों-अन्नदाताओं का सम्मान, देश के वीर सैनिकों के लिए देश का आदर भाव, सम्मान, वैज्ञानिकों, व्यवसाईयों-व्यवसायों को प्रोत्साहन, ऐसे जाने असंख्य क्षेत्रों को देखा जावे तो सभी क्षेत्रों में 2014 के बाद से जबरदस्त परिवर्तन आया है या दूसरे शब्दों में कहा जाए तो परिदृश्य ही बदल सा गया है। जिसका लाभ देश के शोषित- पीड़ित-गरीब- बेसहारा लोगों को मिला। युवाओं को मिला। महिलाओं को मिला।

आज एक तरफ महिलाओं के बैंक में खाते खुले तो दूसरी तरफ महिलाओं के नाम मकान, दुकान, खेत, प्लाट, जमीन की रजिस्ट्री होने लगी। सेना में महिलाओं की महत्वपूर्ण पदों पर भागीदारी सुनिश्चित हुई तो दूसरी तरफ लोकसभा-विधानसभा में महिलाओं का आरक्षण निश्चित हुआ। महिलाओं को 10 करोड़ गैस कनेक्शन, वह भी मुफ्त में प्रदान किए गए तो दूसरी तरफ चूल्हे के धुएं से मुक्ति मिली। खुले में शौच से मुक्ति मिली तो महिला सम्मान का सार्थक प्रयास सिद्ध हुआ। घर-घर नल से जल मिला तो दूसरी तरफ देश का अब कोई भी गांव ऐसा नहीं है जहां बिजली ना पहुंची हो। महिलाओं से संबंधित अपराधों पर कानून का अंकुश लगा तो दूसरी तरफ शिक्षा, सरकारी नौकरियों में महिलाओं को आरक्षण का लाभ मिला। तीन तलाक एक ही झटके में इतिहास बन गया।

इस तरह अगर आप देखेंगे तो 2014 के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सरकार में महिलाओं के सम्मान व समग्र विकास का भरसक प्रयास किया गया। देश के विदेश मंत्री, रक्षामंत्री, वित्तमंत्री जैसे महत्वपूर्ण पदों को मातृ शक्ति ने सुशोभित किया। देश के इतिहास में बीते 9 वर्षों में महिलाओं के सम्मान व विकास में जितने प्रयास हुए वो अब तक के कुल प्रयासों पर भारी थे। महिलाओं के एक-एक वोट का ऋण ब्याज समेत मातृ शक्ति को वापिस किया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार बनते ही किसानों को अन्नदाता मानकर उनके जीवन की कठिनाइयों को समझ कर सुलझाने का प्रयास किया गया। गरीब किसानों को साहूकारों के चंगुल से मुक्त करने के लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि को लाया गया तो दूसरी तरफ यूरिया के भीषण समस्या को नीम कोटेड यूरिया के माध्यम से घोटालेबाजों से बचाया गया। जहां विश्व में यूरिया के दाम बढ़ रहे थे पर भारत में मोदी सरकार ने बढ़े हुए दामों के बोझ किसानों पर नहीं पड़ने दिया, पूरा बोझ सरकार ने खुद ही झेला। किसानों को फसल का मूल्य दिलवाया। छोटे किसानों के मोटे अनाज को स्वयं प्रधानमंत्री जी ने विश्व के राष्ट्राध्यक्षों को भोजन में पकवान के रूप में पेश किया। अब छोटा किसान बेचारा नहीं, मोदी का प्रिय अन्नदाता है।

मोदी जी ने क्या-क्या किया, कहां-कहां किया, कितना-कितना किया, किस-किस क्षेत्र में किया, एक साथ बताया जाना, या लिखा जाना संभव ही नहीं है। अब दिल्ली से चलने वाला पैसा सीधे महिलाओं के खाते में जाता है, गरीबों के खाते में जाता है, किसानों के खातों में जाता है, घोटालेबाज देखते ही रह जाते हैं। जैसे श्री रामजी का वर्णन संभव ही नहीं है। वैसे ही श्री मोदी जी के कार्यों का वर्णन भी संभव नहीं है। जैसे श्री रामजी ने आसुरी शक्तियों से मुक्ति दिलाने के लिए भीषण युद्ध किया, देवताओं, साधु संतों को भय मुक्त किया। राम राज्य की स्थापना की। सुख,शांति, वैभव की स्थापना की। वैसे ही मोदी जी ने मोदी की गारंटी को पूरा करने के लिए क्या-क्या प्रयास किए होंगें, कितनी मेहनत की होगी, कितनी रातों की नींद दलितों, गरीबों, पिछड़ों, महिलाओं,बेसहारा लोगों के जीवन में सुधार व उत्थान के लिए समर्पित किए होंगे,समझ पाना असंभव है। केवल कल्पना ही की जा सकती है। जिस प्रकार श्री रामजी का नाम अमोघ अस्त्र है तो दूसरी तरफ मोदी जी की गारंटी भी वह शब्द है जिनका भरोसा जन-जन को है और भरोसा भी उतना जितना भरोसा राजा दशरथ को श्री राम पर था।

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

पवित्र धाम अयोध्या मोदी की गारंटी की साक्षी है

दुनिया में कोई भी देश हो, अगर उसे विकास की नई ऊंचाई पर पहुंचना है, तो उसे अपनी विरासत को संभालना ही होगा। हमारी विरासत, हमें प्रेरणा देती है, हमें सही मार्ग दिखाती है।

इसलिए आज का भारत, पुरातन और नूतन दोनों को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ रहा है।

- **अयोध्या और उसके आसपास के क्षेत्र 11,100 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं से लाभान्वित होंगे।**
- **पूरी दुनिया उत्सुकता के साथ 22 जनवरी 2024 के ऐतिहासिक क्षण का इंतजार कर रही है।**
- **विकसित भारत के अभियान को अयोध्या से नई ऊर्जा मिल रही है।**
- **आज का भारत पुरातन और नूतन दोनों को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ रहा है।**
- **केवल अवध क्षेत्र ही नहीं, बल्कि अयोध्या पूरे उत्तर प्रदेश के विकास को नई दिशा देगी।**
- **महर्षि वाल्मिकी द्वारा रचित रामायण वह ज्ञान मार्ग है, जो हमें प्रभु श्री राम से जोड़ता है।**
- **गरीबों की सेवा की भावना आधुनिक अमृत भारत ट्रेनों के मूल में निहित है।**
- **22 जनवरी को सभी अपने घरों में श्री राम ज्योति जलाएं।**
- **सुरक्षा और व्यवस्था के कारणों से, 22 जनवरी का कार्यक्रम संपन्न होने के बाद ही अपनी अयोध्या यात्रा की योजना बनाएं।**
- **भव्य राम मंदिर के निर्माण के निमित्त, 14 जनवरी, मकर संक्रांति के दिन से पूरे देश के सभी तीर्थ स्थलों पर स्वच्छता का बहुत बड़ा अभियान चलाया जाना चाहिए।**
- **देश को मोदी की गारंटी पर भरोसा इसलिए है, क्योंकि मोदी जो गारंटी देता है, उसे पूरा करने के लिए दिन-रात एक कर देता है। ये अयोध्या नगरी भी तो इसकी साक्षी है।**

देश के इतिहास में 30 दिसंबर की तारीख बहुत ही ऐतिहासिक रही है। 30 दिसंबर, 1943 में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने अंडमान में झंडा फहरा कर भारत की आजादी का जयघोष किया था। आज विकसित भारत के निर्माण को गति देने के अभियान को अयोध्या नगरी से नई ऊर्जा मिल रही है। यहां 15 हजार करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण हुआ है। Infrastructure से जुड़े ये काम, आधुनिक अयोध्या को देश के नक्शे पर फिर से गौरव के साथ स्थापित करेंगे। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के बीच ये कार्य अयोध्यावासियों के अथक परिश्रम का परिणाम है।

दुनिया में कोई भी देश हो, अगर उसे विकास की नई ऊंचाई पर पहुंचना है, तो उसे अपनी विरासत को संभालना ही होगा। हमारी विरासत, हमें प्रेरणा देती है, हमें सही मार्ग दिखाती है। इसलिए आज का भारत, पुरातन और नूतन दोनों को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ रहा है। एक समय था जब अयोध्या में राम लला टेंट में विराजमान थे। आज पक्का घर सिर्फ राम लला को ही नहीं बल्कि पक्का घर देश के चार करोड़ गरीबों को भी मिला है। आज भारत अपने तीर्थों को भी संवार रहा है, तो वहीं digital technology की दुनिया में भी हमारा देश छाया हुआ है। आज भारत काशी विश्वनाथ धाम के पुनर्निर्माण के साथ ही देश में 30 हजार से ज्यादा पंचायत भवन भी बनवा रहा है। आज देश में सिर्फ केदार धाम का पुनरुद्धार ही नहीं हुआ है बल्कि 315 से ज्यादा नए मेडिकल कॉलेज भी बने हैं। आज देश में महाकाल महालोक का निर्माण ही नहीं हुआ है बल्कि हर घर जल पहुंचाने के लिए पानी की 2 लाख से ज्यादा टंकियां भी बनवाई हैं। हम चांद, सूरज और समुद्र की गहराइयों को भी नाप

रहे हैं, तो अपनी पौराणिक मूर्तियों को भी रिकॉर्ड संख्या में भारत वापस ला रहे हैं। आज के भारत का मिजाज, अयोध्या में स्पष्ट दिखता है। आज यहां प्रगति का उत्सव है, तो कुछ दिन बाद यहां परंपरा का उत्सव भी होगा। आज यहां विकास की भव्यता दिख रही है, तो कुछ दिनों बाद यहां विरासत की भव्यता और दिव्यता दिखने वाली है। यही तो भारत है। विकास और विरासत की यही साझा ताकत, भारत को 21 वीं सदी में सबसे आगे ले जाएगी।

प्राचीन काल में अयोध्या नगरी कैसी थी, इसका वर्णन खुद महर्षि वाल्मीकि जी ने विस्तार से किया है। उन्होंने लिखा है -

कोसलो नाम मुदितः स्फीतो जनपदो महान्।
निविष्ट सरयूतीरे प्रभूत-धन-धान्यवान्।

अर्थात्- वाल्मीकि जी बताते हैं कि महान अयोध्यापुरी धन-धान्य से परिपूर्ण थी, समृद्धि के शिखर पर थी, और आनंद से भरी हुई थी। यानी, अयोध्या में विज्ञान और वैराग्य तो था ही, उसका वैभव भी शिखर पर था। अयोध्या नगरी की उसी पुरातन पहचान को हमें आधुनिकता से जोड़कर वापस लाना है।

आने वाले समय में अयोध्या नगरी, अवध क्षेत्र ही नहीं बल्कि पूरे यूपी के विकास को ये हमारी अयोध्या दिशा देने वाली है। अयोध्या में श्रीराम का भव्य मंदिर बनने के बाद यहां आने वाले लोगों की संख्या में बहुत बड़ी वृद्धि होगी। इसे ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार, अयोध्या में हजारों करोड़ रुपए के विकास कार्य करा रही है, अयोध्या को smart बना रही है। आज अयोध्या में सड़कों का चौड़ीकरण हो रहा है, नए footpath बन रहे हैं। आज अयोध्या में नए flyovers बन रहे हैं, नए पुल बन रहे हैं। अयोध्या को आसपास के जिलों से जोड़ने के लिए भी यातायात के साधनों को सुधारा जा रहा है।

अयोध्या एयरपोर्ट का नाम महर्षि वाल्मीकि के नाम पर रखा गया है। महर्षि वाल्मीकि ने हमें रामायण के माध्यम से प्रभु श्रीराम के कृतित्व से परिचित करवाया। महर्षि वाल्मीकि के लिए प्रभु श्रीराम ने कहा था-

''तुम त्रिकालदर्शी मुनिनाथा, विस्व बदर जिमि तुम्रे हाथा।''

अर्थात्, हे मुनिनाथ! आप त्रिकालदर्शी हैं। सम्पूर्ण विश्व आपके लिए हथेली पर रखे हुए बेर के समान है। ऐसे त्रिकालदर्शी महर्षि वाल्मीकि जी के नाम पर अयोध्या धाम एयरपोर्ट का नाम, इस एयरपोर्ट में आने वाले हर यात्री को धन्य करेगा। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण वो ज्ञान मार्ग है जो हमें प्रभु श्रीराम से जोड़ती है। आधुनिक भारत में महर्षि वाल्मीकि इंटरनेशनल एयरपोर्ट अयोध्या धाम, हमें दिव्य-भव्य-नव्य राम मंदिर से जोड़ेगा। जो ये नया एयरपोर्ट बना है, उसकी क्षमता हर साल 10 लाख यात्रियों की सेवा करने की क्षमता है। जब इस एयरपोर्ट के दूसरे चरण का काम भी पूरा हो जाएगा तो महर्षि वाल्मीकि इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर हर साल 60 लाख यात्री आ-जा सकेंगे। अभी अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन पर हर रोज 10-15 हजार लोगों की सेवा करने की क्षमता है। स्टेशन का पूरा विकास होने के बाद अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन पर हर रोज 60 हजार लोग आ-जा सकेंगे।

रामपथ, भक्तिपथ, धर्मपथ और श्रीराम जन्मभूमि पथ से आवाजाही और सुगम होगी। नए मेडिकल कॉलेज से यहां आरोग्य की सुविधाओं को और विस्तार मिलेगा। सरयू जी की निर्मलता बनी रहे, इसके लिए भी डबल इंजन सरकार पूरी तरह समर्पित है। सरयू जी में गिरने वाले दूषित पानी को रोकने के लिए भी काम शुरू हुआ है। राम की पैड़ी को एक नया स्वरूप दिया गया है। सरयू के किनारे नए-नए घाटों का विकास हो रहा है। यहां के सभी प्राचीन कुंडों का पुनरुद्धार भी किया जा रहा है। लता मंगेशकर चौक हो या राम कथा स्थल ये अयोध्या की पहचान बढ़ा रहे हैं। अयोध्या में बनने जा रही नई township, यहां के लोगों का जीवन और आसान बनाएगी। विकास के इन कार्यों से अयोध्या में रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर भी बनेंगे। इससे यहां के टैक्सी वाले, रिक्शा वाले, होटल वाले, ढाबे वाले, प्रसाद वाले, फूल बेचने वाले, पूजा की सामग्री बेचने वाले, हमारे छोटे-मोटे दुकानदार भाई, सभी की आय बढ़ेगी।

आधुनिक रेलवे के निर्माण की तरफ एक और बड़ा कदम देश ने उठाया है। वंदे भारत और नमो भारत के बाद, एक और आधुनिक ट्रेन देश को मिली है। इस नई ट्रेन सिरीज का नाम अमृत भारत ट्रेन रखा गया है। वंदे भारत, नमो भारत और अमृत भारत ट्रेनों की ये त्रिशक्ति, भारतीय रेलवे का कायाकल्प करने जा रही है। इससे बड़ी खुशी की बात क्या हो सकती है कि ये पहली अमृत भारत ट्रेन अयोध्या से गुजर रही है। दिल्ली-दरभंगा अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन, दिल्ली-यूपी-बिहार के लोगों की यात्रा को आधुनिक बनाएगी। इससे बिहार के लोगों के लिए भव्य राममंदिर में विराजने जा रहे रामलला के दर्शन को और सुगम बनाएगी। ये आधुनिक अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनें, विशेष रूप से हमारे गरीब परिवार, हमारे श्रमिक साथियों को बहुत मदद करेंगी। श्रीराम चरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-

पर हित सरिस धरम नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।

अर्थात्, दूसरों की सेवा करने से बड़ा और कोई धर्म, कोई और कर्तव्य नहीं है। आधुनिक अमृत भारत ट्रेनें गरीब की सेवा इसी भावना से ही शुरू की गई हैं। जो लोग अपने काम के कारण अक्सर लंबी दूरी का सफर करते हैं, जिनकी उतनी आमदनी नहीं है, वे भी आधुनिक सुविधाओं और आरामदायक सफर के हकदार हैं। गरीब के जीवन की भी गरिमा है, इसी ध्येय के साथ इन ट्रेनों को design किया गया है। पश्चिम बंगाल और कर्नाटका के साथियों को भी उनके राज्य की पहली अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन मिली है।

विकास और विरासत को जोड़ने में वंदे भारत एक्सप्रेस बहुत बड़ी भूमिका निभा रही है। देश की पहली वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन, काशी के लिए चली थी। आज देश के 34 routes पर वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनें चल रही हैं। काशी, वेष्णो देवी के लिए कटरा, उज्जैन, पुष्कर, तिरुपति, शिरडी, अमृतसर, मदुरै, आस्था के ऐसे हर बड़े केंद्रों को वंदे भारत जोड़ रही है। इसी कड़ी में अयोध्या को भी वंदे भारत ट्रेन का उपहार मिला है। अयोध्या धाम जंक्शन - आनंद विहार वंदे भारत शुरू की गई है। इसके अलावा कटरा से दिल्ली, अमृतसर से दिल्ली, कोयम्बटूर-बेंगलुरु, मैंगलुरु- मडगांव, जालना- मुंबई इन शहरों के बीच भी वंदे भारत की नई सेवाएं शुरु हुई हैं। वंदे भारत में गति भी है, वंदे भारत में आधुनिकता भी है और वंदे भारत में आत्मनिर्भर भारत का गर्व भी है। बहुत ही कम समय में वंदे भारत से डेढ़ करोड़ से अधिक यात्री सफर कर चुके हैं। विशेष तौर पर युवा पीढ़ी को ये ट्रेन बहुत पसंद आ रही है।

हमारे देश में प्राचीन काल से ही तीर्थ यात्राओं का अपना महत्व रहा है, अपना गौरवशाली इतिहास रहा है। बद्री विशाल से सेतुबंध रामेश्वरम की यात्रा, गंगोत्री से गंगासागर की यात्रा,द्वारकाधीश से जगन्नाथपुरी की यात्रा, द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा, चार धामों की यात्रा, कैलाश मानसरोवर यात्रा, कांवड़ यात्रा, शक्तिपीठों की यात्रा, पंढरपुर यात्रा, आज भी भारत के कोने-कोने में कोई ना कोई यात्रा निकलती रहती है, लोग आस्था के साथ उनसे जुड़ते रहते हैं। तमिलनाडु में भी कई यात्राएं प्रसिद्ध हैं। शिवस्थल पाद यात्तिरै, मुरुगनुक्कु कावडी यात्तिरै, वैष्णव तिरुप-पदि यात्तिरै, अम्मन तिरुत्तल यात्तिरै, केरला में सबरीमाला यात्रा हो, आंध्र-तेलंगाना में मेदाराम में सम्मक्का और सरक्का की यात्रा हो, नागोबा यात्रा, इनमें लाखों की संख्या में श्रद्धालु जुटते

हैं। यहां बहुत कम लोगों को पता होगा कि केरला में भगवान राम और उनके भाइयों भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के धाम की भी यात्रा होती है। ये यात्रा नालंबलम यात्रा के नाम से जानी जाती है। इसके अलावा देश में कितनी ही परिक्रमाएं भी जारी रहती हैं। गोवर्धन परिक्रमा, पंचकोसी परिक्रमा, चौरासी कोसी परिक्रमा, ऐसी यात्राओं और परिक्रमाओं से हर भक्त का ईश्वर के प्रति जुड़ाव और मजबूत होता है। बौद्ध धर्म में भगवान बुद्ध से जुड़े स्थलों गया, लुंबिनी, कपिलवस्तु, सारनाथ, कुशीनगर की यात्राएं होती हैं। राजगीर बिहार में बौद्ध अनुयायियों की परिक्रमा होती है। जैन धर्म में पावागढ़, सम्मेद शिखरजी, पालीताना, कैलाश की यात्रा हो, सिखों के लिए पंच तख्त यात्रा और गुरु धाम यात्रा हो, अरुणाचल प्रदेश में नॉर्थ ईस्ट में परशुराम कुंड की विशाल यात्रा हो, इनमें शामिल होने के लिए श्रद्धालु पूरी आस्था से जुटते हैं। देश भर में सदियों से हो रही इन यात्राओं के लिए वैसे ही समुचित इंतजाम भी किए जाते हैं। अब अयोध्या में हो रहे ये निर्माण कार्य, यहां आने वाले हर रामभक्त के लिए अयोध्या धाम की यात्रा को, भगवान के दर्शन को और आसान बनाएंगे।

ये ऐतिहासिक क्षण, बहुत भाग्य से हम सभी के जीवन में आया है। हमें देश के लिए नव संकल्प लेना है, खुद को नई ऊर्जा से भरना है। इसके लिए 22 जनवरी को सभी अपने घरों में, मैं पूरे देश के 140 करोड़ देशवासियों को अयोध्या की इस पवित्र भूमि से प्रार्थना कर रहा हूं, अयोध्या की प्रभु राम की नगरी से प्रार्थना कर रहा हूं, मैं 140 करोड़ देशवासियों को हाथ जोड़कर के प्रार्थना कर रहा हूं, कि आप 22 जनवरी को जब अयोध्या में प्रभु राम विराजमान हों, अपने घरों में भी श्रीराम ज्योति जलाएं, दीपावली मनाएं। 22 जनवरी की शाम पूरे हिन्दुस्तान में जगमग-जगमग होनी चाहिए। लेकिन साथ ही, मेरी सभी देशवासियों से एक करबद्ध प्रार्थना और भी है। हर किसी की इच्छा है कि 22 जनवरी को होने वाले आयोजन का साक्षी बनने के लिए वो स्वंय अयोध्या आएं लेकिन आप भी जानते हैं कि हर किसी का आना संभव नहीं है। अयोध्या में सबका पहुंचना बहुत मुश्किल है और इसलिए सभी राम भक्तों को, देशभर के राम भक्तों को, मेरा हाथ जोड़कर के प्रणाम के साथ प्रार्थना है। मेरा आग्रह है कि 22 जनवरी को एक बार विधिपूर्वक कार्यक्रम हो जाने के बाद, 23 तारीख के बाद, अपनी सुविधा के अनुसार वो अयोध्या आएं, अयोध्या आने का मन 22 तारीख को न बनाएं। प्रभु राम जी को तकलीफ हो ऐसा हम भक्त कभी कर नहीं सकते हैं। प्रभु राम जी पधार रहे हैं तो हम भी कुछ दिन इंतजार करें, 550 साल इंतजार किया हैं, कुछ दिन और इंतजार कीजिए। और इसलिए सुरक्षा के लिहाज से, व्यवस्था के लिहाज से, मेरी आप सबसे बार-बार प्रार्थना है कि कृपा कर, क्योंकि अब प्रभु राम के दर्शन अयोध्या का नव्य, भव्य, दिव्य मंदिर आने वाली सदियों तक दर्शन के लिए उपलब्ध है। आप जनवरी में आए, फरवरी में आए, मार्च में आए, एक साल के बाद आए, दो साल के बाद आए, मंदिर है ही। और इसलिए 22 जनवरी को यहां पहुंचने के लिए भीड़-भाड़ करने से आप बचिये ताकि यहां जो व्यवस्था है, मंदिर के जो व्यवस्थापक लोग हैं, मंदिर का जो ट्रस्ट है, इतना पवित्र उन्होंने काम किया है, इतनी मेहनत करके किया है, पिछले 3-4 साल से दिन-रात काम किया है, उनको हमारी तरफ से कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए, और इसलिए मैं बार-बार आग्रह करता हूं कि 22 को यहां पहुंचने का प्रयास न करें। कुछ ही लोगों को निमंत्रण गया है वे लोग आएंगे और 23 के बाद सारे देशवासियों के लिए आना बड़ा सरल हो जाएगा।

देश भर के लोगों से मेरी प्रार्थना है। भव्य राम मंदिर के निर्माण के निमित्त, एक सप्ताह पहले, 14 जनवरी, मकर संक्रांति के दिन से पूरे देश के छोटे-मोटे सब तीर्थ स्थलों पर स्वच्छता का एक बहुत बड़ा अभियान चलाया जाना चाहिए। हर मंदिर, हिन्दुस्तान के हर कोने में हमें उसकी सफाई का अभियान मकर सक्रांति 14 जनवरी से 22 जनवरी तक हमें चलाना चाहिए। प्रभु राम पूरे देश के हैं और प्रभु राम जी जब आ रहे हैं तो हमारे एक भी मंदिर, हमारा एक भी तीर्थ क्षेत्र उसका और उसके परिसर के इलाके का अस्वच्छ नहीं होना चाहिए, गंदगी नहीं होनी चाहिए।

जब 1 मई, 2016 को हमने यूपी के बलिया से उज्ज्वला योजना शुरू की थी, तो कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि ये योजना, सफलता की इस ऊंचाई पर पहुंचेगी। इस योजना ने करोड़ों परिवारों का, करोड़ों माताओं-बहनों का जीवन हमेशा के लिए बदल दिया है, उन्हें लकड़ी के धुएं से मुक्ति दिलाई है।

हमारे देश में गैस कनेक्शन देने का काम 60-70 साल पहले शुरू किया गया था। यानि 6-7 दशक पहले। लेकिन 2014 तक हालत ये थी कि 50-55 साल में सिर्फ 14 करोड़ गैस कनेक्शन ही दिए जा चुके थे। यानि पांच दशक में 14 करोड़। जबकि हमारी सरकार ने एक दशक में 18 करोड़ नए गैस कनेक्शन दिए हैं। और इस 18 करोड़ में 10 करोड़ गैस कनेक्शन मुफ्त में दिए गए हैं... उज्ज्वला योजना के तहत दिए गए हैं। जब गरीब की सेवा की भावना हो, जब नीयत नेक हो तो इसी तरह से काम होता है, इसी तरह के नतीजे मिलते हैं। आजकल कुछ लोग मुझसे पूछते हैं कि मोदी की गारंटी में इतनी ताकत क्यों है।

मोदी की गारंटी में इतनी ताकत इसलिए है क्योंकि मोदी जो कहता है, वो करने के लिए जीवन खपा देता है। **मोदी की गारंटी पर आज देश को इसलिए भरोसा है...क्योंकि मोदी जो गारंटी देता है, उसे पूरा करने के लिए दिन-रात एक कर देता है। ये अयोध्या नगरी भी तो इसकी साक्षी है। और अयोध्या के इस पवित्र धाम के विकास में हम कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे।** ▪

"मोदी है, तो मुमकिन है"

विधानसभा चुनावो में भाजपा की शानदार जीत

चार राज्यों के विधानसभा चुनावों के परिणाम ने स्पष्ट संदेश दिया है कि-

- देश में किसी की गारंटी है तो एक ही गारंटी है- वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की गारंटी है।
- विधानसभा चुनावों के नतीजों ने एक और स्पष्ट संदेश दिया है "मोदी है, तो मुमकिन है"।
- देश ने समझ लिया है कि अगर कोई गांवों को मजबूती दे सकता है, तो वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी दे सकते हैं। गांव, गरीब, वंचित, शोषित, दलित, आदिवासी भाई-बहनों को समाज की मुख्यधारा में कोई ला सकता है, तो वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ही ला सकते हैं।
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के "विकास" का पलड़ा इंडी एलायंस की "जातिवाद और तुष्टिकरण" की राजनीति पर भारी है।
- I.N.D.I. एलायंस ने चुनावों में जातिवाद फैलाने, समाज को खंडित करने, देश को बांटने की कोशिश की और तुष्टिकरण की राजनीति को आगे बढ़ाया लेकिन देश एवं प्रदेश की जनता ने जातिवाद और तुष्टिकरण की राजनीति को सिरे से नकार दिया है।
- विधानसभा चुनावों में नए-नए जोश और नारों के साथ I.N.D.I.A. एलायंस के नेता घड़ियाली आंसू बहाकर ओबीसी-ओबीसी का रट लगाए हुए थे। I.N.D.I.A. एलायंस के नेता भूल जाते हैं कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भी ओबीसी समुदाय से आते हैं।
- कांग्रेस ने इस चुनाव में जिस प्रकार से देश के सर्वाधिक लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी पर अभद्र टिप्पणियां की है, वह न सिर्फ असंसदीय है, बल्कि बहुत ही निम्न स्तरीय राजनीतिक मानसिकता का भी प्रतीक है।
- कांग्रेस नेताओं ने देश के प्रधानमंत्री पर ऐसी गंदी टिप्पणियां करते समय भी यह ध्यान में नहीं रखा कि श्री नरेन्द्र मोदी जी को गाली देने का मतलब पिछड़ी जाति (ओबीसी) को गाली देना है।

राज्यों के विधानसभा चुनावों के परिणामों ने स्पष्ट संदेश दिया है कि देश ने समझ लिया है कि अगर कोई गांवों को मजबूती दे सकता है, तो वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी दे सकते हैं।

गांव, गरीब, वंचित, शोषित, दलित, आदिवासी भाई बहनों को समाज की मुख्यधारा में कोई ला सकता है, तो वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ही ला सकते हैं।

- एक (कांग्रेस) नेता हैं, जो गाली देने के बाद भी कहते हैं कि माफी नहीं मांगूंगा। उनकी रस्सी जल गयी किंतु बल नहीं गया। इस चुनाव के नतीजों ने ऐसे नेताओं के बल एक बार नहीं, बल्कि अनेकों बार खत्म किया है।
- भाजपा को किसी जाति, समुदाय या समूह का नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग का आशीर्वाद मिला है।

राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनावों में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने बहुत बड़ी जीत हासिल की है।

भारतीय जनता पार्टी जब भी कोई चुनाव लड़ती है चाहे वो देश का चुनाव हो या प्रदेश का हो, समय अनुकूल हो या प्रतिकूल हो, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हमेशा आगे बढ़कर नेतृत्व को संभाला है और चुनौतियों को स्वीकार किया है। उनके अथक प्रयास और मेहनत से संगठन एवं चुनाव की रणनीतियों की छोटी-छोटी बारीकियों को ध्यान में रखकर चुनावी नतीजों को बेहतर परिणाम तक पहुंचाया है। सिर्फ इस बार हुए विधानसभा चुनावों में नहीं, बल्कि इससे पहले हुए अनेक चुनावों में उन्होंने बेहतर परिणाम दिलाया है।

राज्यों के विधानसभा चुनावों के परिणामों ने स्पष्ट संदेश दिया है कि देश ने समझ लिया है कि अगर कोई गांवों को मजबूती दे सकता है, तो वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी दे सकते हैं। गांव, गरीब, वंचित, शोषित, दलित, आदिवासी भाई बहनों को समाज की मुख्यधारा में कोई ला सकता है, तो वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ही ला सकते हैं। देश में सबको विश्वास है कि चाहे महिला सशक्तिकरण हो या चाहे किसानों के

सम्मान की बात हो, या युवाओं की आकांक्षाओं एवं इच्छाओं को साकार करने की बात हो, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ही सबको साथ लेकर सबके सपनों को साकार करेंगे।

विधानसभा चुनाव परिणामों ने एक और संदेश दिया है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के ''विकास'' का पलड़ा इंडी एलायंस की ''जातिवाद और तुष्टिकरण'' की राजनीति पर भारी है। इंडी एलायंस ने इस चुनावों में जातिवाद फैलाने, समाज को खंडित करने, देश को बांटने की कोशिश की और तुष्टिकरण की राजनीति को आगे बढ़ाया है, लेकिन देश एवं प्रदेश की जनता ने जातिवाद और तुष्टिकरण की राजनीति को सिरे से नकार दिया है।

विधानसभा चुनावों में नए-नए जोश और नारों के साथ I.N.D.I.A. एलायंस के नेता घड़ियाली आंसू बहाकर ओबीसी-ओबीसी का रट लगाए हुए थे। I.N.D.I.A. एलयांस के नेता भूल जाते हैं कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भी ओबीसी समुदाय से आते हैं। उन्होंने समाज में सबका साथ और सबका विकास का प्रण लेकर सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मूलमंत्र को बढ़ाया है। लेकिन, कांग्रेस ने इस चुनाव में जिस प्रकार से देश के सर्वाधिक लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी पर अभद्र टिप्पणियां की है, वह न सिर्फ असंसदीय है, बल्कि बहुत ही निम्न स्तरीय राजनीति एवं मानसिकता का भी प्रतीक है। कांग्रेस नेताओं ने ऐसी टिप्पणी की है कि उसे दोहराना भी उचित नहीं है। कांग्रेस नेताओं ने देश के प्रधानमंत्री पर ऐसी गंदी टिप्पणियां करते समय भी यह भी ध्यान में नहीं रखा कि श्री नरेन्द्र मोदी जी को गाली देने का मतलब पिछड़ी जाति (ओबीसी) को गाली देना है। एक (कांग्रेस) नेता हैं, जो कहते हैं कि मैं माफी नहीं मांगूंगा। उनकी रस्सी जल गयी किंतु बल नहीं गया है। इस चुनाव के नतीजों ने ऐसे नेताओं के बल एक बार नहीं, बल्कि अनेकों बार खत्म किया है।

भारतीय जनता पार्टी के लाखों कार्यकर्ताओं ने पूरी लगन एवं मेहनत से चुनाव में उतर कर पार्टी को जीत दिलायी है। मीडिया पूछती थी कि भाजपा की रणनीति क्या है? उन्हें मालूम होना चाहिए कि भारतीय जनता पार्टी की एक ही रणनीति है कि पार्टी द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों को लेकर कार्यकर्ता दिन-रात जमीन पर मेहनत करते हैं। यह उसी का परिणाम है कि विधानसभा चुनावों में पार्टी को बेहतर परिणाम मिला है। भाजपा को किसी जाति, समुदाय या समूह का नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग का आशीर्वाद मिला है। ▪

विकसित भारत संकल्प यात्रा में बढ़-चढ़कर सहभागिता करें

इस साल मध्यप्रदेश में हुए विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता युवा मोर्चा कार्यकर्ताओं ने बड़ी भूमिका निभाई है। कुछ माह बाद ही लोकसभा के चुनाव होने जा रहे हैं, सभी कार्यकर्ता दोगुनी ताकत के साथ फिर एक बार भाजपा की प्रचंड जीत सुनिश्चित करेंगे।

देश को सशक्त नेतृत्व पर गर्व है

देश को सशक्त नेतृत्व प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के रूप में मिला है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी सच्चे अर्थों में गरीबों के मसीहा हैं। हमारा देश आज जिस तेजी के साथ हर क्षेत्र में अग्रसर हो रहा है, विकास के स्वर्णिम अध्याय लिखे जा रहे हैं, गरीबों का उत्थान हो रहा है, सांस्कृतिक वैभव बढ़ रहा है, विदेशों में भी भारत की गूंज हो रही है यह सब महत्वपूर्ण कार्य युवाओं के बीच में अधिक से अधिक पहुंचे इसकी तैयारी सभी कार्यकर्ताओं को करनी है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा में शामिल हों कार्यकर्ता

विकसित भारत संकल्प यात्रा के माध्यम से केंद्र सरकार की योजना हर जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचे, इसके लिए अधिक से अधिक कार्यकर्ता यात्रा में सहभागिता कर लोगों को लाभ पहुंचाने में सहयोग करें। क्रिएटिव यूथ, इनोवेटिव यूथ और क्षमतावान युवाओं से मोर्चा कार्यकर्ता और अधिक संपर्क और समन्वय स्थापित करें।

भाजपा विचारों के साथ आगे बढ़ने वाला दल

भाजपा अपने विचारों के साथ आगे बढ़ने वाला दल है। मध्य प्रदेश भाजपा संगठन अपने कार्यों से एक आदर्श संगठन के रूप में जाना जाता है। छोटे-छोटे नवाचारों से भाजपा ने एक ऐतिहासिक विजयश्री प्राप्त की है, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के विकसित भारत के संकल्प को हम सभी को मिलकर पूरा करना है। नमो ऐप विकसित भारत एंबेसडर के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा युवाओं को जोड़ें। ▪

जहाँ दूसरों से उम्मीद खत्म, वहाँ से मोदी की गारंटी शुरु...

- "मोदी की गारंटी" की गाड़ी अब देश के सभी हिस्सों में पहुंच रही है।
- "विकसित भारत संकल्प यात्रा को हरी झंडी भले ही मोदी ने दिखाई हो, लेकिन सच्चाई तो यह है कि आज इसकी कमान देशवासियों ने अपने हाथ में ले ली है"।
- "देश के सैकड़ों छोटे शहर विकसित भारत की भव्य इमारत को सशक्त बनाने वाले हैं"।
- "जहां दूसरों से उम्मीदें खत्म होती हैं, वहीं से मोदी की गारंटी शुरू होती है"।
- "सरकार शहरी परिवारों के पैसों की बचत करने के लिए प्रतिबद्ध है"।
- "पिछले 10 वर्षों में आधुनिक सार्वजनिक परिवहन के लिए जो कार्य किया गया है, वह अतुलनीय है"।

गांव से गरीब व्यक्ति तक, शहर की झुग्गी-झोपड़ी तक सरकार के सभी लाभ पहुंचाने हैं और बिना मुश्किल पहुंचाने है। और इसलिए ये गाड़ी चल पड़ी है ये मोदी की गारंटी वाली गाड़ी है ना वो आपके लिए है।

और देश में 2047 में जब भारत की आजादी के 100 साल होंगे ये देश विकसित हो के रहेगा, ये मिजाज पैदा करना है। हम सब कुछ अच्छा करेंगे और देश को अच्छा बनाएंगे। इस विचार को लेकर के चलना है। और ये वातावरण बनाने में ये यात्रा, ये गाड़ी, ये संकल्प बहुत काम आने वाला है।

विकसित भारत के संकल्प के साथ, मोदी की गारंटी वाली गाड़ी, देश के कोने-कोने में पहुंच रही है। यह यात्रा हजारों गांवों के साथ-साथ, हजारों शहरों में भी पहुंच चुकी है। इनमें से अधिकतर छोटे शहर हैं, छोटे-छोटे कस्बे हैं।

विकसित भारत संकल्प यात्रा को हरी झंडी भले ही मोदी ने दिखाई है, लेकिन सच्चाई ये है कि देशवासियों ने इस यात्रा की कमान संभाल ली है। और देश का जन-मन इस यात्रा को लेकर उत्साहित है। एक जगह जहां पर यात्रा खत्म होती है, वहां से दूसरे गांव या शहर के लोग इस यात्रा की अगुवाई करने लग जाते हैं। ''मोदी की गारंटी वाली गाड़ी'' के स्वागत सत्कार की भी एक बड़ी स्पर्धा चल रही है, होड़ मची है, लोग नए-नए तरीके से स्वागत कर रहे हैं। और नौजवान तो आजकल सेल्फी का भरपूर उपयोग करते हैं, गाड़ी के साथ अपनी सेल्फी भी करवा लेते हैं और वो अपलोड भी

करते हैं। और लोग बड़ी संख्या में एक प्रकार से विकसित भारत के एंबेसेडर बन रहे हैं। नमो ऐप को डाउनलोड करके उसमें विकसित भारत के एंबेसेडर बनने की योजना है। सब उससे जुड़ रहे हैं। गांव हो या शहर, बड़ी संख्या में लोग जो quiz कंपीटिशन चल रहा है, प्रश्न-उत्तर वाला एक बड़ा अच्छा कार्यक्रम चल रहा है, जिससे knowledge भी बढ़ता है, जानकारियां मिलती हैं। उसका भी कंपीटिशन में लोग भाग ले रहे हैं। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से लोग न सिर्फ पुरस्कार जीत रहे हैं, बल्कि नई-नई जानकारियां भी प्राप्त कर रहे हैं और लोगों को भी बता रहे हैं। पीएम किसान सम्मान निधि की बात हो, प्राकृतिक खेती, natural farming की चर्चा हो, ग्रामीण अर्थव्यवस्था के अलग-अलग जो आयाम होते हैं उसके संदर्भ में विचार विमर्श हो। इतनी बारीकियों से लोग बताते हैं कि ये सरकार की योजनाएं गांव तक, गरीब के घर तक पहुंचती हैं।

विकसित भारत के संकल्प में शहरों की बहुत बड़ी भूमिका है। आजादी के लंबे समय तक जो भी विकास हुआ, उसका दायरा देश के कुछ बड़े शहरों तक सीमित रहा। लेकिन आज हम देश के टीयर-2, टीयर-3 के शहरों के विकास पर बल दे रहे हैं। देश के सैकड़ों छोटे शहर ही विकसित भारत की भव्य इमारत को सशक्त करने वाले हैं। इसलिए अमृत मिशन हो या स्मार्ट सिटी मिशन, इनके तहत छोटे शहरों में मूल सुविधाओं को बेहतर बनाया जा रहा है। कोशिश यही है कि वॉटर सप्लाई हो, ड्रेनेज और सीवेज सिस्टम हो, ट्रैफिक सिस्टम हो, शहरों में CCTV कैमरों का नेटवर्क हो, इन सभी को लगातार अपग्रेड किया जाए। स्वच्छता हो, पब्लिक टॉयलेट्स हों, LED स्ट्रीट लाइट्स हों, शहरों में इन पर भी पहली बार इतने व्यापक स्तर पर काम हुआ है। और इसका सीधा प्रभाव Ease of Living पर पड़ा है, Ease of Travel पर हुआ है, Ease of Doing Business पर हुआ है। गरीब हो, नियो मीडिल क्लास हो, जो अभी-अभी गरीबी से बाहर निकले हैं, ऐसा की नया मध्यमवर्गीय परिवार पैदा हो रहा है। मिडिल क्लास हो या संपन्न परिवार हो, हर किसी को इन बढ़ती हुई सुविधाओं का लाभ मिल रहा है।

सरकार, परिवार के सदस्य की तरह हर चिंता कम करने का प्रयास कर रही है। जब कोरोना का इतना बड़ा संकट आया तो सरकार ने मदद करने में कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ी। **सरकार ने कोरोना के संकट के दौरान 20 करोड़ महिलाओं के बैंक खाते में हजारों करोड़ रुपए ट्रांसफर किए**। ये

हमारी सरकार है जिसने हर व्यक्ति को कोरोना की मुफ्त वैक्सीन सुनिश्चित कराई। ये हमारी ही सरकार है जिसने कोरोना काल में हर गरीब को मुफ्त राशन की योजना शुरू की। ये हमारी ही सरकार है जिसने कोराना काल में छोटे उद्योगों को बचाने के लिए लाखों करोड़ रुपए की मदद भेजी। **जहां दूसरों से उम्मीद खत्म हो जाती हैं, वहां से मोदी की गारंटी शुरु हो जाती है**।

हमारे रेहड़ी, ठेले-पटरी, फुटपाथ पर काम करने वाले, ये सभी साथी ना उम्मीद हो चुके थे। उनको लगता था चलो भई ऐसे ही गुजारा करो कुछ होने वाला नहीं है। उनको पूछने वाला कोई नहीं था। इन साथियों को पहली बार बैंकिंग सिस्टम से जोड़ने का सौभाग्य हमारी सरकार को मिला है। आज पीएम स्वनिधि योजना से इन साथियों को बैंकों से सस्ता और आसान ऋण मिल रहा है।

देश में 50 लाख से अधिक ऐसे साथियों को बैंकों से मदद मिल चुकी है। इस यात्रा के दौरान भी सवा लाख साथियों ने मौके पर ही पीएम स्वनिधि के लिए आवेदन किया है। पीएम स्वनिधि योजना के 75 प्रतिशत से अधिक लाभार्थी, दलित, पिछड़े, आदिवासी समाज के साथी हैं। इसमें भी करीब 45 प्रतिशत लाभार्थी हमारी बहनें हैं। यानि **जिनके पास बैंक में रखने के लिए कोई गारंटी नहीं थी, मोदी की गारंटी उनके काम आ रही है**।

शहर में रहने वाले लोगों की सामाजिक सुरक्षा के लिए भी हमारी सरकार प्रतिबद्ध है। 60 वर्ष की आयु के बाद भी सबको सुरक्षा कवच मिले, इसके लिए हमारी सरकार ने गंभीरता से काम किया है। अटल पेंशन योजना से अभी तक देश के 6 करोड़ साथी जुड़ चुके हैं। इससे 60 वर्ष की आयु के बाद, 5 हजार रुपए तक नियमित पेंशन सुनिश्चित हो रही है। प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना भी शहर में रहने वाले गरीबों के लिए बहुत बड़ी उम्मीद बनी है। इसमें बीमाकर्ता को साल में एक बार केवल 20 रुपये, केवल 20 रुपये के प्रीमियम का भुगतान करना होता है और बदले में उसे 2 लाख रुपए का कवर मिलता है। प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत शहरी गरीबों को साल में सिर्फ 436 रूपए देने का प्रावधान किया गया है। इससे भी उन्हें 2 लाख रुपए तक का बीमा कवर मिलता है।

हमारी सरकार इन दोनों योजनाओं के माध्यम से लोगों को अब तक जिनके परिवार में कोई संकट आ गया, ऐसे परिवारों में 17 हजार करोड़ रूपए की क्लेम राशि मिल चुकी है। संकट की घड़ी में जब स्वजन खो दिया हो और इतने रूपये आ जाए तो कैसे दिन निकल जाए इसका आप अंदाज कर सकते हो। आज जब आप अंदाज लगा सकते हो कि 200-400 करोड़ की भी योजना शुरू करता है ना, कुछ राजनीतिक दल बोलते रहते हैं, हेडलाइंस बनवाने में जुट जाते हैं, खबरें बनवा देते हैं। 17 हजार करोड़ रूपया गरीब के घर पहुंच चुका है। भारत सरकार की इन योजनाओं का लाभ लोगों को मिल रहा है। मेरा सभी साथियों से आग्रह है कि सरकार की इन पेंशन और बीमा योजनाओं से जुड़कर, अपना सुरक्षा कवच जरूर मजबूत करें। मोदी की गारंटी वाली गाड़ी, इसमें आपकी

मदद करेगी।

आज इनकम टैक्स में छूट हो या फिर सस्ते इलाज की सुविधा हो, सरकार की कोशिश शहरी परिवारों से ज्यादा से ज्यादा उनके पैसे बचाने की है, बचत ज्यादा हो उनकी। अब तक शहरों के करोड़ों गरीब, आयुष्मान भारत योजना से जुड़ चुके हैं। आयुष्मान कार्ड की वजह से गरीबों के एक लाख करोड़ रुपए खर्च होने से बचे हैं। एक लाख करोड़ रुपया या तो डॉक्टरों के पास जाते या दवाईयों में जाते, जो आज गरीब के जेब में रहे हैं, मध्यमवर्ग के जेब में रहे हैं। हमारी सरकार ने जन औषधि केंद्र खोले हैं, आपको दवाई खरीदनी है तो जन औषधि केंद्र से खरीदिए 80 परसेंट डिस्काउंट है, 100 रूपये की दवाई 20 रूपये में मिल जाती है, आपका पैसा बचेगा। इन केंद्रों ने शहरों में रहने वाले गरीब और मध्यम वर्ग के जिन-जिन लोगों ने जन औषधि केंद्र से दवाइयां खरीदी हैं अगर वो जन औषधि केंद्र ना होता तो उनका 25 हजार करोड़ रूपया ज्यादा जाता। इनके 25 हजार करोड़ रुपए बच गए हैं। अब तो सरकार जन औषधि केंद्र की संख्या को भी बढ़ाकर के 25 हजार करने जा रही है। बीते वर्षों में हमने उजाला योजना से देश में LED बल्बों की क्रांति देखी है। इससे शहरी परिवारों के बिजली का बिल भी बहुत कम हुआ है।

हमारी सरकार, गांवों से रोजगार के लिए शहर आने वाले गरीब भाई-बहनों की मुश्किलों को समझती है। उनकी एक दिक्कत थी कि उनके गांव का राशनकार्ड दूसरे राज्य के शहरों में नहीं चलता था। इसलिए ही मोदी ने वन नेशन, वन राशन कार्ड बनाया। अब एक ही राशन कार्ड पर कोई भी परिवार, गांव हो या शहर राशन ले सकता है।

हमारी सरकार का प्रयास है कि कोई भी गरीब झुग्गियों में रहने के लिए मजबूर ना हो, सबके पास पक्की छत हो, पक्का घर हो। पिछले 9 साल में केंद्र सरकार 4 करोड़ से ज्यादा घर बना चुकी है। इसमें से एक करोड़ से अधिक घर शहरी गरीबों को मिले हैं। हमारी सरकार मिडिल क्लास परिवारों के घर का सपना पूरा करने में भी हर संभव मदद कर रही है। क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी स्कीम के तहत अभी तक, लाखों मध्यम वर्गीय परिवारों को मदद दी जा चुकी है। जिनके पास अपना घर नहीं है, उनको सही किराए पर अच्छा घर मिले, इसकी चिंता भी सरकार कर रही है। सरकार ने शहरी प्रवासियों, मजदूरों और दूसरे काम करने वाले साथियों को किराए के घरों के लिए विशेष योजना बनाई है। इसके लिए अनेक शहरों में विशेष complex भी बनाए जा रहे हैं।

शहरों में गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों को बेहतर जीवन देने के लिए एक और बड़ा माध्यम पब्लिक ट्रांसपोर्ट का होता है। आधुनिक पब्लिक ट्रांसपोर्ट के लिए जो काम बीते 10 वर्षों में हुआ है, वो अतुलनीय है। आप कल्पना कर सकते हैं कि 10 वर्ष से भी कम समय में, 15 नए शहरों तक मेट्रो सेवा का विस्तार हुआ है। आज कुल मिलाकर, 27 शहरों में या तो मेट्रो चल चुकी है या फिर मेट्रो पर काम चल रहा है बीते वर्षों में देश के शहरों में इलेक्ट्रिक बसें चलाने के लिए भी केंद्र सरकार ने हजारों करोड़ रुपए खर्च किए हैं। ''पीएम- ई-बस सेवा अभियान'' इसके तहत अनेक शहरों में इलेक्ट्रिक बसों को चलाया जा रहा है। दिल्ली में भी केंद्र सरकार ने 500 नई इलेक्ट्रिक बसें शुरू करवाई हैं। अब दिल्ली में केंद्र सरकार द्वारा चलाई गई इलेक्ट्रिक बसों की संख्या 1300 को पार कर गई है।

हमारे शहर, युवा शक्ति और नारी शक्ति, दोनों को सशक्त करने के बहुत बड़े माध्यम हैं। मोदी की गारंटी वाली गाड़ी युवा शक्ति और नारी शक्ति दोनों को ही सशक्त कर रही है। इसका अधिक से अधिक लाभ आप सब उठाएं और विकसित भारत के संकल्प को आगे बढ़ाएं। ये यात्रा का और ज्यादा लोगों को लाभ मिलें, अधिक लोग जुड़े, यात्रा आने से पहले ही पूरे गांव में वातावरण बने, शहर के अलग-अलग इलाकों में वातावरण बने और जिनको अब तक सरकारों का लाभ मिला है, उनको वहां जरूर लाइए ताकि बाकियों को विश्वास पैदा हो कि जिनको आज अभी लाभ नहीं मिला है, रह गए हैं, ये मोदी की गारंटी है भविष्य में मिलेगा। इसलिए उनको जितना ज्यादा लाएंगे, जितनी जानकारी मिलेगी और हम कुछ भी कहें जिसको मिला है वो जब बोलता है ना तो दूसरे का भरोसा बढ़ जाता है। और इसलिए जिन-जिन लोगों को किसी को गैस का कनेक्शन मिला होगा, किसी को बिजली का कनेक्शन मिला होगा, किसी को जल का कनेक्शन नल मिल गया होगा, किसी को घर मिल गया होगा, किसी को आयुष्मान कार्ड मिला होगा, किसी को मुद्रा योजना मिली होगी, किसी को स्वनिधि मिली होगी, किसी को बैंक से पैसा मिला होगा, किसी को बीमा का पैसा मिला होगा। बहुत सारे लाभ हैं, जब उसको पता चलेगा हमारे गांव में उसको मिला है तो चलो मैं भी रजिस्टर करवा देता हूं। और जिसको मिला है वो ज्यादा आने चाहिए, वो आकर के बताने चाहिए कि देखो भई ये योजना है मोदी की, इसका फायदा उठाओ।

गांव से गरीब व्यक्ति तक, शहर की झुग्गी-झोपड़ी तक सरकार के सभी लाभ पहुंचाने हैं और बिना मुश्किल पहुंचाने है। और इसलिए ये गाड़ी चल पड़ी है ये मोदी की गारंटी वाली गाड़ी है ना वो आपके लिए है। और देश में 2047 में जब भारत की आजादी के 100 साल होंगे ये देश विकसित हो के रहेगा, ये मिजाज पैदा करना है। हम सब कुछ अच्छा करेंगे और देश को अच्छा बनाएंगे। इस विचार को लेकर के चलना है। और ये वातावरण बनाने में ये यात्रा, ये गाड़ी, ये संकल्प बहुत काम आने वाला है। ▪

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का साक्षात्कार

हर घर अयोध्या और हर घर में राम

- जनता-जनार्दन के दिलों को जीतना हमेशा से प्राथमिकता
- सरकार व जनता के बीच बना विश्वास मोदी की गारंटी का आधार
- कल्याणकारी योजनाऐं मजबूरी नहीं, देश को सशक्त करने का माध्यम
- नए बजट के साथ नई कल्याणकारी योजनाऐं बनेंगी

हिंदी पट्टी के तीन राज्यों के परिणामों के बाद राजनीतिक विरोधी भी अब अटकलें लगा रहे हैं कि मोदी सरकार आगामी चुनावों में 300 सीटों के पार जाएगी या उससे नीचे इसे कोई रोक सकता है?

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी फिर से हर वर्ग के लिए विकास के नए अवसर देने, नए बजट में नई कल्याणकारी योजनाएं लाने का इरादा जताते हुए और मोदी की गारंटी का अर्थ भी समझाते हैं।

पीएम मोदी ने इसी के साथ 22 जनवरी 2024 को भव्य स्वरूप में अयोध्या में श्रीराम मंदिर के उद्घाटन को हर घर अयोध्या और हर घर राम का दिन बताया। पीएम से बातचीत के मुख्य अंश.....

चुनावी राज्यों में जीत की आपको बधाई। आपने इस हैट्रिक से लोकसभा चुनाव में हैट्रिक की बात की। लेकिन आप भी कहते रहे हैं कि विधानसभा के चुनाव लोकसभा के लिए सेमीफाइनल नहीं माने जाने चाहिए?

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपको इस जनादेश को दो पैमानों पर देखना चाहिए। पहली बात, ये लोकसभा चुनाव से कुछ महीने पहले ही आया है और दूसरी बात यह कि जनादेश यूपीए का नया रूप आइएनडीआइए बनने के बाद आया है। एक प्रकार से आइएनडीआइए के लिए ये पहला टेस्ट था और इस टेस्ट में जनता ने विपक्षी गठबंधन को बुरी तरह फेल कर दिया है। जनता ने अस्थिरता और स्वार्थ की राजनीति को पूरी तरह से नकार दिया है। इन चुनाव परिणामों से देश के मूड की झलक भी मिल चुकी है। जनता ने राष्ट्र हित में स्थिर, स्थायी और सेवाभाव से समर्पित सरकार के लिए जनादेश दिया है।

इसके अलावा इन चुनावों ने कुछ लोगों के फैलाए गए एक और झूठ को भी खारिज कर दिया है। एक राजनीतिक वर्ग था जो कि ये कहता था कि राष्ट्रीय स्तर पर तो भाजपा के सामने कोई चुनौती नहीं है, लेकिन राज्यों में पार्टी को उतना समर्थन नहीं मिल रहा। जो परिणाम आए, उससे वह मिथक भी टूट गया है। हमने तीन राज्यों में तो सरकार बनाई ही है, तेलंगाना में भी भाजपा के वोट प्रतिशत में रिकार्ड वृद्धि हुई है। ये दिखाता है 2024 के चुनाव में भाजपा एक बार फिर ऐतिहासिक जीत दर्ज करने जा रही है।

इस बार तीनों राज्यों में पहली बार खुलकर भाजपा ने सिर्फ आपके नाम पर वोट मांगे और आपने लोगों को मोदी की गारंटी दी और

नतीजे भी अभूतपूर्व आए। क्या मान लेना चाहिए कि यह फार्मूला आगे भी चलता रहेगा?

इस गारंटी शब्द को सिर्फ तीन अक्षरों तक सीमित मत कीजिए। सामान्य नागरिक के मन में गारंटी बोलते ही चार प्रमुख मानदंड उभरकर सामने आते हैं और इन चार पैमानों पर जो खरा उतरता है वो गारंटी का आधार बनता है। इसमें **चार मापदंड हैं- नीति, नीयत, नेतृत्व और काम करने का ट्रैक रिकार्ड। ये वो चार कसौटियां हैं जिन पर जनता आपको परखती है।**

इन चारों में से कुछ भी कम होगा तो वो गारंटी नहीं, बल्कि खोखली घोषणा हो जाएगी। वह शब्दों का सिर्फ मायाजाल बनकर रह जाएगी। इसलिए जब मैं मोदी की गारंटी कहता हूं तो जनता बीते वर्षों के पूरे इतिहास को देखती है। जनता हमारी नीतियों की समर्थक है, हमारी नीयत की सहभागी है, हमारे नेतृत्व की समर्थक है और हमारे ट्रैक रिकार्ड को लगातार देख रही है।

हमने पिछले नौ साल में गरीबों को चार करोड़ घर बनाकर दिए हैं। इसलिए आज जब मैं कहता हूं कि दो करोड़ और घर बनाकर गरीबों को दूंगा और ये मोदी की गारंटी है तो लोग इस पर विश्वास करते हैं। कोरोना के संकट में हमने गरीबों को मुफ्त अनाज देने की योजना शुरू की थी। तब लोगों को राशन की दुकान पर बिना परेशानी मुफ्त राशन मिला। अब जब मैंने कहा है कि मुफ्त राशन की इस योजना को अगले पांच साल के लिए बढ़ा रहा हूं और ये मोदी की गारंटी है तो लोगों के मन में कोई संशय नहीं है।

आज लोग प्रत्यक्ष देखते हैं कि रेलवे का कायाकल्प हो रहा है। लोग इन्फ्रास्ट्रक्चर में बदलाव अपने सामने होते हुए देख रहे हैं। इससे देश को विश्वास होता है कि हां भई, अब मोदी कह रहा है तो रेलवे आगे बढ़ेगा ही। नीति और नीयत की कसौटी से गुजरने के साथ ही आपको अपने काम से ट्रैक रिकार्ड बनाना होता है। वरना हमने तो वो समय भी देखा है जब गरीबी हटाने की बातें की गईं, लेकिन दशकों बाद भी स्थितियां बदली नहीं। जब मैं नेतृत्व की बात करता हूं तो इसका मतलब सिर्फ मोदी का नेतृत्व नहीं है।

बल्कि हर स्तर पर चाहे पंचायतें हों, स्थानीय निकाय हों, राज्य हों या फिर जहां भी भाजपा का नेतृत्व है, हर कोई कर्मठता के साथ काम करता है। जब ये प्रतिबद्धता लोगों को दिखती है, तब जाकर हर गारंटी पर लोगों का भरोसा होता है। आजकल आप लोग देख रहे होंगे, विकसित भारत संकल्प यात्रा चल रही है।

आपको अपने आप पता चलेगा कि मोदी की गारंटी का मतलब क्या है? किस प्रकार हर लाभार्थी को सरकारी योजनाओं से जोड़ने के लिए सरकार जनता तक पहुंच रही है, ये प्रतिबद्धता आपको दिखाई देगी। पहले जनता को अपना हक पाने के लिए सरकारी दफ्तर के चक्कर काटने पड़ते थे, घूस देनी पड़ती थी। अब सरकार जनता के पास जा रही है, जिसका हक है, वह उस तक पहुंच रहा है। सरकार और जनता के बीच जो ये नया विश्वास बना है, यही मोदी की गारंटी का आधार है।

अभी जो भाजपा की जीत हुई, वह कांग्रेस के खिलाफ थी। अब एकजुट विपक्ष सामने होगा। थोड़ी चिंता तो हो रही होगी?

पीएम मोदी हंसते हुए बोले कि ये धारणा भी विपक्षी गठबंधन की बनाई हुई है कि ये चुनाव सिर्फ कांग्रेस के विरुद्ध थे, जबकि हकीकत कुछ और है। ये नए-नए प्रयोग करते रहते हैं। इस चुनाव में भी इन्होंने ऐसा करने की कोशिश की। इन्होंने हर सीट पर ऐसे उम्मीदवार उतारे और ऐसे दलों को सपोर्ट किया, जिससे भाजपा को मिलने वाले वोटों का विभाजन हो सके। भाजपा के सामने ये आइएनडीआइए गठबंधन तो था ही एक नई प्रकार की रणनीति और एक नया प्रयोग भी था। सामने कुछ था लेकिन पर्दे के पीछे आइएनडीआइए गठबंधन था। इन्होंने योजना बनाकर भाजपा उम्मीदवारों के वोट काटने का मायाजाल रचा था, लेकिन जनता ने इनकी सारी साजिशों को नाकाम कर दिया। अब ऐसा संभव नहीं है कि विपक्षी गठबंधन के लोग जो भी झूठ कहेंगे, जनता उसे मान लेगी।

उत्तर-दक्षिण भारत के चुनाव को लेकर एक बहस छिड़ गई है। आप कैसे देखते हैं?

सच्चाई यह है कि देश के जनमानस के बीच इस प्रकार की कोई बहस है ही नहीं। भारत के लोग किसी भी प्रकार के भेदभाव में यकीन ही नहीं रखते हैं। ये बहस विशुद्ध रूप से घमंडिया गठबंधन की ओर से फुलाया हुआ झूठ का एक और गुब्बारा है। देश को बांटने की ऐसी राजनीति भी निराशा से जन्म लेती है। जिनके पास विचारधारा नहीं होती और जनहित के लिए कोई सार्थक विचार नहीं होते, ऐसी सूरत में विभाजन की सोच घमंडिया गठबंधन पर हावी होना स्वाभाविक है। ये लोग सत्ता में आने के लिए कुछ भी कर गुजरने का प्रयास कर रहे हैं। इनके लिए देश का भविष्य कोई मायने नहीं रखता, बल्कि ये लोग अपने बच्चों के भविष्य के लिए सरकार पर कब्जा चाहते हैं। देश ये देख रहा है, देश के लोग देख रहे हैं। मुझे देश के लोगों की समझ पर पूरा भरोसा है।

आजकल आप जहां भी जा रहे है वहां अबकी बार 400 पार के नारे लगते हैं। क्या सचमुच में पार्टी ने ऐसा कोई लक्ष्य रखा है?

जनता द्वारा दिए जा रहे किसी भी आंकड़े का विशेष आधार होता है, उस आंकड़े के पीछे एक भाव होता है और उसका अपना एक महत्व होता है, हमें ये समझना होगा। आज देश का जन-जन ये समझ रहा है कि 2014 के पहले की तीन दशकों की राजनीतिक अस्थिरता ने देश का कितना बड़ा नुकसान किया है आज पूरी दुनिया की नजर भारत पर है। पूरी दुनिया भारत से नई उम्मीदें लगाए बैठी है। ऐसे माहौल में अब देश का कोई नागरिक भारत को अस्थिरता में नहीं झोंकना चाहता है।

हमने देखा है, गांव के लोग भी ये अक्सर कहते हैं कि कोरोना की भयंकर महामारी के दौरान अगर भारत में अस्थिर सरकार होती तो देश का क्या होता? वैश्विक महामारी और युद्ध की वजह से आज विश्व की आर्थिक व्यवस्था बुरी तरह चरमरा गई है। ऐसे में अगर भारत में भी अस्थिरता होती तो क्या होता? इसलिए सामान्य व्यक्ति आज पहले से अधिक मजबूत सरकार, अधिक समर्थ सरकार के पक्ष में है। लोकतंत्र के लिए भी मजबूती बहुत आवश्यक होती है। वैसे मेरे लिए सीटों की गिनती से ज्यादा जनता-जनार्दन के दिलों को जीतना हमेशा से प्राथमिकता रहा है। मैं दिल जीतने के लिए प्रयास करता हूं, मेहनत करता हूं तो जनता खुद ही मेरी झोली भर देती है। जहां तक लक्ष्य की बात है तो आज मैं

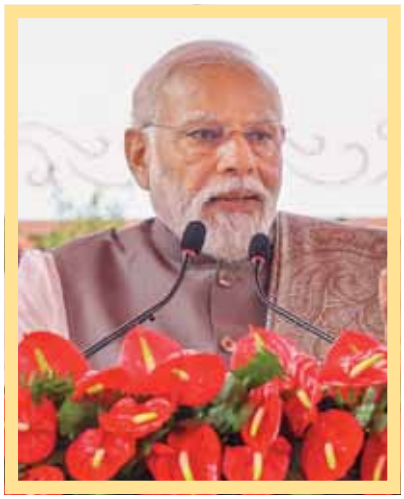

ही नहीं, बल्कि पूरा देश 2047 तक भारत को विकसित बनाने के लक्ष्य पर काम कर रहा है। आज जो 18 से 28 साल के युवक-युवती हैं, ये उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कालखंड है। वे अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण समय में समृद्ध भारत के वाहक बने। उनके प्रयत्नों के आगे कोई भी रुकावट नहीं आए और रास्ते की हर बाधा हटे, यही प्रयास है।

▶ राम मंदिर का निर्माण पूरा होने ही वाला है। आगामी 22 जनवरी को आप वहां मौजूद होंगे। आपके लिए यह कितना बड़ा दिन होगा?

श्री राम के दर्शन से जीवन सफल हो जाता है। ये मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस अत्यंत पवित्र कार्य में जाने का न्योता मिला है, वहां जाने का अवसर मिला है। हजारों साल से प्रभु राम ने हम सबके जीवन में कोई न कोई सकारात्मकता भरी है। पल भर के लिए सोच लीजिए कि मैं इस पवित्र अवसर पर एक प्रधान सेवक के बजाय एक सामान्य नागरिक हूं, जो किसी गांव में बैठा है, तो भी मेरे मन में उतना ही आनंद और संतोष होगा जितना कि एक प्रधान सेवक के रूप में मुझे वहां जाने का अवसर मिलने पर मिला है।

खुशी सिर्फ मोदी की नहीं है। ये हिंदुस्तान के 140 करोड़ हृदयों की खुशी, मन के संतोष का अवसर है। मेरे लिए 22 जनवरी का ये अवसर ''हर घर अयोध्या, हर घर राम'' आने का है।

▶ एक चर्चा खूब होती है। आपके आलोचक भी कहते हैं कि मोदी में कुछ है, लेकिन इस 'कुछ' के लिए कोई शब्द नहीं ढूंढ पाता है। क्या आप इसकी पहचान कर पाए हैं?

आप जिस 'कुछ' की बात कर रहे हैं, ये भाव उठना तो बहुत स्वाभाविक है। हर किसी के मन में ये विचार आना स्वाभाविक है। एक व्यक्ति जो गरीब परिवार में जन्मा, सरकारी स्कूल में किसी तरह पढ़ा, जो पिछले पांच दशक से सिर्फ और सिर्फ देश की जनता के लिए समर्पित है, जो पिछले 23 साल से पहले सीएम और फिर पीएम के तौर पर सेवाभाव से जुटा है, जनता ये सब कुछ देखती है। ये 'कुछ' क्या है इसका मेरे पास भी कोई ठोस जवाब नहीं है, लेकिन ये मानता हूं कि मैं आज जो कुछ हूं, वो दो आशीर्वाद के बिना संभव नहीं है। पहला तो जनता जनार्दन का आशीर्वाद है। मैं स्वयं अनुभव करता हूं, प्रकट रूप से अनुभव करता हूं कि जनता-जनार्दन ईश्वर का रूप है और मैं उस जनता का पुजारी हूं, मैं 140 करोड़ देशवासियों का पुजारी हूं। मैं जहां भी जाता हूं, लोगों से मिलता हूं तो वहां लोग मोदी को सिर्फ प्रधानमंत्री के रूप में नहीं देखते, बल्कि वे मोदी को अपना बेटा, अपना भाई रूप में देखते हैं। वो मुझे अपने परिवार के सदस्य के रूप में देखते हैं। हर उम्र, हर समाज, हर वर्ग के लोग मोदी में खुद को ढूंढ़ते हैं, किसी अपने को ढूंढ़ते हैं, ये मेरे लिए बहुत बड़ा सौभाग्य है।

जनता-जनार्दन के अलावा जो दूसरा आशीर्वाद है, वो एक दैवीय शक्तिका है। ये दैवीय शक्ति मुझे चलायमान रखे हुए है, निरंतर मुझे देश सेवा के लिए प्रेरित करती है। मेरे पास अपने स्वयं के जीवन के अलावा इस दैवीय शक्ति का कोई प्रमाण नहीं है। शक्ति का साक्षात् आशीर्वाद मेरा दूसरा सबसे बड़ा सौभाग्य है। इन दोनों आशीर्वाद के बिना ये संभव नहीं है। फिर भी कहता हूं कि मैं कितनी भी कोशिश करूं तो भी इस 'कुछ' का शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता।

▶ आपने चार जाति - गरीब, महिला, युवा और किसान की बात की है। क्या इससे जातिवादी राजनीति खत्म होगी?

मैं जब किसान, महिला, युवा और गरीब, इन चार जातियों की बात करता हूं तो इसके पीछे ठोस कारण है। आप किसान को देखिए। वो किसी भी कुल-वंश में और परिवार में पैदा हुआ हो, लेकिन उसकी समस्या तो एक जैसी ही है। उनकी समस्याओं का समाधान भी एक जैसा है। इसी प्रकार गरीब परिवार चाहे किसी भी समाज का हो, उसकी जरूरतें और अपेक्षाएं भी एक ही जैसी हैं गरीबी दूर करने का रास्ता जब सरकार ढूंढ़ती है तो वो सभी गरीब परिवारों पर ही लागू होता है। ऐसे ही जब हम नारी शक्ति और युवा शक्ति को देखते हैं तो उनकी आशाएं, अपेक्षाएं और आकांक्षाएं भी एक जैसी ही हैं।

गांव-गरीब, मध्यम वर्गीय परिवारों की हमारी बहनों बेटियों की स्थिति हर समाज में एक जैसी ही है। घर के फैसलों और शिक्षा-रोजगार में उचित भागीदारी से लेकर सुविधा, सुरक्षा और सम्मान से जुड़ी समस्याओं का समाधान सबके लिए एक जैसा ही है। जब समस्या समान हैं, समाधान समान हैं तो देखने का नजरिया भी उस आधार पर ही होना चाहिए। इसलिए जब इन चार जातियों का सशक्तीकरण होगा तो हर समाज और हर वर्ग का सामर्थ्य बढ़ेगा।

▶ वैश्विक अर्थव्यवस्था जिन हालात से गुजर रही है, उनमें भारत में आप कल्याणकारी योजनाओं के विस्तार के लिए कितनी संभावनाएं देखते हैं?

दुनिया की बड़ी-बड़ी और समृद्ध से समृद्ध अर्थव्यवस्थाओं की स्थिति ठीक नहीं है। पहले 100 साल की सबसे बड़ी महामारी और फिर विश्व के दो हिस्सों में युद्ध की स्थिति। ये वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए बहुत बड़ा झटका है। लेकिन देखिए, इस घोर अनिश्चितता के बावजूद भारत सबसे अलग दिखता है। अभी तक दो क्वार्टर के आंकड़े हमारे सामने आए हैं। आप देखेंगे कि पहले क्वार्टर में 7.8 फीसद और दूसरे क्वार्टर में 7.6 फीसद की ग्रोथ हुई है। अब ये ट्रेंड बनता जा रहा है कि हर बार भारत हमारे एक्सपर्ट्स के आकलन से भी बेहतर कर रहा है। 2013 में स्थिति इसके उल्टी थी।

भारत को लेकर जो आकलन होते थे, उससे भी कम परिणाम आते थे। तब भारत पांच प्रतिशत की ग्रोथ रेट के लिए तरस गया था। आज भारत में अर्थव्यवस्था को गति देने वाला हर सेक्टर बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। जीएसटी कलेक्शन हो, डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन हो, कोर सेक्टर आउटपुट हो, हर जगह नया उत्साह नजर आ रहा है। गाड़ियों की खरीद हो, घरों की खरीद हो, मार्केट में निवेश हो, ये निरंतर बढ़ रहा है। देश और विदेश के निवेशकों को आज भारत में नया भरोसा, नया अवसर दिख रहा है।

जब देश का आर्थिक सामर्थ्य बढ़ रहा है तो इसका प्रभाव सिर्फ आंकड़ों तक सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि देश के हर नागरिक का जीवन इससे बदलना चाहिए। देश का कोई तबका अगर कमजोर हो, अविकसित हो तो देश विकसित नहीं हो सकता। इसलिए कल्याणकारी योजनाएं ऐसी होनी चाहिए, जिससे गरीब का सशक्तीकरण हो ।

जैसे जब हम गरीबों को घर देते हैं तो सिर्फ उसको सुविधा मात्र नहीं मिलती, बल्कि उस पूरे परिवार की और उसकी भावी पीढ़ियों की आकांक्षाएं जागती हैं। जब गरीब का बैंक में

खाता खुलता है तो उसे बचत करने का मन करता है।

उसे लगता है कि मैं बैंक में जा सकता हूं, उसमें एक आत्मविश्वास आता है। आयुष्मान भारत के तहत मिल रहे मुफ्त इलाज की पूरी दुनिया में बहुत चर्चा होती है। इसके प्रभाव का आकलन करके देखिए। जो आबादी कभी अस्पताल तक नहीं जा पाती थी, उसको आज अच्छा इलाज मिल पाया है।

एक समय था, जब इलाज के लिए अनेक परिवारों को कर्ज लेना पड़ता था और उनकी जमीन-जायदाद-गाड़ी तक बिक जाती थी। इससे कई-कई पीढ़ियां गरीबी रेखा से नीचे चली जाती थीं। ये कितना बड़ा संकट इस एक योजना ने दूर किया है। यहां तक कि पशुओं के मुफ्त टीकाकरण की चर्चा उतनी नहीं होती, लेकिन ये बहुत बड़ा अभियान चल रहा है। हजारों करोड़ रुपये सरकार इस पर इसलिए खर्च कर रही है क्योंकि पशुधन आजीविका का एक बहुत बड़ा माध्यम है। वेलफेयर को मैं एक मजबूरी के रूप में नहीं, बल्कि देश को सशक्त करने के माध्यम के रूप में देखता हूं। स्वभाविक है कि जब देश का आर्थिक सामर्थ्य बढ़ रहा है तो उसका लाभ देश की कल्याणकारी योजनाओं को भी होगा। सरकार नए बजट के साथ नई कल्याणकारी योजनाएं भी बनाएगी।

आपने हाल में कहा कि विपक्ष को सकारात्मक होना चाहिए। वह रोजगार का मुद्दा उठाते हैं तो आप आंकड़े देते हैं कि बढ़ रहा है। वह महंगाई का मुद्दा उठाते हैं तो आप आंकड़ा पेश कर देते हैं। फिर वह अपनी राजनीति कैसे करें, आप कोई मुद्दा सुझाएंगे?

ये लोकतंत्र है। हर पार्टी के अपने-अपने विचार हैं। लेकिन भाजपा को गाली देते-देते आप भारत को गाली देने की तरफ चले जाएं तो जनता इसको पसंद नहीं करती। मैं उन्हें सलाह दूं, ये उचित भी नहीं है। वे आत्मचिंतन करेंगे ही कि देश की जनता उनकी बातों को क्यों स्वीकार नहीं करती है, ऐसा वे जरूर सोचेंगे।

अनुच्छेद 370 पर सुप्रीम कोर्ट में जिस तरह का निर्णय आया है, उसे कैसे देखते हैं?

सर्वोच्च न्यायालय ने इस बात पर अपनी मुहर लगा दी है कि एक देश में किसी तरह से दो विधान नहीं चल सकते हैं। अनुच्छेद 370 का हटना किसी राजनीति से ज्यादा जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के लोगों के लिए बहुत जरूरी था। अनुच्छेद 370 का हटना लोगों के विकास, उनके जीवन की सुगमता के लिए जरूरी था।

इसे कुछ परिवारवादियों ने अपने राजनीतिक स्वार्थ के कारण मुट्ठी में बंद कर लिया था। जम्मू-कश्मीर का आमजन न तो किसी की स्वार्थ भरी राजनीति का हिस्सा है, न ही बनना चाहता है। वो अतीत की परेशानियों से निकलकर देश के हर नागरिक की तरह बिना भेदभाव के अपने बच्चों का भविष्य और अपना वर्तमान सुरक्षित करना चाहता है।

अनुच्छेद 370 के बाद आज जम्मू- कश्मीर और लद्दाख दोनों की सूरत बदल गई है। अब वहां पर सिनेमा हाल चल रहे हैं। वहां पर टेररिस्ट नहीं, अब टूरिस्ट्स का मेला है। अब वहां पर पत्थरबाजी नहीं होती, बल्कि फिल्मों की शूटिंग हो रही है। आम कश्मीरी परिवार इसे पसंद कर रहा है। आज भी राजनीतिक स्वार्थ में जो लोग अनुच्छेद 370 को लेकर भ्रम फैला रहे हैं, उन्हें मैं दो टूक कहूंगा- **अब ब्रह्मांड की कोई शक्ति अनुच्छेद 370 की वापसी नहीं करा सकती।**

भाजपा ने तीनों राज्यों में अपेक्षाकृत नए और अनजान चेहरे को मुख्यमंत्री बनाया है। इसका क्या संदेश है?

हमारे देश का एक दुर्भाग्य रहा है कि जो लोग अपनी वाणी से अपनी बुद्धि और अपने व्यक्तित्व से सामाजिक जीवन में प्रभाव पैदा करते हैं, उनमें से एक बहुत बड़ा वर्ग एक घिसी-पिटी, बंद मानसिकता में जकड़ा हुआ है। ये सिर्फ राजनीतिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है। जीवन के सभी क्षेत्रों में ये प्रवृत्ति हमें परेशान करती है। जैसे किसी भी सेक्टर में कोई नाम अगर बड़ा हो गया, किसी ने अपनी ब्रांडिंग कर दी तो बाकी लोगों पर ध्यान नहीं जाता चाहे वो कितने ही प्रतिभाशाली क्यों न हों, कितना भी अच्छा काम क्यों न करते हों, वैसा ही राजनीतिक क्षेत्र में भी होता है। दुर्भाग्य से अनेक दशकों से कुछ ही परिवारों पर मीडिया का फोकस सबसे ज्यादा रहा।

इस वजह से नए लोगों की प्रतिभा और उपयोगिता की चर्चा ही नहीं हो पाई। इसके कारण आपको कई बार कुछ लोग नए लगते हैं, लेकिन सच्चाई ये है कि वे नए नहीं होते। उनकी अपनी एक लंबी तपस्या होती है, अनुभव होता है। भाजपा तो एक काडर आधारित राजनीतिक दल है। संगठन के हर स्तर पर काम करते-करते कार्यकर्ता कितने ही आगे पहुंच जाएं, लेकिन उनके भीतर का कार्यकर्ता हमेशा जगा रहता है। ▪

संकल्प-पत्र के हर वादे को पूरा करेगी भाजपा

भाजपा ने विधानसभा चुनाव में जो संकल्प-पत्र जारी किया है, उसके हर वादे को पूरा किया जाएगा। पांच वर्ष के लिए सरकार बनी है, पांच वर्ष के अंदर सभी वादे पूरे कर लिए जाएंगे, यह बात भाजपा के कार्यकर्ता जनता के बीच जाकर बताएं। सरकार जनवरी से रजिस्ट्री के बाद अपने आप नामांतरण की व्यवस्था लागू कर रही है, इससे जनता को नामांतरण के लिए परेशान नहीं होना पड़ेगा और शासन व्यवस्था में और सुचिता आएगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को और प्रभावी तरीके से लागू करके हर जिले में पीएम एक्सीलेंस कॉलेज खोलने के साथ छात्रों के दस्तावेजों के लिए डिजी लॉकर की व्यवस्था की है। 22 जनवरी को अयोध्या में भगवान रामलला विराजमान होंगे, इसके लिए राज्य सरकार 21 जनवरी से ही अयोध्या जाने वाले प्रदेशवासियों पर राज्य की सीमाओं पर पुष्पवर्षा कर अभिनंदन करेगी।

आजादी के अमृत काल में सशक्त भारत के सशक्त कानून

विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार पिछले साढ़े 9 वर्षों में, हमारी संस्थाओं और प्रणालीगत कानूनों को पुनर्जीवित करने के मिशन पर कार्य रही है, जो 19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन और उनके प्रतिनिधियों द्वारा हमारे प्राचीन सभ्यतागत सोच विचार को ब्रिटिश शासन के अधीन एवं राज्य चलाने के उद्देश्य से बनाये गए थे।

निश्चित रूप से यह नए कानून हमारी कानूनी आत्मनिर्भरता के युग की शुरुआत है एवं इन कानूनों के पारित होने का सुखद अनुभव वास्तव में हमें दासता से मुक्ति का बोध कराता है।

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने संसद के दोनों सदनों में आपराधिक न्यायिक प्रणाली में सुधार के तीन विधेयक प्रस्तुत किये एवं दोनों सदनों में यह विधेयक ध्वनिमत से पारित होने के पश्चात एक नए युग की शुरुआत हो गयी है।

- भारत में अब भारतीय न्याय संहिता विधेयक 2023 जो आईपीसी, 1860 को प्रतिस्थापित करेगा।
- भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता विधेयक 2023 जो सीआरपीसी, 1898 को प्रतिस्थापित करेगा।
- भारतीय साक्ष्य विधेयक, 2023 जो साक्ष्य अधिनियम, 1872 को प्रतिस्थापित करेगा।

इन विधेयकों की शुरूआत ऐसे समय में हुई है जब विश्व तेजी से तकनीकी प्रगति, सामाजिक परिवर्तन और विकसित हो रहे वैश्विक मानकों को देख रहा है। ब्रिटिश काल के दौरान बनाए गए मौजूदा कानूनों कि अक्सर पुराने होने और समकालीन जरूरतों के अनुरूप नहीं होने के कारण आलोचना की जाती रही है। नए कानून 21वीं सदी के साथ कानूनी प्रणाली को संरेखित करने की मोदी सरकार कि मंशा को दर्शाते हैं, जिसमें नागरिक-केंद्रित कानूनी संरचनाओं, लिंग तटस्थता, डिजिटल परिवर्तन और सजा के बजाय न्याय पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर दिया गया है। इन परिवर्तनकारी कानूनी सुधारों का उद्देश्य भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली को नया आकार देना, नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा और न्याय के कुशल प्रशासन को सुनिश्चित करना है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व एवं हमारे केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के दृढ़ संकल्प शक्ति का परिणाम था कि सभी हितधारकों के साथ व्यापक चर्चा के बाद इन कानूनों को लाया गया है। स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने लाल किले की प्राचीर से देश के नाम अपने सम्बोधन में कहा था कि ''**...ये समय गुलामी की मानसिकता से मुक्त होकर, अपनी विरासत पर गर्व करने का है**'' और आजादी के अमृतकाल में भारत ने संकल्प लिया है कि उन सभी गुलामी के प्रतीकों से मुक्ति पाना है। वास्तव में भारत की प्राचीन सभ्यता में अपराधियों को दंड देने के बजाय पीड़ित को न्याय देने का प्रचलन था किन्तु औपनिवेशिक काल में अंग्रेजों ने अपनी सत्ता स्थायी रखने के उद्देश्य से भय प्रस्थापित करने हेतु दंड को प्राधान्य दिया था।

इन कानूनों के प्रमुख प्रावधानों में राजद्रोह को निरस्त कर देशद्रोह को स्थापित करना, मॉब लिंचिंग के खिलाफ एक नया प्रावधान, नाबालिगों के बलात्कार के लिए मृत्युदंड, आतंकवाद की परिभाषा और छोटे अपराधों के लिए पहली बार सामुदायिक सेवा को दंड के रूप में सम्मिलित किया है। इसमें महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध, हत्या और राज्य के खिलाफ अपराधों को प्राथमिकता दी गई है। अलगाववादी गतिविधियों या भारत की संप्रभुता और एकता को खतरे में डालने वाले कृत्यों पर नए अपराध जोड़े गए हैं। मुख्यतः यह विधेयक मानव केंद्रित न्याय प्रणाली सुनिश्चित करने का कार्य करेंगे और अब लोगों को ''तारीख पर तारीख'' से मुक्ति मिलेगी। यह नए कानून भारतीय आत्मा से ओत-प्रोत हैं और इनका उद्देश्य संवैधानिक अधिकारों की रक्षा करना और न्याय प्रदान करना है। भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य विधेयकों की शुरूआत भारत की कानूनी प्रणाली के लिए अत्यधिक महत्व रखती है जिससे निम्नलिखित संकल्प पूर्ति का लक्ष्य है -

आधुनिकीकरण

यह कानून औपनिवेशिक विरासत से प्रस्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं, ऐसे प्रावधान प्रस्तुत

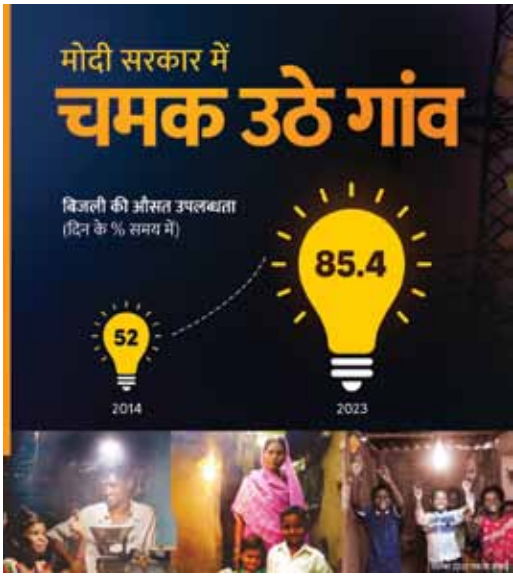

करते हैं जो समकालीन सामाजिक मूल्यों और तकनीकी प्रगति को दर्शाते हैं। डिजिटल अपराधों और साक्ष्यों को मान्यता देकर, नए कानून 21 वीं सदी की वास्तविकताओं को दर्शाते हैं, जिससे भारत की कानूनी प्रणाली का आधुनिकीकरण होता है।

दक्षता

कानूनी प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और डिजिटल साक्ष्य को मान्यता देकर, इन कानूनों का उद्देश्य न्यायिक प्रक्रिया की दक्षता को बढ़ाना, देरी को कम करना और त्वरित न्याय को सुनिश्चित करना है।

नागरिक-केंद्रित दृष्टिकोण

नागरिकों के अधिकारों की रक्षा और जीवन में सुगमता सुनिश्चित करने पर जोर देने के साथ ही इनका लक्ष्य दंड से न्याय पर लक्ष्य केंद्रित करना है।

वैश्विक मानकों के अनुरूप

यह आपराधिक न्यायिक प्रणाली के सुधार भारत की कानूनी प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि यह कानून अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम कानूनी प्रथाओं के अनुरूप हैं। गौरतलब है आपराधिक न्यायिक प्रणाली में सुधार की यह प्रक्रिया वर्ष 2019 में केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के नेतृत्व में गृह मंत्रालय द्वारा शुरू की गई जिसमें विभिन्न हितधारकों से इस संदर्भ में सुझाव मांगे गए। गृह मंत्री जी ने सितम्बर 2019 में सभी राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों, उपराज्यपालों/ प्रशासकों को पत्र लिखा था। जनवरी 2020 में भारत के मुख्य न्यायाधीश, उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों, बार काउंसिलों और विधि विश्वविद्यालयों और दिसम्बर 2021 में संसद सदस्यों से भी सुझाव मांगे गए। बीपीआरडी ने सभी आईपीएस अधिकारियों से सुझाव मांगे। मार्च 2020 को नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, दिल्ली के कुलपति की अध्यक्षता में एक समिति भी गठित की गई जिससे कुल 3200 सुझाव प्राप्त हुए थे। साथ ही 18 राज्यों, 06 संघ राज्य क्षेत्रों, भारत के सर्वोच्च न्यायालय, 16 उच्च न्यायालयों, 27 न्यायिक अकादमियों-विधि विश्वविद्यालयों, पुलिस बलों ने भी अपने सुझाव दिए है। गृह मंत्री अमित शाह जी ने 158 व्यक्तिगत बैठकें की, तत्पश्चात इन सुझावों पर गृह मंत्रालय में गहन विचार-विमर्श किया गया और इसी के परिणाम स्वरूप यह तीन कानून बने हैं। हम यह कह सकते हैं कि सरकार ने व्यापक चर्चा उपरांत जनआकांक्षाओं का सम्मान कर इन कानूनों को लाया गया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार पिछले साढ़े 9 वर्षों में, हमारी संस्थाओं और प्रणालीगत कानूनों को पुनर्जीवित करने के मिशन पर कार्य रही है, जो 19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन और उनके प्रतिनिधियों द्वारा हमारे प्राचीन सभ्यतागत सोच विचार को ब्रिटिश शासन के अधीन एवं राज्य चलाने के उद्देश्य से बनाये गए थे। निश्चित रूप से यह नए कानून हमारी कानूनी आत्मनिर्भरता के युग की शुरुआत है एवं इन कानूनों के पारित होने का सुखद अनुभव वास्तव में हमें दासता से मुक्ति का बोध कराता है। ▪

(लेखक भाजपा मध्यप्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष हैं।)

'एमपी के मन में मोदी', 'मोदी के मन में एमपी' को चरितार्थ करेगी नई प्रदेश सरकार- विष्णुदत्त शर्मा

भारतीय जनता पार्टी की डबल इंजन वाली सरकार के कार्यकाल में प्रदेश ने विकास के जो पायदान चढ़े हैं, गरीब कल्याण और खुशहाली के लिए जो काम किए हैं, भाजपा की नई मध्यप्रदेश सरकार विकास के उसी सिलसिले को आगे बढ़ाएगी। प्रदेश के कायाकल्प की जो संकल्पना प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने संजोई है, उसे धरातल पर उतारते हुए नई सरकार **'एमपी के मन में मोदी' और 'मोदी के मन में एमपी'** को चरितार्थ करेगी।

समाज के अंतिम व्यक्ति के कल्याण, विभिन्न वर्गों के जीवन स्तर को उठाने तथा विकास के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार द्वारा लागू की गई अनेक योजनाओं का लाभ बीते समय में प्रदेशवासियों को मिला है और उनका प्रभाव भी दिखाई दे रहा है। भारतीय जनता पार्टी की डबल इंजन सरकार ने इन योजनाओं का लाभ घर-घर तक पहुंचाने के भरसक प्रयास किए हैं। इन्हीं योजनाओं की बदौलत प्रदेश में 1.36 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। अधोसंरचना के विकास, ऊर्जा उत्पादन, कृषि उत्पादन, उद्योग एवं व्यापार के क्षेत्र में प्रदेश लगातार आगे बढ़ रहा है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था लगातार मजबूती की ओर बढ़ रही है। मध्य प्रदेश की नई सरकार मध्यप्रदेश में **'मोदी की गारंटी'** को लागू करने में सफल होगी तथा मध्य प्रदेश देश को पांच ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के संकल्प की पूर्ति में सहभागी बनेगा। प्रदेश के विकास के एक नए चरण की शुरुआत हुई है। **'मोदी की गारंटी हर गारंटी के पूरे होने की गारंटी'** है। ▪

योजनाओं को मोर्चा पदाधिकारी जन-जन तक पहुंचाएं

भाजपा की डबल इंजन की सरकार गरीब कल्याण की कई योजनाएं चला रही है। भाजपा की डबल इंजन की सरकार की योजनाओं को जनता तक पहुंचाएं और पात्रों को इसका लाभ दिलाने का कार्य करें। सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने और उनका प्रचार-प्रसार का कार्य मोर्चा पदाधिकारी करें।

अभी प्रदेश में विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाली जा रही है, उसमें सहभागिता कर योजनाओं के पात्र व्यक्तियों को उनका लाभ दिलाने का कार्य करें।

मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में भाजपा को मिली ऐतिहासिक जीत, सभी मोर्चों के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत का ही परिणाम है, जिससे हमें इतनी बड़ी सफलता मिली। इसी तरह का प्रयास हमें आने वाले लोकसभा चुनाव में भी करना है। सभी मोर्चा नव मतदाताओं को पार्टी से जोड़ने के लिए अभियान चलाएं और नमो मित्र, नमो वॉरियर्स बनाने के कार्य को प्राथमिकता से करें।

विकसित भारत संकल्प यात्रा में सहभागिता कर पात्रों को लाभ दिलाएं

भाजपा की डबल इंजन की सरकार गरीब कल्याण की कई योजनाएं चला रही है। भाजपा की डबल इंजन की सरकार की योजनाओं को जनता तक पहुंचाएं और पात्रों को इसका लाभ दिलाने का कार्य करें। सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने और उनका प्रचार-प्रसार का कार्य मोर्चा पदाधिकारी करें। अभी प्रदेश में विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाली जा रही है, उसमें सहभागिता कर योजनाओं के पात्र व्यक्तियों को उनका लाभ दिलाने का कार्य करें। सरकारी आयोजनों में जनता की सहभागिता और बढ़ाएं, ताकि भाजपा सरकार और बेहतर तरीके से जनता की सेवा कर सके। हाल ही में संपन्न हुए विधानसभा चुनाव में जो सीटें भाजपा हारी है, वहां और सक्रियता बढ़ाएं और डबल इंजन सरकार के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाकर लोकसभा में भाजपा की प्रचंड जीत हो ऐसे प्रयास करें।

लोकसभा चुनाव में ऐतिहासिक जीत के लिए सभी मोर्चा अभी से अभियान में जुटे

मध्यप्रदेश के विधानसभा चुनाव में सभी मोर्चों ने अथक मेहनत, कुशल रणनीति से प्रयास किया उसी का परिणाम है कि भाजपा को ऐतिहासिक बहुमत मिला। चुनाव से पहले युवा मोर्चा, महिला मोर्चा, पिछड़ा वर्ग मोर्चा, किसान मोर्चा, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यक मोर्चा ने जो अलग-अलग अभियान चलाकर जनता के बीच कार्य किया उसका पार्टी को बहुत फायदा मिला।

भाजपा को इस विधानसभा चुनाव में 48.62 प्रतिशत मत मिला जो प्रदेश के विधानसभा चुनाव में अब तक का सर्वाधिक मत प्रतिशत है। हमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सबका विकास, सबका साथ और सबका विश्वास के मंत्र पर आगे कार्य करना है। लोकसभा चुनाव में भाजपा के मत प्रतिशत को और बढ़ाना है, इसके लिए अभियान चलायें।

सभी मोर्चा पदाधिकारी विकसित भारत संकल्प यात्रा में शामिल हों और सरकार की योजनाओं का जनता को लाभ दिलाएं। मोर्चा पदाधिकारी विकसित भारत एंबेसडर बनाने का अभियान चलाकर नए लोगों को नमो एप से जोड़ें। युवाओं को पार्टी से जोड़ने के लिए नव मतदाता सम्मेलन आयोजित किए जाएं। युवा मोर्चा इस कार्य को करें और सभी मोर्चा उसमें सहभागिता करें।

22 जनवरी को अपने गांव के मंदिर को अयोध्या धाम बनाएं

पार्टी के सभी मोर्चा नमो एप और नमो वॉरियर्स बनाने का कार्य प्राथमिकता से करें। जनता के बीच संपर्क बनायें। सभी मोर्चे अपने कार्यक्रम निर्धारित करें, उन्हें समय-सीमा में पूरा करने का लक्ष्य लेकर कार्य करें। 22 जनवरी को अयोध्या में भगवान श्री रामलला विराजमान होने वाले हैं।

हर व्यक्ति 22 जनवरी को अयोध्या नहीं पहुंच सकता, इसलिए अपने गांव के मंदिर को उस दिन अयोध्या धाम की तरह सजाएं और वहां पूजा-पाठ और भंडारे का आयोजन करें। 22 जनवरी की शाम को हर घर के बाहर 11 दीपक जलाकर दीपावली जैसा उत्सव मनाए। इसके लिए सभी मोर्चों के कार्यकर्ता जनता के साथ सहभागिता करें।

युवाओं को पार्टी से जोड़ने का अभियान चलाएं। पहली बार मतदाता बने युवक-युवतियों को पार्टी से जोड़ने के लिए सभी मोर्चा संयुक्त रूप से कार्य योजना बनाकर कार्य को गति प्रदान करें। सभी मोर्चा युवा संवाद, महासंपर्क अभियान चलाकर आम जनता को पार्टी से जोड़ने का कार्य करें। ▪

चार मुए तो क्या हुआ जीवित कई हजार

हितानंद

दिसंबर के अंतिम सप्ताह का भारतीय इतिहास में विशेष महत्व है। इसे 'शोक' और 'शौर्य का सप्ताह' कहा जाता है। गुरु गोबिंद सिंह सिखों की गुरु परंपरा में दसवें गुरु हैं।

विश्व इतिहास में बाल्यावस्था में शौर्य, साहस और दृढ़ता की ऐसी अद्वितीय अमर वीरगाथा कहीं और नहीं मिलती जिसमें, 6 और 8 वर्ष की आयु के छोटे साहिबजादों ने धर्म की रक्षा के लिए स्वयं को शहीद कर दिया। गुरु गोबिंद सिंह जी के दोनों साहिबजादों की यह शहादत धर्म रक्षा के लिए दी गई शहादत का अभूतपूर्व उदाहरण है। धर्म त्याग करने पर सब कुछ दिए जाने का प्रलोभन या इसे नहीं मानने पर अमानवीय यातनाएं झेलते हुए मृत्यु के विकल्प में से छोटे साहिबजादों ने शहीद हो जाने का ही संकल्प लिया। उन्हें चुनवा देने के लिए उठाई जा रही 'खूनी दीवार' के सामने निडर खड़े दोनो छोटे साहिबजादों ने जपुजी का पाठ करते हुए अपना सर्वस्व राष्ट्र, संस्कृति और धर्म के लिए समर्पित कर दिया। इस महान शहादत के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए एवं उनकी वीरता को स्मरण करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने प्रतिवर्ष 26 दिसंबर को **'वीर बाल दिवस'** घोषित किया है।

दिसंबर के अंतिम सप्ताह का भारतीय इतिहास में विशेष महत्व है। इसे 'शोक' और 'शौर्य का सप्ताह' कहा जाता है। गुरु गोबिंद सिंह सिखों की गुरु परंपरा में दसवें गुरु हैं। उन्हें 'सरबंस दानी' की भी उपाधि दी गई है क्योंकि 21 दिसम्बर से 27 दिसम्बर के सात दिनों में गुरु गोविंद सिंह ने अपने चार पुत्रों और माता को देश और धर्म के लिए समर्पित कर दिया था और इसके बाद भी उन्होंने दृढ़ता से कहा-

'इन पूतन के सीस पर,
वार दिए सुत चार।
चार मुए तो क्या हुआ
जीवित कई हजार।।'

यह मध्य कालीन भारत की बड़ी मार्मिक किन्तु गौरवशाली कथा है, जब बर्बर विदेशी लुटेरे भारत की सत्ता पर कब्जा कर के बैठे हुए थे। इनसे धर्म, संस्कृति और राष्ट्र को बचाने के लिए समाज में विद्रोह और संघर्ष भी चल रहे थे। गुरु गोबिंद सिंह ने भी मुगलों से युद्ध छेड़ रखा था। गुरु गोबिंद सिंह जी के चार साहिबजादे थे। इनमें से तीसरे साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह को 17 नवंबर 1696 को माता जीतो जी ने आनंदपुर साहिब में जन्म दिया। 25 फरवरी 1699 को छोटे साहिबजादे बाबा फतेह सिंह का जन्म हुआ। इसके लगभग 10 माह बाद 5 दिसंबर 1700 के दिन माता जीतो जी के परलोक गमन कर जाने पर गुरु गोबिंद सिंह जी की माता गुजरी जी ने अपने पौत्रों बाबा जोरावर सिंह और उनके छोटे भाई बाबा फतेह सिंह की उच्चतम आदर्श देते हुए परवरिश की। एक बार सभी सिरसा नदी पार करते समय बाढ़ के पानी में दोनों साहिबजादे और दादी माता गुजरी जी का गुरु गोबिंद सिंह जी से साथ छूट गया। माता गुजरी जी उन्हे घने जंगल से निकाल ले गईं। उनका रसोइया गंगू भी नदी पार करने में सफल हो गया था। वह दादी और दोनों साहिबजादों को अपने गांव खेड़ी ले गया।

घर पहुंचने पर रसोइया गंगू ने माता गुजरी जी की गठड़ी से आभूषण चुरा लिए और इनाम के लालच में मुगलों को सूचना दे दी। मुगल अधिकारी तीनों को हिरासत में लेकर सरहिंद ले गए जहां उन्हें दिसंबर की कड़ाके की ठंड और बर्फीली हवाओं के बीच सबसे ठंडे बुर्ज में भूखे रखा गया। जब इसकी जानकारी गुरु गोबिंद सिंह के श्रद्धालु भाई मोती मेहरा को लगी तो वे खतरा उठाकर सीढ़ी लगाकर उस ठंडे बुर्ज तक पहुंचे और छोटे साहिबजादों को दूध पिलाकर लौटे।

उधर, चमकौर के युद्ध में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के दो बड़े साहिबजादे शहीद हो चुके थे। 9

दिसंबर 1705 को दोनों छोटे साहिबजादों को चमकौर से लौटे सरहिंद के फौजदार नवाब वजीर खान के समक्ष पेश कर दिया गया। वजीर खान ने दोनों साहिबजादों को इस्लाम कबूल करने के लिए कई प्रलोभन दिए लेकिन साहिबजादों ने सब प्रलोभनों को ठोकर मार कर धर्म की रक्षा पर अडिग रहने की गर्जना कर दी थी। वजीर ने उन्हें मौत की धमकी दी पर दोनों साहिबजादे अपने निर्णय से बिल्कुल भी नहीं डिगे। अंततः बर्बर आततायी वजीर खान ने दोनों छोटे साहिबजादों को मृत्युदंड की सजा सुना दी।

साहिबजादा जोरावर सिंह और उनके छोटे भाई फतेह सिंह ने कड़ाके की ठंड में दो और रातें उसी ठंडे और हौसला तोड़ देने वाली बर्फीली हवा वाले बुर्ज में दादी की गोद में बिताईं। जब साहिबजादों को वजीर खान के दरबार में ले जाया गया तो दोनों ने जोर से गर्जना करते हुए कहा -

वाहिगुरु जी का खालसा।
वाहिगुरु जी की फतेह।।

दरबार में वजीर खान ने एक बार फिर दोनों को लालच दिया कि वे इस्लाम स्वीकार करके मुसलमान बन जाएं इसके लिए वे जो कहेंगे दिया जाएगा। साहिबजादों ने पूरे आत्मविश्वास और दृढ़ता से कहा- हम किसी भी कीमत पर अपना धर्म नहीं छोड़ेंगे। हम अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध लड़ रहे हैं। हम गुरु गोबिंद सिंह जी के पुत्र, गुरु तेग बहादुर जी के पौत्र और गुरु अर्जनदेव जी के वंशज हैं। हम उनके दिखाए मार्ग पर ही चलेंगे। अपने धर्म की रक्षा के लिए हम हर एक कुर्बानी देने को तैयार हैं। वजीरखान ने अपनी सभी चालें बेकार जाते देख दोनों को जीवित ही दीवार में चुनवाने का हुक्म दे दिया।

दरबार से वापस बुर्ज में भेजे साहिबजादों ने माता गुजरी जी को जब पूरी बात बताई तो उन्होंने दोनों को गले से लगा लिया और उनकी बहादुरी के लिए शाबाशी दी। अगले दिन दरबार में फिर उन्हें इस्लाम कबूल करने के लिए लालच दिए गए, मौत का डर दिखाया गया पर वे धर्म रक्षा के अपने निर्णय पर अडिग रहे। अंत में दोनों को उस स्थान पर ले जाया गया जहां दीवार चुनवाई जा रही थी। दोनों साहिबजादों को साथ खड़ा करके जल्लाद दीवार उठाने लगे। दोनों साहिबजादों ने गुरुवाणी का पाठ शुरू कर दिया। जैसे ही दीवार दोनों के मुख तक पहुंची तो भरभराकर गिर गई। दोनों साहिबजादे बेहोश हो गए। होश में आने पर उन्हें फिर धर्म परिवर्तन के लिए प्रलोभन दिए गए लेकिन वे दोनों नहीं माने। अंततः 26 दिसंबर को दुष्ट वजीर खान ने दोनों साहिबजादों को शहीद करा दिया। इसके साथ ही दोनों साहिबजादों ने अपनी महान शहादत से गुरुवाणी की इन पवित्र पंक्तियों को सच किया -

'सूरा सो पहचानिए,
जो लरै दीन के हेत,
पुरजा-पुरजा कट मरै
कबहू ना छाडे खेत'

इधर ठंडे बुर्ज में यातनाएं सह रहीं वृद्ध माता गुजरी जी ने भी यह सूचना मिलते ही 27 दिसंबर को प्राण त्याग दिए। इसके बाद जो हुआ वह भी विश्व इतिहास में पहली बार हुआ। दोनों साहिबजादों और माता गुजरी जी के अंतिम संस्कार के लिए जो जमीन वजीर खान ने दी वह दुनिया की सबसे कीमती जमीन रही और सरहिंद के एक धनी व्यापारी सेठ टोडरमल ने इसे लेकर तीनों का पूरे सम्मान के साथ अंतिम संस्कार कराया। इसके लिए वजीर खान ने शर्त रखी कि अंतिम संस्कार के लिए जितनी भूमि चाहिए उसे सोने के सिक्कों से ढंक दिया जाए। सेठ टोडरमल ने इसके लिए एक स्थान चुना और उसे सोने के सिक्के बिछाकर ढंक दिया। सोने के सिक्कों के बदले वह स्थान लेकर तीनों का अंतिम संस्कार कर दिया गया। सरहिंद के पास फतेहगढ़ साहिब में इस स्थान पर आज भी चार गुरुधाम सुशोभित हैं। उस स्थान पर प्रतिवर्ष 25 से 28 दिसंबर तक महान शहीदों का पवित्र स्मरण करते हुए दीवान सजाए जाते हैं।

साहिबजादों की कुर्बानी ने देश में एक नई क्रांति का संचार किया। पूरा समाज मुगल शासन को खत्म करने के लिए एकजुट हो गया। गुरु गोबिंद सिंह जी को जब साहिबजादों और माता गुजरी जी की शहादत का समाचार मिला तब वे माछीवाड़े के जंगलों में थे। उन्होंने घोषणा की कि यह अब भारत से मुगल सत्ता के खत्म होने का कारण बनेगा। इसके कुछ समय बाद गुरु गोबिंद सिंह जी ने नांदेड़ पहुंचकर माधवदास बैरागी को अमृत छका कर सिख सजाया। अब वे माधवदास से बंदा सिंह बहादुर हो गए। बाबा बंदा सिंह बहादुर के नेतृत्व में सिखों ने सरहिंद पर आक्रमण कर चपड़चिड़ी के मैदान में 12 मई 1710 को हुए युद्ध में मुगल सेना को बुरी तरह से पराजित किया। वजीर खान मारा गया और 14 मई को सिखों ने सरहिंद पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार दोनों साहिबजादों और माता गुजरी जी की शहादत आज भी सिखों द्वारा प्रतिदिन की जाने वाली अरदास में स्मरण किया जाता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व 9 जनवरी 2022 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 'वीर बाल दिवस' मनाए जाने की घोषणा की थी कि श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के छोटे साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह जी और बाबा फतेह सिंह की शहादत को याद करते हुए प्रतिवर्ष 26 दिसंबर को 'वीर बाल दिवस' मनाया जाएगा। प्रधानमंत्री जी की घोषणा के अनुरूप श्री गोबिंद सिंह जी के साहिबजादों की अद्वितीय शहादत के प्रति श्रद्धांजलि देने के लिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस मनाने के लिए राजपत्र में अधिसूचना जारी की। इसके अनुसार ही अब प्रतिवर्ष 26 दिसम्बर को वीर बाल दिवस मनाया जाता है। गुरु गोबिंद सिंह जी के चारों पुत्रों की शहादत ने भारत की तरुणायी में यह चेतना जगाने का काम किया कि राष्ट्र और धर्म की रक्षा के लिए इस मातृभूमि पर हजारों पुत्र कुर्बान किए जा सकते हैं। ▪

(लेखक भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के प्रदेश संगठन महामंत्री हैं)

अमर बलिदान, प्रेरक अध्याय

सिख गुरुओं ने देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 2022 में साहिबजादों जोरावर सिंह और फतेह सिंह के बलिदान दिवस को वीर बाल दिवस के रूप में मनाए जाने की घोषणा की थी।

गुरु गोविंद सिंह के साहिबजादों जोरावर सिंह और फतेह सिंह के शहीदी दिवस को वीर बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। गुरु गोविंद सिंह के चारों साहिबजादों ने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया, लेकिन झुके नहीं। उनका अमर बलिदान देश के इतिहास में एक प्रेरक अध्याय के तौर पर दर्ज हो गया है। ▪

काशी-तमिल संगमम की आवाज पूरी दुनिया में जा रही है

काशी-तमिल संगमम शुरू होने के बाद से ही इस यात्रा में दिनों-दिन लाखों लोग जुड़ते जा रहे हैं। विभिन्न मठों के धर्मगुरु, स्टूडेंट्स, तमाम कलाकार, साहित्यकार, शिल्पकार, प्रॉफेशनल्स, कितने ही क्षेत्र के लोगों को इस संगमम से आपसी संवाद और संपर्क का एक प्रभावी मंच मिला है।

तमिलनाडु से काशी आने का मतलब है, महादेव के एक घर से उनके दूसरे घर आना। तमिलनाडु से काशी आने का मतलब है- मदुरई मीनाक्षी के यहाँ से काशी विशालाक्षी के यहाँ आना। इसीलिए, तमिलनाडु और काशीवासियों के बीच हृदय में जो प्रेम है, जो संबंध है, वो अलग भी है और अद्वितीय है।

एक बार काशी के विद्यार्थी रहे सुब्रमण्य भारती जी ने लिखा था- **''काशी नगर पुलवर पेसुम उरैताम् कान्चियिल केट्पदर्कु ओर करुवि सेय्वोम्''**

वो कहना चाहते थे कि काशी में जो मंत्रोच्चार होते हैं, उन्हें तमिलनाडु के कांची शहर में सुनने की व्यवस्था हो जाए तो कितना अच्छा होता। आज सुब्रमण्यम भारती जी को उनकी वो इच्छा पूरी होती नजर आ रही है। काशी-तमिल संगमम की आवाज पूरे देश में, पूरी दुनिया में जा रही है।

काशी-तमिल संगमम शुरू होने के बाद से ही इस यात्रा में दिनों-दिन लाखों लोग जुड़ते जा रहे हैं। विभिन्न मठों के धर्मगुरु, स्टूडेंट्स, तमाम कलाकार, साहित्यकार, शिल्पकार, प्रॉफेशनल्स, कितने ही क्षेत्र के लोगों को इस संगमम से आपसी संवाद और संपर्क का एक प्रभावी मंच मिला है। इस संगमम को सफल बनाने के लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय और IIT मद्रास भी साथ आए हैं। IIT मद्रास ने बनारस के हजारों स्टूडेंट्स को साइन्स और मैथ्स में ऑनलाइन सपोर्ट देने के लिए विद्याशक्ति initiative शुरू किया है। एक वर्ष के भीतर हुए अनेक कार्य इस बात के प्रमाण हैं कि काशी और तमिलनाडु के रिश्ते भावनात्मक भी हैं, और रचनात्मक भी हैं।

'काशी तमिल संगमम' ऐसा ही अविरल प्रवाह है, जो 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' इस भावना को लगातार मजबूत कर रहा है। इसी सोच के साथ कुछ समय पहले काशी में ही गंगा-पुष्करालु उत्सव, यानी काशी-तेलुगू संगमम भी हुआ था। गुजरात में हमने सौराष्ट्र-तमिल संगमम का भी सफल आयोजन किया था। 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के लिए हमारे राजभवनों ने भी बहुत अच्छी पहल की है। अब राजभवनों में दूसरे राज्यों के स्थापना दिवस समारोह धूमधाम से मनाए जाते हैं, दूसरे राज्यों के लोगों को बुलाकर विशेष आयोजन किए जाते हैं। 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की ये भावना उस समय भी नजर आई जब हमने संसद के नए भवन में प्रवेश किया। नए संसद भवन में पवित्र सेंगोल की स्थापना की गई है। आदीनम् के संतों के मार्गदर्शन में यही सेंगोल 1947 में सत्ता के हस्तांतरण का प्रतीक बना था। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना का यही प्रवाह है, जो आज हमारे राष्ट्र की आत्मा को सींच रहा है।

हम भारतवासी, एक होते हुए भी बोलियों, भाषाओं, वेश-भूषा, खानपान, रहन-सहन, कितनी ही विविधता से भरे हुए हैं। भारत की ये विविधता उस आध्यात्मिक चेतना में रची बसी है, जिसके लिए तमिल में कहा गया है-

'नीरेल्लाम् गङ्गै, निलमेल्लाम् कासी'।

ये वाक्य महान पाण्डिय राजा 'पराक्रम पाण्डियन्' का है। इसका अर्थ है- हर जल गंगाजल है, भारत का हर भूभाग काशी है।

जब उत्तर में आक्रांताओं द्वारा हमारी आस्था के केन्द्रों पर, काशी पर आक्रमण हो रहे थे, तब राजा पराक्रम पाण्डियन् ने तेनकाशी और शिवकाशी में ये कहकर मंदिरों का निर्माण कराया कि काशी को मिटाया नहीं जा सकता।

आप दुनिया की कोई भी सभ्यता देख लीजिये, विविधता में आत्मीयता का ऐसा सहज और श्रेष्ठ स्वरूप आपको शायद ही कहीं मिलेगा! अभी हाल ही में G-20 समिट के दौरान भी दुनिया भारत की इस विविधता को देखकर चकित थी।

दुनिया के दूसरे देशों में राष्ट्र एक राजनीतिक परिभाषा रही है, लेकिन भारत एक राष्ट्र के तौर पर आध्यात्मिक आस्थाओं से बना है। भारत को एक बनाया है आदि शंकराचार्य और रामानुजाचार्य जैसे संतों ने, जिन्होंने अपनी यात्राओं से भारत की राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया। तमिलनाडु से आदिनम संत भी सदियों से काशी जैसे शिव स्थानों की यात्रा करते रहे हैं। काशी में कुमारगुरुपरर् ने मठों-मंदिरों की स्थापना की थी। तिरूपनन्दाल आदिनम का तो यहां से इतना लगाव है कि वो आज भी अपने नाम के आगे काशी लिखते हैं। इसी तरह, तमिल आध्यात्मिक साहित्य में 'पाडल् पेट्र थलम्' के बारे में लिखा है कि उनके दर्शन करने वाला व्यक्ति केदार या तिरुकेदारम् से तिरुनेलवेली तक भ्रमण कर लेता है। इन यात्राओं और तीर्थयात्राओं के जरिए भारत हजारों वर्षों से एक राष्ट्र के रूप में अडिग रहा है, अमर रहा है।

काशी तमिल संगमम के जरिए देश के युवाओं में अपनी इस प्राचीन परंपरा के प्रति उत्साह बढ़ा है। तमिलनाडु से बड़ी संख्या में लोग, वहां के युवा काशी आ रहे हैं। यहां से प्रयाग, अयोध्या और दूसरे तीर्थों में भी जा रहे हैं। काशी-तमिल संगमम में आने वाले लोगों को अयोध्या दर्शन की भी विशेष व्यवस्था की गई है। महादेव के साथ ही रामेश्वरम की स्थापना करने वाले भगवान राम के दर्शन का सौभाग्य अद्भुत है।

हमारे यहां कहा जाता है-

जानें बिनु न होइ परतीती।

बिनु परतीति होइ नहि प्रीती॥

अर्थात्, जानने से विश्वास बढ़ता है, और विश्वास से प्रेम बढ़ता है। इसलिए, ये जरूरी है कि हम एक- दूसरे के बारे में, एक दूसरे की परम्पराओं के बारे में, अपनी साझी विरासत के बारे में जानें। दक्षिण और उत्तर में काशी और मदुरई का उदाहरण हमारे सामने है। दोनों महान मंदिरों के शहर हैं। दोनों महान तीर्थस्थल हैं। मदुरई, वइगई के तट पर स्थित है और काशी गंगई के तट पर! तमिल साहित्य में वइगई और गंगई, दोनों के बारे में लिखा गया है। जब हम इस विरासत को जानते हैं, तो हमें अपने रिश्तों की गहराई का भी अहसास होता है। काशी-तमिल संगमम का ये संगम, इसी तरह हमारी विरासत को सशक्त करता रहेगा, एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को मजबूत बनाता रहेगा। ▪

दुनिया भारत को उभरते बायो मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में देख रही है

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी बायोइकोनॉमी ने पिछले 9-10 वर्षों में साल-दर-साल डबल डिजिट की विकास दर दर्ज की है।

- 2014 में, भारत की जैव-अर्थव्यवस्था लगभग 10 अरब डॉलर थी, इस वित्तीय वर्ष में 150 अरब डॉलर तक पहुंचने की संभावना है और 2030 तक 300 अरब डॉलर होने की उम्मीद करते हैं।
- भारत ने पिछले 8-9 वर्षों में तेजी से प्रगति की है। 2014 में सिर्फ 55 (बायोटेक) स्टार्टअप थे, अब इनकी संख्या 6,000 से अधिक हैं।
- आज 3,000 से अधिक एग्रीटेक स्टार्टअप हैं और अरोमा मिशन और पर्पल रिवोल्यूशन जैसे क्षेत्रों में बहुत सफल हैं।
- लगभग 4,000 लोग लैवेंडर की खेती से जुड़े हुए हैं और लाखों रुपये कमा रहे हैं।
- जैव प्रौद्योगिकी आने वाले वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था को 'भविष्य में मूल्य वर्धन' प्रदान करेगी।
- भारत के पास जैव संसाधनों की एक विशाल संपदा है जो एक ऐसा संसाधन है जिसका दोहन नहीं हुआ है। विशेष रूप से विशाल जैव विविधता और हिमालय में अद्वितीय जैव संसाधनों के कारण जैव प्रौद्योगिकी के लिए यह एक बड़ा लाभ है। इसके अलावा 7,500 किलोमीटर लंबी कोस्टलाइन भी है और डीप सी मिशन के तहत हम समुद्र के नीचे जैव विविधता की खुदाई करने जा रहे हैं।
- जैव प्रौद्योगिकी युवाओं के बीच एक ट्रेंडिंग करियर विकल्प के रूप में उभरी है।
- पीएम नरेन्द्र मोदी जी ने उद्यमिता और एक संपन्न उद्योग के लिए माहौल तैयार किया है।
- हमारे पास सब कुछ था, लेकिन हम संभवत: एक सक्षम वातावरण के तैयार होने की प्रतीक्षा कर रहे थे और यह सक्षम माहौल प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के आने के बाद तैयार हुआ है।
- ग्लोबल बायोफ्यूल एलायंस (जीबीए) के लॉन्च से जैव ईंधन की उन्नति और व्यापक रूप से अपनाने के लिए वैश्विक सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।
- जैव प्रौद्योगिकी अमृत काल अर्थव्यवस्था और भारत को दुनिया में अग्रणी राष्ट्र बनाने की कुंजी होगी।
- संदेह के लिए अब कोई जगह नहीं है, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में नौ वर्षों के दौरान नीति नियोजन परिवर्तनों ने सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच आपसी विश्वास पैदा किया है। ▪

सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 370 पर अपने फैसले में भारत की संप्रभुता और अखंडता को बरकरार रखा है

भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 370 और 35 (ए) को निरस्त करने पर 11 दिसंबर को ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अपने फैसले में भारत की संप्रभुता और अखंडता को बरकरार रखा है, जिसे प्रत्येक भारतीय द्वारा सदैव संजोया जाता रहा है। सुप्रीम कोर्ट का यह कहना पूरी तरह से उचित है कि 5 अगस्त 2019 को हुआ निर्णय संवैधानिक एकीकरण को बढ़ाने के उद्देश्य से लिया गया था, न कि इसका उद्देश्य विघटन था। सर्वोच्च न्यायालय ने इस तथ्य को भी भली भांति माना है कि अनुच्छेद 370 का स्वरूप स्थायी नहीं था।

जम्मू, कश्मीर और लद्दाख की खूबसूरत और शांत वादियां, बर्फ से ढके पहाड़, पीढ़ियों से कवियों, कलाकारों और हर भारतीय के दिल को मंत्रमुग्ध करते रहे हैं। यह एक ऐसा अद्भुत क्षेत्र है जो हर दृष्टि से अभूतपूर्व है, जहां हिमालय आकाश को स्पर्श करता हुआ नजर आता है, और जहां इसकी झीलों एवं नदियों का निर्मल जल स्वर्ग का दर्पण प्रतीत होता है। लेकिन पिछले कई दशकों से जम्मू-कश्मीर के अनेक स्थानों पर ऐसी हिंसा और अस्थिरता देखी गई, जिसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। वहां के हालात कुछ ऐसे थे, जिससे जम्मू-कश्मीर के परिश्रमी, प्रकृति प्रेमी और स्नेह से भरे लोगों को कभी भी रू-ब-रू नहीं होना चाहिए था।

लेकिन दुर्भाग्यवश, सदियों तक उपनिवेश बने रहने, विशेषकर आर्थिक और मानसिक रूप से पराधीन रहने के कारण, तब का समाज एक प्रकार से भ्रमित हो गया। अत्यंत बुनियादी विषयों पर स्पष्ट नजरिया अपनाने के बजाय दुविधा की स्थिति बनी रही जिससे और ज्यादा भ्रम उत्पन्न हुआ। अफसोस की बात यह है कि जम्मू-कश्मीर को इस तरह की मानसिकता से व्यापक नुकसान हुआ।

देश की आजादी के समय तब के राजनीतिक नेतृत्व के पास राष्ट्रीय एकता के लिए एक नई शुरुआत करने का विकल्प था। लेकिन तब इसके बजाय उसी भ्रमित समाज का दृष्टिकोण जारी रखने का निर्णय लिया गया, भले ही इस वजह से दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों की अनदेखी करनी पड़ी।

5 अगस्त का ऐतिहासिक दिन हर भारतीय के दिल और दिमाग में बसा हुआ है। हमारी संसद ने अनुच्छेद 370 को निरस्त करने का ऐतिहासिक निर्णय पारित किया और तब से जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में बहुत कुछ बदलाव आया है।

न्यायिक अदालत का फैसला दिसंबर 2023 में आया है, लेकिन जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में विकास की गति को देखते हुए जनता की अदालत ने चार साल पहले अनुच्छेद 370 और 35 (ए) को निरस्त करने के संसद के फैसले का जोरदार समर्थन किया है।

मुझे अपने जीवन के शुरुआती दौर से ही जम्मू-कश्मीर आंदोलन से जुड़े रहने का अवसर मिला है। मेरी अवधारणा सदैव ही ऐसी रही है जिसके अनुसार जम्मू-कश्मीर महज एक राजनीतिक मुद्दा नहीं था, बल्कि यह विषय

समाज की आकांक्षाओं को पूरा करने के बारे में था। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को नेहरू मंत्रिमंडल में एक महत्वपूर्ण विभाग मिला हुआ था और वे काफी लंबे समय तक सरकार में बने रह सकते थे। फिर भी, उन्होंने कश्मीर मुद्दे पर मंत्रिमंडल छोड़ दिया और आगे का कठिन रास्ता चुना, भले ही इसकी कीमत उन्हें अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। लेकिन उनके अथक प्रयासों और बलिदान से करोड़ों भारतीय कश्मीर मुद्दे से भावनात्मक रूप से जुड़ गए।

कई वर्षों बाद अटल जी ने श्रीनगर में एक सार्वजनिक बैठक में 'इंसानियत', 'जम्हूरियत' और 'कश्मीरियत' का प्रभावशाली संदेश दिया, जो सदैव ही प्रेरणा का महान स्रोत भी रहा है।

मेरा हमेशा से दृढ़ विश्वास रहा है कि जम्मू-कश्मीर में जो कुछ हुआ था, वह हमारे राष्ट्र और वहां के लोगों के साथ एक बड़ा विश्वासघात था। मेरी यह भी प्रबल इच्छा थी कि मैं इस कलंक को, लोगों पर हुए इस अन्याय को मिटाने के लिए जो कुछ भी कर सकता हूँ, उसे जरूर करूँ। मैं हमेशा से जम्मू-कश्मीर के लोगों की पीड़ा को कम करने के लिए काम करना चाहता था।

सरल शब्दों में कहें तो, अनुच्छेद 370 और 35 (ए) जम्मू, कश्मीर और लद्दाख के सामने बड़ी बाधाओं की तरह थे। ये अनुच्छेद एक अटूट दीवार की तरह थे तथा गरीब, वंचित, दलितों-पिछड़ों-महिलाओं के लिए पीड़ादायक थे। अनुच्छेद 370 और 35(ए) के कारण जम्मू-कश्मीर के लोगों को वह अधिकार और विकास कभी नहीं मिल पाया, जो उनके साथी देशवासियों को मिला। इन अनुच्छेदों के कारण, एक ही राष्ट्र के लोगों के बीच दूरियां पैदा हो गईं। इस दूरी के कारण, हमारे देश के कई लोग, जो जम्मू-कश्मीर की समस्याओं को हल करने के लिए काम करना चाहते थे, ऐसा करने में असमर्थ थे, भले ही उन लोगों ने वहां के लोगों के दर्द को स्पष्ट रूप से महसूस किया हो।

एक कार्यकर्ता के रूप में, जिसने पिछले कई दशकों से इस मुद्दे को करीब से देखा हो, वो इस मुद्दे की बारीकियों और जटिलताओं से भली-भांति परिचित था। मैं एक बात को लेकर बिल्कुल स्पष्ट था- जम्मू-कश्मीर के लोग विकास चाहते हैं तथा वे अपनी ताकत और कौशल के आधार पर भारत के विकास में योगदान देना चाहते हैं। वे अपने बच्चों के लिए जीवन की बेहतर गुणवत्ता चाहते हैं, एक ऐसा जीवन जो हिंसा और अनिश्चितता से मुक्त हो।

इस प्रकार, जम्मू-कश्मीर के लोगों की सेवा करते समय, हमने तीन बातों को प्रमुखता दी- **नागरिकों की चिंताओं को समझना, सरकार के कार्यों के माध्यम से आपसी-विश्वास का निर्माण करना तथा विकास, निरंतर विकास को प्राथमिकता देना।**

मुझे याद है, 2014 में, हमारे सत्ता संभालने के तुरंत बाद, जम्मू-कश्मीर में विनाशकारी बाढ़ आई थी, जिससे कश्मीर घाटी में बहुत नुकसान हुआ था। सितंबर 2014 में, मैं स्थिति का आकलन करने के लिए श्रीनगर गया और पुनर्वास के लिए विशेष सहायता के रूप में 1000 करोड़ रुपये की घोषणा भी की। इससे लोगों में ये संदेश भी गया कि संकट के दौरान हमारी सरकार वहां के लोगों की मदद के लिए कितनी संवेदनशील है। मुझे जम्मू-कश्मीर में विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से मिलने का अवसर मिला है और इन संवादों में एक बात समान समान रूप से उभरती है - **लोग न केवल विकास चाहते हैं, बल्कि वे दशकों से व्याप्त भ्रष्टाचार से भी मुक्ति चाहते हैं।** उस साल मैंने जम्मू-कश्मीर में जान गंवाने वाले लोगों की याद में दीपावली नहीं मनाने का फैसला किया। मैंने दीपावली के दिन जम्मू-कश्मीर में मौजूद रहने का भी फैसला किया।

जम्मू एवं कश्मीर की विकास यात्रा को और मजबूती प्रदान करने के लिए हमने यह तय किया कि हमारी सरकार के मंत्री बार-बार वहां जायेंगे और वहां के लोगों से सीधे संवाद करेंगे। इन लगातार दौरों ने भी जम्मू एवं कश्मीर में सदभावना कायम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मई 2014 से मार्च 2019 के दौरान 150 से अधिक मंत्रिस्तरीय दौरे हुए। यह अपने आप में एक कीर्तिमान है। वर्ष 2015 का विशेष पैकेज जम्मू एवं कश्मीर की विकास संबंधी जरूरतों को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। इसमें बुनियादी ढांचे के विकास, रोजगार सृजन, पर्यटन को बढ़ावा देने और हस्तशिल्प उद्योग को सहायता प्रदान करने से जुड़ी पहल शामिल थीं।

हमने खेल शक्ति में युवाओं के सपनों को साकार करने की क्षमता को पहचानते हुए जम्मू एवं कश्मीर में इसका भरपूर सदुपयोग किया। विभिन्न खेलों के माध्यम से, हमने वहां के युवाओं की आकांक्षाओं और उनके भविष्य पर खेलों से जुड़ी गतिविधियों के परिवर्तनकारी प्रभाव को देखा। इस दौरान विभिन्न खेल स्थलों का आधुनिकीकरण किया गया, प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए और प्रशिक्षक उपलब्ध कराए गए।

स्थानीय स्तर पर फुटबॉल क्लबों की स्थापना को प्रोत्साहित किया जाना इन सबमें एक सबसे अनूठी बात रही। इसके परिणाम शानदार निकले। मुझे प्रतिभाशाली फुटबॉल खिलाड़ी अफशां आशिक का नाम याद आ रहा है। वो दिसंबर 2014 में श्रीनगर में पथराव करने वाले एक समूह का हिस्सा थी, लेकिन सही प्रोत्साहन मिलने पर उसने फुटबॉल की ओर रुख किया, उसे प्रशिक्षण के लिए भेजा गया और उसने खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। मुझे 'फिट इंडिया डायलॉग्स' के एक कार्यक्रम के दौरान उसके साथ हुई बातचीत याद है, जिसमें मैंने कहा था कि अब 'बेंड इट लाइक बेकहम' से आगे बढ़ने का समय है क्योंकि अब यह 'ऐस इट लाइक अफशां' है। मुझे खुशी है कि अब तो अन्य युवाओं ने किकबॉक्सिंग, कराटे और अन्य खेलों में अपनी प्रतिभा दिखानी शुरू कर दी है।

पंचायत चुनाव भी इस क्षेत्र के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव साबित हुआ। एक बार फिर, हमारे सामने या तो सत्ता में बने रहने या अपने सिद्धांतों पर अटल रहने का विकल्प था। हमारे लिए यह विकल्प कभी भी कठिन नहीं था और हमने सरकार को गंवाने के विकल्प को चुनकर उन आदर्शों को प्राथमिकता दी जिनके पक्ष में हम खड़े हैं। जम्मू एवं कश्मीर के लोगों की आकांक्षाएं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। पंचायत चुनावों की सफलता ने जम्मू एवं कश्मीर के लोगों की लोकतांत्रिक प्रकृति को इंगित किया। मुझे गांवों के प्रधानों के साथ हुई एक बातचीत याद आती है। अन्य मुद्दों के अलावा, मैंने उनसे एक अनुरोध किया कि किसी भी स्थिति में स्कूलों को नहीं जलाया जाना चाहिए और स्कूलों की सुरक्षा की जानी चाहिए। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि इसका पालन किया गया। आखिरकार, अगर स्कूल जलाए जाते हैं तो सबसे ज्यादा नुकसान छोटे बच्चों का होता है।

5 अगस्त का ऐतिहासिक दिन हर भारतीय के दिल और दिमाग में बसा हुआ है। हमारी संसद ने अनुच्छेद 370 को निरस्त करने का ऐतिहासिक निर्णय पारित किया और तब से जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में बहुत कुछ बदलाव आया है। न्यायिक अदालत का फैसला दिसंबर 2023 में आया है, लेकिन जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में विकास की गति को देखते हुए जनता की अदालत ने चार साल पहले अनुच्छेद 370 और 35 (ए) को निरस्त करने के संसद के फैसले का जोरदार समर्थन किया है।

राजनीतिक स्तर पर, पिछले 4 वर्षों को जमीनी स्तर पर लोकतंत्र में फिर से भरोसा जताने के रूप में देखा जाना चहिये। महिलाओं,

आदिवासियों, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और समाज के वंचित वर्गों को उनका हक नहीं मिल रहा था।

वहीं, लद्दाख की आकांक्षाओं को भी पूरी तरह से नजरअंदाज किया जाता था। लेकिन, 5 अगस्त 2019 ने सब कुछ बदल दिया। सभी केंद्रीय कानून अब बिना किसी डर या पक्षपात के लागू होते हैं, प्रतिनिधित्व भी पहले से अधिक व्यापक हो गया है। त्रिस्तरीय पंचायती राज प्रणाली लागू हो गई है, बीडीसी चुनाव हुए हैं, और शरणार्थी समुदाय, जिन्हें लगभग भुला दिया गया था, उन्हें भी विकास का लाभ मिलना शुरू हो गया है।

केंद्र सरकार की प्रमुख योजनाओं ने शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल किया है, ऐसी योजनाओं में समाज के सभी वर्गों को शामिल किया गया है। इनमें सौभाग्य और उज्ज्वला योजनाएं शामिल हैं। आवास, नल से जल कनेक्शन और वित्तीय समावेशन में प्रगति हुई है। लोगों के लिए बड़ी चुनौती रही स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में भी बुनियादी ढांचे का विकास किया गया है। सभी गांवों ने खुले में शौच से मुक्त-ओडीएफ प्लस का दर्जा प्राप्त कर लिया है।

सरकारी रिक्तियां, जो कभी भ्रष्टाचार और पक्षपात का शिकार होती थीं, पारदर्शी और सही प्रक्रिया के तहत भरी गई हैं। आईएमआर जैसे अन्य संकेतकों में सुधार दिखा है। बुनियादी ढांचे और पर्यटन में बढ़ावा सभी देख सकते हैं। इसका श्रेय स्वाभाविक रूप से जम्मू-कश्मीर के लोगों की दृढ़ता को जाता है, जिन्होंने बार-बार दिखाया है कि वे केवल विकास चाहते हैं और इस सकारात्मक बदलाव के वाहक बनने के इच्छुक हैं। इससे पहले जम्मू, कश्मीर और लद्दाख की स्थिति पर सवालिया निशान लगा हुआ था। अब, रिकॉर्ड वृद्धि, रिकॉर्ड विकास, पर्यटकों के रिकॉर्ड आगमन के बारे में सुनकर लोगों को सुखद आश्चर्य होता है।

सुप्रीम कोर्ट ने 11 दिसंबर के अपने फैसले में ''एक भारत, श्रेष्ठ भारत'' की भावना को मजबूत किया है। इसने हमें याद दिलाया कि एकता और सुशासन के लिए साझा प्रतिबद्धता ही हमारी पहचान है। आज जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में जन्म लेने वाले प्रत्येक बच्चे को साफ-सुथरा माहौल मिलता है, जिसमें वह जीवंत आकांक्षाओं से भरे अपने भविष्य को साकार कर सकता है। आज लोगों के सपने बीते समय के मोहताज नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाएं हैं। जम्मू और, कश्मीर में मोहभंग, निराशा और हताशा की जगह अब विकास, लोकतंत्र और गरिमा ने ले ली है। ▪

सुशासन चरितार्थ करके दिखाना है

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

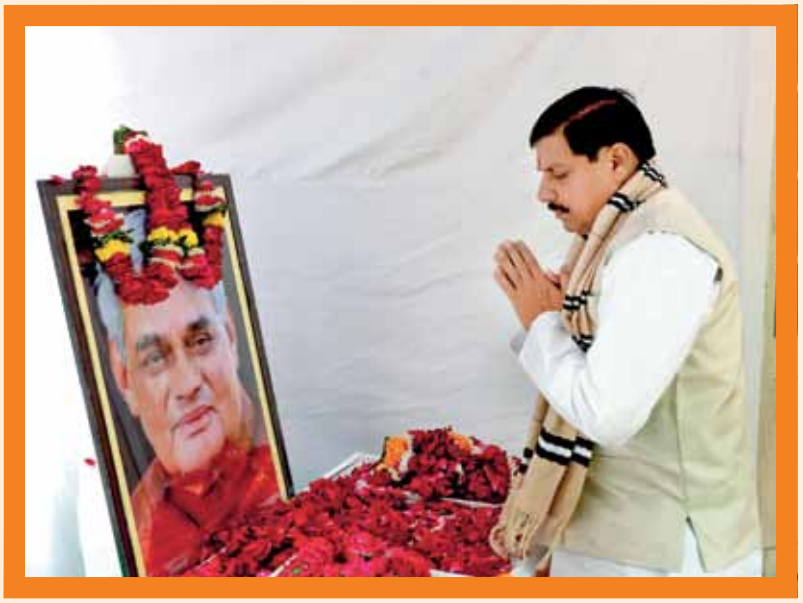

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मंत्र को साकार कर जनता की जिन्दगी बदलना ही सरकार का लक्ष्य है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में जन-सामान्य ने अपना विश्वास व्यक्त किया है, उनके नेतृत्व में विकास की प्रक्रिया जारी है। विकास और जनकल्याण के लक्ष्य को संकल्प पत्र-2023 के अनुरूप धरातल पर उतारना हमारा उद्देश्य है। सभी विभाग संकल्प पत्र के सभी वादों, संकल्पों और घोषणाओं की पूर्ति का काम मिशन मोड में आरंभ कर समय-सीमा में लक्ष्य प्राप्ति सुनिश्चित करेंगें।

त्वरित, पारदर्शी, उत्तरदायी और संवेदनशील शासन व्यवस्था प्रत्येक स्तर पर सुनिश्चित की जायेगी

सभी गतिविधियों का क्रियान्वयन पूर्ण पारदर्शिता, शुचिता और भ्रष्टाचार मुक्त वातावरण में किया जायेगा। सरकार के लिए सुशासन सर्वोपरि है। विकास और जनकल्याण के लक्ष्यों को सुशासन के बल पर ही प्राप्त किया जा सकता है। त्वरित, पारदर्शी, उत्तरदायी और संवेदनशील शासन व्यवस्था प्रत्येक स्तर पर सुनिश्चित की जायेगी। सुशासन हम चरितार्थ करके दिखायेंगे।

संकल्प पत्र के दस प्रमुख भाग

सशक्त नारी, समृद्ध किसान, जनजातीय कल्याण, उत्तम शिक्षा एवं सक्षम युवा, सबका साथ-सबका विकास, सुदृढ़ आधारभूत संरचना, स्वस्थ प्रदेश, प्रगतिशील अर्थव्यवस्था और औद्योगिक विकास, सुशासन एवं कानून व्यवस्था, सांस्कृतिक धरोहर एवं विकसित पर्यटन शामिल हैं। यह संकल्प पत्र ही सरकार का अगले पांच साल का विजन डाक्यूमेंट है। ▪

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना में 69 प्रतिशत ऋण महिलाओं को

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) के तहत 24.11.2023 तक स्वीकृत कुल 44.46 करोड़ ऋणों में से 30.64 करोड़ (69 प्रतिशत) महिलाओं को स्वीकृत किए गए हैं। इसके अलावा, स्टैंड-अप इंडिया (एसयूपीआई) के तहत, 24.11.2023 तक स्वीकृत 2.09 लाख ऋणों में से 1.77 लाख (84 प्रतिशत) महिला उद्यमियों को स्वीकृत किए गए हैं।

ऋण तक बेहतर पहुंच का असर समाज के विभिन्न वर्गों के सामाजिक-आर्थिक विकास पर पड़ता है। लघु/सूक्ष्म उद्यमों को आय सृजन गतिविधियों के लिए बिना कुछ गिरवी रखे संस्थागत ऋण प्रदान करने हेतु 08.04.2015 को पीएमएमवाई आरंभ की गई थी। एसयूपीआई योजना महिलाओं और एससी/ एसटी के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए ग्रीन फील्ड उद्यमों की स्थापना हेतु ऋण प्रदान करने के लिए 05.04.2016 को शुरू की गई थी। इन योजनाओं का प्रमुख लक्ष्य महिलाओं का उत्थान रहा है।

पीएमएमवाई के माध्यम से मिलने वाले सूक्ष्म ऋण ने महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित किया, उनकी कमाई और रोजगार क्षमता को बढ़ाया और इस तरह उन्हें वित्तीय, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से सशक्त बनाया। कम से कम एक ऋण महिलाओं और एक ऋण एससी/ एसटी उद्यमियों को प्रदान करने का लक्ष्य आवंटित करके, एसयूपीआई ने ऋण प्रदान करने वालों को महिला उद्यमियों को ग्रीन-फील्ड परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए प्रोत्साहित किया, जो महिलाओं और महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों के बीच उद्यमशीलता को बढ़ावा देने में बहुत सफल रहेगा।

उपरोक्त के अलावा, वित्त मंत्रालय द्वारा बैंकों और वित्तीय संस्थानों के माध्यम से देश भर में निम्नलिखित प्रमुख योजनाएं भी कार्यान्वित की जा रही हैं-

- **पीएम स्वनिधि** को 1 जून, 2020 को स्ट्रीट वेंडरों को बिना कुछ गिरवी रखे तीन किश्तों यानी पहली किश्त में 10,000 रुपये तक, दूसरी किश्त में 20,000 रुपये तक, तीसरी किश्त में 50,000 रुपये तक ऋण प्रदान करने के लिए लॉन्च किया गया था।
- **पीएम विश्वकर्मा** को 17 सितंबर, 2023 को लॉन्च किया गया था। इस योजना का उद्देश्य 18 चिन्हित शिल्पों में संलग्न पारंपरिक कलाकारों और शिल्पकारों को कौशल प्रशिक्षण, बिना कुछ गिरवी रखे ऋण, आधुनिक उपकरण तक पहुंच, बाजार लिंकेज समर्थन और डिजिटल लेनदेन के लिए प्रोत्साहन के माध्यम से अद्योपांत समग्र सहायता प्रदान करना है।
- **स्वयं सहायता समूह-** बैंक लिंकेज कार्यक्रम (एसएचजी-बीएलपी) ने बचत करने, उधार लेने और सामाजिक पूंजी बनाने में महिलाओं की मदद करके उनके जीवन को बेहतर बनाया है।
- **नाबार्ड का सूक्ष्म उद्यम विकास कार्यक्रम (एमईडीपी)-** नाबार्ड पूर्णतया विकसित ऐसे एसएचजी, जिनको पहले से ही बैंकों की वित्तीय सेवाओं तक पहुंच प्राप्त है, को आवश्यकता-आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों (एमईडीपी) में सहायता कर रहा है ।
- **आजीविका और उद्यम विकास कार्यक्रम (एलईडीपी)-** 2015 में शुरू हुआ एलईडीपी समूहों में आजीविका संवर्धन कार्यक्रमों के संचालन की परिकल्पना करता है। यह कृषि और गैर कृषि गतिविधियों में आजीविका के सृजन को बढ़ावा देता है और दो ऋण चक्रों में गहन कौशल निर्माण, पुनश्चर्या प्रशिक्षण, बैकवर्ड-फॉरवर्ड लिंकेज, मूल्य श्रृंखला प्रबंधन, एंड-टू-एंड सॉल्यूशन और मार्गदर्शन तथा एस्कॉर्ट सेवाओं में सहायता प्रदान करता है।
- **प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई)-** पीएमजेडीवाई योजना अगस्त, 2014 में बैंकिंग सेवाओं से वंचित प्रत्येक वयस्क को सार्वभौमिक बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के लिए शुरू की गई थी। यह योजना निःशुल्क और न्यूनतम शेष राशि रखने की आवश्यकता के बिना बैंक खाता खोलने की सुविधा प्रदान करती है। जन धन खाते खोलने से समाज के असंगठित वर्गों के बीच विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के कवरेज में सुविधा हुई है, जिनमें अन्य के अलावा निम्नलिखित योजनाएं शामिल हैं-
- **प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएमजेजेबीवाई)** 18 से 50 वर्ष की आयु के ऐसे सभी बैंक/ डाकघर खाताधारकों को, जो इस योजना से जुड़ते हैं, प्रति ग्राहक प्रति वर्ष 436/- रुपये के प्रीमियम पर दो लाख रुपये का एक वर्ष का जीवन कवर प्रदान करती है, जिसमें किसी भी कारण से मृत्यु शामिल है, और यह नवीकरणीय है।
- **प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई)** 18 से 70 वर्ष की आयु के ऐसे सभी बैंक/ डाकघर खाताधारकों के लिए उपलब्ध है, जो इस योजना से जुड़ने/ अपने खाते से ऑटो-डेबिट के लिए सहमति देते हैं। योजना के तहत 20 प्रति वर्ष के प्रीमियम पर जोखिम कवरेज दुर्घटना मृत्यु या पूर्ण स्थायी विकलांगता के मामले में 2 लाख रुपये, दुर्घटना के कारण आंशिक स्थायी विकलांगता के लिए 1 लाख रुपये है।
- **अटल पेंशन योजना (एपीवाई)** 60 वर्ष की आयु होने के बाद ग्राहकों को 1,000 रुपये से 5,000 रुपये प्रति माह के बीच न्यूनतम मासिक पेंशन की गारंटी देती है। ▪

अंतरिक्ष भारत की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक बनता जा रहा है

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा अंतरिक्ष क्षेत्र में सुधार शुरू करने के बाद से भारत में अंतरिक्ष क्षेत्र के स्टार्टअप्स की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

लगभग चार वर्षों की छोटी सी अवधि में, स्पेस स्टार्टअप्स की संख्या मात्र एक अंक से बढ़कर 1180 से अधिक हो गई है, जबकि पहले वाले कुछ आकर्षक उद्यमियों में परिवर्तित हो गए हैं।

"आज भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था 8 बिलियन डॉलर की है, लेकिन अनुमान है कि 2040 तक यह कई गुना बढ़ जाएगी। कुछ अंतरराष्ट्रीय पर्यवेक्षकों के अनुसार, 2040 तक 100 बिलियन डॉलर की क्षमता हो सकती है।''

इसरो ने अब तक 430 से अधिक विदेशी उपग्रह लॉन्च किए हैं, यूरोपीय उपग्रहों से 290 मिलियन यूरो से अधिक और अमेरिकी उपग्रहों को लॉन्च करके 170 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक की कमाई की है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा अंतरिक्ष क्षेत्र में सुधार शुरू करने के बाद से भारत में अंतरिक्ष क्षेत्र के स्टार्टअप्स की संख्या तेजी से बढ़ रही है। लगभग चार वर्षों की छोटी सी अवधि में, स्पेस स्टार्टअप्स की संख्या मात्र एक अंक से बढ़कर 1180 से अधिक हो गई है, जबकि पहले वाले कुछ आकर्षक उद्यमियों में परिवर्तित हो गए हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अंतरिक्ष क्षेत्र को सार्वजनिक-निजी भागीदारी के लिए खोलकर अतीत की वर्जनाओं को तोड़ दिया है।

भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र को ''अनलॉक'' करके और एक सक्षम वातावरण प्रदान करके भारत के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों को अपने संस्थापक विक्रम साराभाई के सपने को साकार करने में सक्षम बनाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी को पूरा श्रेय है, जिसमें भारत की विशाल क्षमता और प्रतिभा को एक आउटलेट मिल सके और बाकी दुनिया के सामने खुद को साबित किया जा सके।

डॉ. विक्रम साराभाई ने हमेशा इसरो पर ''राष्ट्रीय स्तर पर'' सार्थक भूमिका निभाने पर जोर दिया और कहा कि यह एक पुष्टि है कि सरकार के नौ वर्षों के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने भारत की युवा प्रतिभा, जो खोजे जाने का इंतजार कर रही थी, को नये पंख दिये।

''भारत में हमेशा से ही विशाल प्रतिभा पूल और बड़े सपने देखने का जुनून था, लेकिन आखिरकार यह प्रधानमंत्री मोदी ही थे जिन्होंने उन्हें एक आदर्श मौका दिया।''

भारत के अंतरिक्ष मिशन मानव संसाधनों और कौशल पर आधारित हैं और लागत प्रभावी होने के लिए डिजाइन किए गए हैं।

''रूसी चंद्रमा मिशन, जो असफल रहा था, उसकी लागत 16,000 करोड़ रुपये थी, और हमारे (चंद्रयान-3) मिशन की लागत लगभग 600 करोड़ रुपये थी।''

''हमारा मस्तिष्क संसाधन हमारी वित्त सामग्री और संसाधन से कहीं अधिक है।''

प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में पिछले नौ वर्षों में, खासकर पिछले चार वर्षों में भारत के अंतरिक्ष मिशनों ने तेजी से प्रगति की है और दुनिया भर में इसकी सराहना की जा रही है।

भले ही संयुक्त राज्य अमेरिका और तत्कालीन सोवियत संघ ने हमसे बहुत पहले ही अपनी अंतरिक्ष यात्रा शुरू कर दी थी और अमेरिका ने 1969 में चंद्रमा की सतह पर एक इंसान को भी उतारा था, फिर भी यह हमारा चंद्रयान ही था जो चंद्रमा की सतह पर पानी के सबूत लेकर आया था।

भारत की अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी वस्तुतः हर व्यक्ति के जीवन को छू रही है, जिसमें आपदा प्रबंधन, स्वामित्व, पीएम गति शक्ति, रेलवे, राजमार्ग और स्मार्ट शहर, कृषि, जल मानचित्रण, टेलीमेडिसिन और रोबोटिक शल्य चिकित्सा जैसे बुनियादी ढांचे के विभिन्न क्षेत्रों में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है।

महिलाएं भारत की अंतरिक्ष परियोजनाओं का नेतृत्व कर रही हैं।

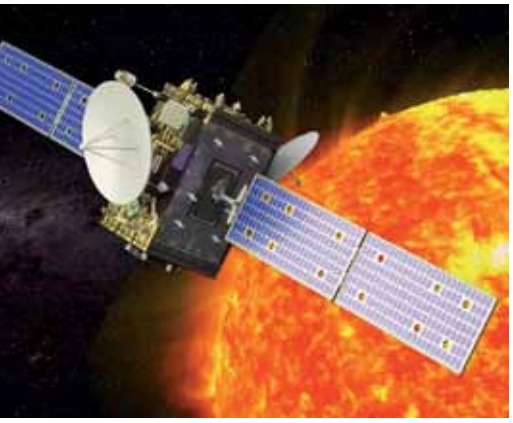

भारत का पहला मानव रहित 'गगनयान' मिशन प्रारंभिक परीक्षणों की एक श्रृंखला से गुजर रहा है।

'मानव युक्त गगनयान मिशन से पहले एक परीक्षण उड़ान होगी, जिसमें महिला रोबोट अंतरिक्ष यात्री ''व्योममित्र'' को ले जाया जाएगा।'

इसरो की गगनयान परियोजना में मानव दल को 400 किमी की कक्षा में लॉन्च करके और भारतीय समुद्री जल में उतरकर उन्हें सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस लाकर मानव अंतरिक्ष उड़ान क्षमता का प्रदर्शन करने की परिकल्पना की गई है।

अगर एक भारतीय लगभग उसी समय बाहरी अंतरिक्ष की यात्रा करता है, जब कोई अन्य भारतीय 5 किलोमीटर नीचे गहरे समुद्र की खोज करता है, तो यह महज एक संयोग हो सकता है। ▪

सुशासन और गुड गवर्नेंस की शुरुआत अटल जी ने की

देश की राजनीति में पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी सर्वमान्य नेता रहे हैं, जिन्हें पक्ष भी पसंद करता था और विपक्ष भी। हमें उनके साथ काम करने का मौका तो नहीं मिला, लेकिन जिन्होंने उनके साथ काम किया हम उनसे मिलकर सीखते हैं कि राजनीति में सुचिता के साथ कैसे काम किया जा सकता है। देश के अंदर सत्ता में रहते हुए सुशासन और गुड गर्वेनेंस को जमीन पर अगर किसी ने उतारा तो वह पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी थे। आज देशभर में 12 राज्यों में भाजपा की सरकारें हैं, वहां सुशासन और गुड गर्वेनेंस को ध्यान रखकर काम किया जा रहा है।

अटल जी के सपनों को साकार कर रहे प्रधानमंत्री मोदी जी

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के सपनों और संकल्प को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने पूरा किया और कश्मीर से धारा 370 हटाई। गांव-गांव सड़कों का जाल बिछाने की शुरुआत अटल जी ने की थी। अब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है।

अटल जी ने कहा था एक दिन कमल खिलेगा

भारतीय जनता पार्टी के अधिवेशन में पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था कि एक दिन देश भर में कमल खिलेगा। आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी देश का नवनिर्माण कर रहे हैं। देश का मान-सम्मान दुनिया में बढ़ा रहे हैं।

बुंदेलखंड का सपना भी साकार हो रहा

बुंदेलखंड में पानी की कमी को लेकर समस्या रहती थी, लेकिन अब 44 हजार करोड़ से ज्यादा की केन-बेतवा लिंक परियोजना के माध्यम से काम किया जा रहा है। इस योजना का लाभ मध्यप्रदेश ही नहीं, बल्कि उत्तरप्रदेश के किसानों को भी मिलेगा। हर घर में नल से जल पहुंचाने के लिए भी सरकार काम कर रही है। ▪

भारत का Innovation Hub बनना, इस बात का प्रतीक है कि हम रुकने वाले नहीं...

2015 में हम Global Innovation Index में 81वें rank पर थे - आज हमारी rank 40 है।

'मन की बात' यानि आपके साथ मिलने का एक शुभ अवसर, और अपने परिवारजनों के साथ जब मिलते हैं, तो वो, कितना सुखद होता है, कितना संतोषदायी होता है। 'मन की बात' के द्वारा आपसे मिलकर, मैं, यही अनुभूति करता हूँ, और आज तो, हमारी साझा यात्रा का ये 108 वाँ एपिसोड है। हमारे यहाँ 108 अंक का महत्व, उसकी पवित्रता, एक गहन अध्ययन का विषय है। माला में 108 मनके, 108 बार जप, 108 दिव्य क्षेत्र, मंदिरों में 108 सीढ़ियाँ, 108 घंटियाँ, 108 का ये अंक असीम आस्था से जुड़ा हुआ है। इसलिए 'मन की बात' का 108 वाँ episode मेरे लिए और खास हो गया है। इन 108 episode में हमने जनभागीदारी के कितने ही उदाहरण देखे हैं, उनसे प्रेरणा पाई है। अब इस पड़ाव पर पहुँचने के बाद, हमें नए सिरे से, नई ऊर्जा के साथ और तेज गति से, बढ़ने का, संकल्प लेना है।

'मन की बात' सुनने वाले कई लोगों ने मुझे पत्र लिखकर अपने यादगार पल साझा किए हैं। ये 140 करोड़ भारतीयों की ताकत है, कि इस वर्ष, हमारे देश ने, कई विशेष उपलब्धियाँ हासिल की हैं। इसी साल 'नारी शक्तिवंदन अधिनियम' पास हुआ, जिसकी प्रतीक्षा बरसों से थी। बहुत सारे लोगों ने पत्र लिखकर, भारत के 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने पर, खुशी जाहिर की। अनेक लोगों ने मुझे G20 Summit की सफलता याद दिलाई।

आज भारत का कोना-कोना, आत्मविश्वास से भरा हुआ है, विकसित भारत की भावना से, आत्मनिर्भरता की भावना से, ओत-प्रोत है। 2024 में भी हमें इसी भावना और momentum को बनाए रखना है। दिवाली पर record कारोबार ने ये साबित किया कि हर भारतीय 'Vocal For Local' के मंत्र को महत्व दे रहा है।

आज भी कई लोग मुझे चंद्रयान-3 की सफलता को लेकर सन्देश भेजते रहे हैं। मुझे विश्वास है कि मेरी तरह, आप भी, हमारे वैज्ञानिकों और विशेषकर महिला वैज्ञानिकों को लेकर गर्व का अनुभव करते होंगे।

"मन की बात" के द्वारा आपसे मिलकर, मैं, यही अनुभूति करता हूँ, और आज तो, हमारी साझा यात्रा का ये 108 वाँ एपिसोड है। हमारे यहाँ 108 अंक का महत्व, उसकी पवित्रता, एक गहन अध्ययन का विषय है।

माला में 108 मनके, 108 बार जप, 108 दिव्य क्षेत्र, मंदिरों में 108 सीढ़ियाँ, 108 घंटियाँ, 108 का ये अंक असीम आस्था से जुड़ा हुआ है। इसलिए "मन की बात" का 108 वाँ episode मेरे लिए और खास हो गया है।

जब नाटू-नाटू को Oscar मिला तो पूरा देश खुशी से झूम उठा। 'The Elephant Whisperers' को सम्मान की बात जब सुनी तो कौन खुश नहीं हुआ। इनके माध्यम से दुनिया ने भारत की creativity को देखा और पर्यावरण के साथ हमारे जुड़ाव को समझा। इस साल sports में भी हमारे एथलीटों ने जबरदस्त प्रदर्शन किया। Asian Games में हमारे खिलाड़ियों ने 107 और Asian Para Games में 111 medal जीते। Cricket World Cup में भारतीय खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन से सबका दिल जीत लिया। Under-19 T-20 World Cup में हमारी महिला क्रिकेट टीम की जीत बहुत प्रेरित करने वाली है। कई खेलों में खिलाड़ियों की उपलब्धियों ने देश का नाम बढ़ाया। अब 2024 में Paris Olympic का आयोजन होगा, जिसके लिए पूरा देश अपने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ा रहा है।

जब भी हमने मिलकर प्रयास किया, हमारे देश की विकास यात्रा पर बहुत सकारात्मक प्रभाव हुआ। हमने 'आजादी का अमृत महोत्सव' और 'मेरी माटी मेरा देश' ऐसे सफल अभियान का अनुभव किया। इसमें करोड़ों

लोगों की भागीदारी के हम सब साक्षी हैं। 70 हजार अमृत सरोवरों का निर्माण भी हमारी सामूहिक उपलब्धि है।

मेरा ये विश्वास रहा है कि जो देश Innovation को महत्व नहीं देता, उसका विकास रुक जाता है। भारत का Innovation Hub बनना, इस बात का प्रतीक है कि हम रुकने वाले नहीं हैं। 2015 में हम Global Innovation Index में 81वें rank पर थे - आज हमारी rank 40 है। इस वर्ष भारत में फाइल होने वाले patents की संख्या ज्यादा रही है, जिसमें करीब 60 प्रतिशत domestic funds के थे। QS Asia University Ranking में इस बार सबसे अधिक संख्या में भारतीय university शामिल हुई है। अगर इन उपलब्धियों की list बनाना शुरू करें तो ये कभी पूरी ही नहीं होगी। ये तो सिर्फ झलक है, भारत का सामर्थ्य कितना प्रभावी है - हमें देश की इन सफलताओं से, देश के लोगों की इन उपलब्धियों से, प्रेरणा लेनी है, गर्व करना है, नए संकल्प लेने हैं।

हमने अभी भारत को लेकर हर तरफ जो आशा और उत्साह है उसकी चर्चा की - ये आशा और उम्मीद बहुत अच्छी है। जब भारत विकसित होगा तो इसका सबसे अधिक लाभ युवाओं को ही होगा। लेकिन युवाओं को इसका लाभ तब और ज्यादा मिलेगा, जब वो Fit होंगे। आजकल हम देखते हैं कि Lifestyle related Diseases के बारे में कितनी बातें होती हैं, यह हम सभी के लिए, खासकर युवाओं के लिए, ज्यादा चिंता की बात है। इस 'मन की बात' के लिए मैंने आप सभी से Fit India से जुड़े Input भेजने का आग्रह किया था। आप लोगों ने जो Response दिया, उसने मुझे उत्साह से भर दिया है। NaMo App पर बड़ी संख्या में मुझे Startups ने भी अपने सुझाव भेजे हैं, उन्होंने, अपने कई तरह के अनूठे प्रयासों की चर्चा की है।

भारत के प्रयास से 2023 को International Year of Millets के रूप में मनाया गया। इससे इस क्षेत्र में काम करने वाले Startups को बहुत सारे अवसर मिले हैं, इनमें, लखनऊ से शुरू हुए 'कीरोज फूड्स' प्रयागराज के 'Grand-Maa Millets' और 'Nutraceutical Rich Organic India' जैसे कई Start-up शामिल हैं। 'Alpino Health Foods' 'Arboreal' और 'Keeros Food' से जुड़े युवा healthy food के options को लेकर नए-नए Innovation भी कर रहे हैं। बेंगलुरु के Unbox Health से जुड़े युवाओं ने ये भी बताया है, कि कैसे, वे, लोगों को उनकी पसंदीदा Diet चुनने में मदद कर रहे हैं। Physical Health को लेकर दिलचस्पी जिस तरह से बढ़ रही है, उससे इस क्षेत्र से जुड़े Coaches और Trainers की Demand भी बढ़ रही है। ''JOGO technologies'' जैसे Startups इस मांग को पूरा करने में मदद कर रहे हैं।

आज Physical Health और well-being की चर्चा तो खूब होती है, लेकिन इससे जुड़ा एक और बड़ा पहलू है Mental Health का। मुझे यह जानकार बहुत खुशी हुई है कि मुंबई के ''इन्फी-हील'', और ''YourDost'' जैसे Startups, Mental Health और Well-being को Improve करने के लिए काम कर रहे हैं। इतना ही नहीं, आज इसके लिए Artificial Intelligence जैसी Technology का इस्तेमाल भी किया जा रहा है।

मैं यहाँ कुछ ही Startups का नाम ले सकता हूँ, क्योंकि, List बहुत लम्बी है। मैं आप सभी से आग्रह करूँगा कि Fit India के सपने को साकार करने की दिशा में innovative Health care Startups के बारे में मुझे जरुर लिखते रहें। मैं आपके साथ Physical और Mental Health के बारे में बात करने वाले जाने-माने लोगों के अनुभव भी साझा करना चाहता हूँ।

ये पहला Message सद्गुरु जग्गी वासुदेव जी का है।

ये Fitness, विशेष रूप से Fitness of the Mind, यानी, मानसिक स्वास्थ्य को लेकर अपने विचार साझा करेंगे।

इस मन की बात में मन के स्वास्थ्य पर बात करना हमारा सौभाग्य है। Mental illnesses and how we keep our neurological system are very directly related. How alert static free and disturbance free we keep neurological system will decide how pleasant we feel within ourselves? What we call as peace, love, joy, blissfulness, agony, depression, ecstasies all have a chemical and neurological basis. Pharmacology is essentially trying to fix the chemical imbalance within the body by adding chemicals from outside. Mental illnesses are being managed this way but we must realise that taking chemicals from outside in the form of medications is necessary when one is in extreme situation. Working for an internal mental health situation or working for an equanimous chemistry within ourselves, a chemistry of peacefulness, joyfulness, blissfulness is something that has to be brought into every individual's life into the cultural life of a society and the Nations around the world and the entire humanity. It's very important we understand our mental health, our sanity is a fragile privilege- we must protect it, we must nurture it. For this, there are many levels of practices in the Yogik system completely internalize processes that people can do as simple practices with which they can bring certain equanimity to their chemistry and certain calmness to their neurological system. The technologies of inner wellbeing are what we call as the Yogik sciences. Let's make it happen.

सामान्य तौर पर सद्गुरु जी ऐसे ही बेहतरीन तरीके से अपनी बातों को सामने रखने के लिए जाने जाते हैं।

आइए, अब हम जानी-मानी Cricket खिलाड़ी हरमनप्रीत कौर जी को सुनते हैं।

मैं अपने देशवासियों को 'मन की बात' के माध्यम से कुछ कहना चाहती हूं। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के fit India की पहल मुझे अपने fitness मंत्र आप सभी के साथ share करने के लिए प्रोत्साहित किया है। आप सभी को मेरा पहला suggestion यही है 'one cannot out-train a bad diet'. इसका अर्थ ये है कि आप कब खाते हो और क्या खाते हो इसके बारे में आपको बहुत सावधान रहना होगा। हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने सभी को बाजरा खाने के लिए encourage किया है। जो की immunity बढ़ाता है और टिकाऊ खेती करने में सहायता करता है और पचाने में भी आसान है। regular exercise और 7 घंटे की पूरी नींद body के लिए बहुत जरूरी है और fit रहने के लिए मदद करती है। इसके लिए बहुत discipline and consistency की जरुरत होगी। जब आपको इसका result मिलने लग जाएगा तो आप daily खुद ही exercise करना start कर दोगे। मुझे आप सबसे बात करने और अपना

fitness मंत्र share करने का अवसर देने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी का बहुत धन्यवाद।

हरमनप्रीत जी जैसी प्रतिभाशाली खिलाड़ी की बातें, निश्चित रूप से, आप सभी को प्रेरित करेंगी।

आइए, Grandmaster विश्वनाथन आनंद जी को सुनें। हम सभी जानते हैं कि उनके खेल 'शतरंज' के लिए Mental Fitnessका कितना महत्व है।

Namaste, I am Vishwanathan Anand you have seen me play Chess and very often I am asked, what is your fitness routine? Now Chess requires a lot of focus and patience, so I do the following which keeps me fit and agile. I do yoga two times a week, I do cardio two times a week and two times a week, I focus on flexibility, stretching, weight training and I tend to take one day off per week. All of these are very important for chess. You need to have the stamina to last 6 or 7 hours of intense mental effort, but you also need to be flexible to able to sit comfortably and the ability to regulate your breath to calm down is helpful when you want to focus on some problem, which is usually a Chess game. My fitness tip to all 'Mann Ki Baat' listeners would be to keep calm and focus on the task ahead. The best fitness tip for me absolutely the most important fitness tip is to get a good night sleep. Do not start sleeping for four and five hours a night, I think seven or eight is a absolute minimum so we should try as hard as possible to get good night sleep, because that is when the next day you are able to get through the day in calm fashion. You don't make impulsive decisions, you are in control of your emotions. For me sleep is the most important fitness tip.

आइए, अब अक्षय कुमार जी को सुनते हैं।

नमस्कार, मैं हूं अक्षय कुमार सबसे पहले तो मैं हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री जी का बहुत शुक्रिया करता हूं कि उनके 'मन की बात' में मुझे भी अपने 'मन की बात' आपको कह पाने का एक छोटा सा मौका मिला। आप लोग जानते हैं कि मैं fitness के लिए जितना passionate हूं उससे भी कई ज्यादा passionate हूं natural तरीके से fit रहने के लिए। मुझे ना ये fancy gym से ज्यादा पसंद है बाहर swimming करना, badminton खेलना, सीढ़ियाँ चढ़ना, मुग्दर से कसरत करना, अच्छा हेल्दी खाना, जैसे मेरा यह मानना है कि शुद्ध घी अगर सही मात्रा में खाया जाए तो हमें फायदा करता है। लेकिन मैं देखता हूं कि बहुत से young लड़के लड़कियां इस वजह से घी नहीं खाते कि कही वो मोटे ना हो जाए। बहुत जरूरी है कि हम यह समझे कि क्या हमारी fitness के लिए अच्छा है और क्या बुरा है। Doctors की सलाह से आप अपना lifestyle बदलो ना कि किसी फिल्म स्टार की body देखकर। Actor screen पर जैसे दिखते हैं वैसे तो कई बार होते भी नहीं हैं। कई तरह के filter और special effects use होते हैं और हम उसे देखकर अपने शरीर को बदलने के लिए गलत तरीके shortcut का इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं। आजकल इतने सारे लोग steroid लेकर यह six pack eight pack इसके लिए चल पड़ते हैं। यार ऐसे shortcut से body ऊपर से फूल जाती है लेकिन अंदर से खोखली रह जाती है। आप लोग याद रखिएगा की shortcut can cut your life short। आपको shortcut नहीं long lasting fitness चाहिए। दोस्तों fitness एक तरह की तपस्या हैं। Instant coffee या दो मिनट का noodles नहीं हैं। इस नए साल में अपने आप से वादा करो no chemicals, no shortcut कसरत, योग, अच्छा खाना, वक्त पर सोना, थोड़ा meditation और सबसे जरूरी, जैसे आप दिखते हो ना, उसे खुशी से except करो। आज के बाद filter वाली life नहीं, fitter वाली life जियो। take care. जय महाकाल।

इस Sector में कई और Start-ups हैं, इसलिए मैंने सोचा कि एक युवा Start-up Founder से भी चर्चा की जाए, जो इस क्षेत्र में

बेहतरीन काम कर रहे हैं।

नमस्कार, मेरा नाम ऋषभ मल्होत्रा है और मैं बेंगलुरु का रहने वाला हूं। मुझे यह जानकर बेहद खुशी हुई कि 'मन की बात' में fitness पर चर्चा हो रही है। मैं खुद fitness की दुनिया से belong करता हूं और बेंगलुरु में हमारा एक start-up है जिसका नाम है 'तगड़ा रहो'। हमारा start-up भारत के पारंपरिक व्यायाम को आगे लाने के लिए बनाया गया है। भारत के पारंपरिक व्यायाम में एक बहुत ही अद्भुत व्यायाम है जो है 'गदा व्यायाम' और हमारा पूरा focus गदा और मुग्दर व्यायाम पर ही है। लोगों को जानकर आश्चर्य होता है कि आप गदा से सारी training कैसे कर लेते हैं। मैं यह बताना चाहूंगा कि गदा व्यायाम हजारों साल पुराना व्यायाम है और ये हजारों सालों से भारत में चलता आ रहा है। आपने इसे छोटे बड़े अखाड़ों में देखा होगा और हमारे start-up के माध्यम से हम इसे एक आधुनिक form में वापस लेकर आए हैं। हमें पूरे देश से बहुत प्यार मिला है बहुत अच्छा response मिला है। 'मन की बात' के माध्यम से मैं यह बताना चाहूंगा कि इसके अलावा भी भारत में बहुत से ऐसे प्राचीन व्यायाम है health और fitness से related विधि है, जो हमें अपनानी चाहिए और दुनिया में आगे भी सिखानी चाहिए। मैं fitness की दुनिया से हूँ तो आपको एक personal tip

देना चाहूँगा। गदा व्यायाम से आप अपना बल, अपनी ताकत, अपना posture और अपनी breathing को भी ठीक कर सकते हैं, तो, गदा व्यायाम को अपनाए और इसे आगे बढ़ाएं। जय हिंद।

हर किसी ने अपने विचार रखे हैं लेकिन सबका एक ही मंत्र है - 'Healthy रहें Fit रहें'। 2024 की शुरुआत करने के लिए आपके पास अपनी Fitness से बड़ा संकल्प और क्या होगा।

कुछ दिन पहले काशी में एक Experiment हुआ था, जिसे मैं 'मन की बात' के श्रोताओं को जरुर बताना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि काशी-तमिल संगमम में हिस्सा लेने के लिए हजारों लोग तमिलनाडु से काशी पहुंचे थे। वहां मैंने उन लोगों से संवाद के लिए Artificial Intelligence AI Tool भाषिणी का सार्वजनिक रूप से पहली बार उपयोग किया। मैं मंच से हिंदी में संबोधन कर रहा था लेकिन AI Tool भाषिणी की वजह से वहां मौजूद तमिलनाडु के लोगों को मेरा वही संबोधन उसी समय तमिल भाषा में सुनाई दे रहा था। काशी-तमिल संगमम में आए लोग इस प्रयोग से बहुत उत्साहित दिखे। वो दिन दूर नहीं जब किसी एक भाषा में संबोधन हुआ करेगा और जनता Real Time में उसी भाषण को अपनी भाषा में सुना करेगी। ऐसा ही फिल्मों के साथ भी होगा जब जनता सिनेमा हॉल में AI की मदद से Real Time Translation सुना करेगी। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि जब ये Technology हमारे स्कूलों, हमारे अस्पतालों, हमारी अदालतों में व्यापक रूप से इस्तेमाल होने लगेगी, तो कितना बड़ा परिवर्तन आएगा। मैं आज की युवा-पीढ़ी से आग्रह करूँगा कि Real Time Translation से जुड़े AI Tools को और Explore करें, उन्हें 100 प्रतिशत Full Proof बनाएं।

बदलते हुए समय में हमें अपनी भाषाएँ बचानी भी हैं और उनका संवर्धन भी करना है। अब मैं आपको झारखंड के एक आदिवासी गांव के बारे में बताना चाहता हूँ। इस गांव ने अपने बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा देने के लिए एक अनूठी पहल की है। गढ़वा जिले के मंगलो गांव में बच्चों को कुडुख भाषा में शिक्षा दी जा रही है। इस स्कूल का नाम है, 'कार्तिक उराँव आदिवासी कुडुख स्कूल'। इस स्कूल में 300 आदिवासी बच्चे पढ़ते हैं। कुडुख भाषा, उरांव आदिवासी समुदाय की मातृभाषा है। कुडुख भाषा की अपनी लिपि भी है, जिसे 'तोलंग सिकी' नाम से जाना जाता है। ये भाषा धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थी, जिसे बचाने के लिए इस समुदाय ने अपनी भाषा में बच्चों को शिक्षा देने का फैसला किया है। इस स्कूल को शुरु करने वाले अरविन्द उरांव कहते हैं कि आदिवासी बच्चों को अंग्रेजी भाषा में दिक्कत आती थी इसलिए उन्होंने गांव के बच्चों को अपनी मातृभाषा में पढ़ाना शुरू कर दिया। उनके इस प्रयास से बेहतर परिणाम मिलने लगे तो गांव वाले भी उनके साथ जुड़ गए। अपनी भाषा में पढ़ाई की वजह से बच्चों के सीखने की गति भी तेज हो गई। हमारे देश में कई बच्चे भाषा की मुश्किलों की वजह से पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते थे। ऐसी परेशानियों को दूर करने में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति से भी मदद मिल रही है। हमारा प्रयास है कि भाषा, किसी भी बच्चे की शिक्षा और प्रगति में बाधा नहीं बननी चाहिए।

हमारी भारतभूमि को हर कालखंड में देश की विलक्षण बेटियों ने गौरव से भर दिया है। सावित्रीबाई फुले जी और रानी वेलु नाचियार जी देश की ऐसी ही दो विभूतियाँ हैं। उनका व्यक्तित्व ऐसे प्रकाश स्तम्भ की तरह है, जो हर युग में नारी शक्ति को आगे बढ़ाने का मार्ग दिखाता रहेगा। आज से कुछ ही दिनों बाद, 3 जनवरी को हम सभी इन दोनों की जन्म-जयंती मनाएंगे। सावित्रीबाई फुले जी का नाम आते ही सबसे पहले शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में उनका योगदान हमारे सामने आता है। वे हमेशा महिलाओं और वंचितों की शिक्षा के लिए जोरदार तरीके से आवाज उठाती रहीं। वे अपने समय से बहुत आगे थीं और उन गलत प्रथाओं के विरोध में हमेशा मुखर रहीं। शिक्षा से समाज के सशक्तिकरण पर उनका गहरा विश्वास था। महात्मा फुले जी के साथ मिलकर उन्होंने बेटियों के लिए कई स्कूल शुरू किए। उनकी कवितायें लोगों में जागरूकता बढ़ाने और आत्मविश्वास भरने वाली होती थीं। लोगों से हमेशा उनका यह आग्रह रहा कि वे जरुरत में एक-दूसरे की मदद करें और प्रकृति के साथ भी समरसता से रहें। वे कितनी दयालु थीं, इसे शब्दों में नहीं समेटा जा सकता। जब महाराष्ट्र में अकाल पड़ा तो सावित्रीबाई और महात्मा फुले ने जरुरतमंदों की मदद के लिए अपने घरों के दरवाजे खोल दिए। सामाजिक न्याय का ऐसा उदाहरण विरले ही देखने को मिलता है। जब वहां प्लेग का भय व्याप्त था तो उन्होंने खुद को लोगों की सेवा में झोंक दिया। इस दौरान वे खुद इस बीमारी की चपेट में आ गईं। मानवता को समर्पित उनका जीवन आज भी हम सभी को प्रेरित कर रहा है।

विदेशी शासन के खिलाफ संघर्ष करने वाली देश की कई महान विभूतियों में से एक नाम रानी वेलु नाचियार का भी है। तमिलनाडु के मेरे भाई-बहन आज भी उन्हें वीरा मंगई यानि वीर नारी के नाम से याद करते हैं। अंग्रेजों के खिलाफ रानी वेलु नाचियार जिस बहादुरी से लड़ीं और जो पराक्रम दिखाया, वो बहुत ही प्रेरित करने वाला है। अंग्रेजों ने शिवगंगा साम्राज्य पर हमले के दौरान उनके पति की हत्या कर दी थी, जो वहां के राजा थे। रानी वेलु नाचियार और उनकी बेटी किसी तरह दुश्मनों से बच निकली थीं। वे संगठन बनाने और मरुदु Brothers यानि

अपने कमांडरों के साथ सेना तैयार करने में कई सालों तक जुटी रहीं। उन्होंने पूरी तैयारी के साथ अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध शुरू किया और बहुत ही हिम्मत और संकल्प-शक्ति के साथ लड़ाई लड़ी। रानी वेलु नाचियार का नाम उन लोगों में शामिल है जिन्होंने अपनी सेना में पहली बार All-Women Group बनाया था। मैं इन दोनों वीरांगनाओं को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ।

गुजरात में डायरा की परंपरा है। रात भर हजारों लोग डायरा में शामिल हो करके मनोरंजन के साथ ज्ञान को अर्जित करते हैं। इस डायरा में लोक संगीत, लोक साहित्य और हास्य की त्रिवेणी, हर किसी के मन को आनंद से भर देती है। इस डायरा के एक प्रसिद्ध कलाकार हैं भाई जगदीश त्रिवेदी जी।

हास्य कलाकार के रूप में भाई जगदीश त्रिवेदी जी ने 30 साल से भी ज्यादा समय से अपना प्रभाव जमा रखा है। हाल ही में भाई जगदीश त्रिवेदी जी का मुझे एक पत्र मिला और साथ में उन्होंने अपनी एक किताब भी भेजी है। किताब का नाम है – Social Audit of Social Service (सोशल ऑडिट ऑफ सोशल सर्विस)। ये किताब बड़ी अनूठी है। इसमें हिसाब किताब है, ये किताब एक तरह की Balance Sheet है। पिछले 6 सालों में भाई जगदीश त्रिवेदी जी को किस-किस कार्यक्रम से कितनी आय हुई और वो कहाँ-कहाँ खर्च हुआ, इसका पूरा लेखा-जोखा किताब में है। ये Balance Sheet इसलिए अनोखी है क्योंकि उन्होंने अपनी पूरी आय, एक-एक रुपया समाज के लिए - School, Hospital, Library, दिव्यांग जनों से

जुड़ी संस्थाओं, समाज सेवा में खर्च कर दिया - पूरे 6 साल का हिसाब है। जैसे किताब में एक स्थान पर लिखा है 2022 में उनको अपने कार्यक्रमों से आय हुई दो करोड़ पैंतीस लाख उन्यासी हजार छः सौ चौहत्तर रूपए। और उन्होंने School, Hospital, Library पर खर्च किये दो करोड़ पैंतीस लाख उन्यासी हजार छः सौ चौहत्तर रूपए। उन्होंने एक रुपया भी अपने पास नहीं रखा। दरअसल इसके पीछे भी एक दिलचस्प वाकया है। हुआ यूं कि एक बार भाई जगदीश त्रिवेदी जी ने कहा कि जब 2017 में वो 50 साल के हो जाएंगे तो उसके बाद उनके कार्यक्रमों से होने वाली आय को वो घर नहीं ले जाएंगे बल्कि समाज पर खर्च करेंगे।

2017 के बाद से अब तक, वो लगभग पौने नौ करोड़ रूपए अलग-अलग सामाजिक कार्यों पर खर्च कर चुके हैं। एक हास्य कलाकार, अपनी बातों से, हर किसी को हंसने के लिए मजबूर कर देता है। लेकिन वो भीतर, कितनी संवेदनाओं को जीता है, ये भाई जगदीश त्रिवेदी जी के जीवन से पता चलता है। आपको ये जानकर हैरानी होगी कि उनके पास PhD की तीन डिग्रियां भी हैं। वो 75 किताबें लिख चुके हैं, जिनमें से कई पुस्तकों को सम्मान भी मिला है। उन्हें सामाजिक कार्यों के लिए भी कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। मैं भाई जगदीश त्रिवेदी जी को उनके सामाजिक कार्यों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

अयोध्या में राम मंदिर को लेकर पूरे देश में उत्साह है, उमंग है। लोग अपनी भावनाओं को अलग अलग तरह से व्यक्त कर रहे हैं। आपने देखा होगा, बीते कुछ दिनों में श्री राम और अयोध्या को लेकर कई सारे नए गीत, नए भजन, बनाये गए हैं। बहुत से लोग नई कविताएं भी लिख रहे हैं। इसमें बड़े-बड़े अनुभवी कलाकार भी हैं तो नए उभरते युवा साथियों ने भी मन को मोह लेने वाले भजनों की रचना की है। कुछ गीतों और भजनों को तो मैंने भी अपने social media पर share किया है। ऐसा लगता है कि कला जगत अपनी अनूठी शैली में इस ऐतिहासिक क्षण का सहभागी बन रहा है। मेरे मन में एक बात आ रही है कि क्या हम सभी लोग ऐसी सारी रचनाओं को एक common hash tag के साथ share करें। मेरा आपसे अनुरोध है कि हैशटैग श्री राम भजन (#shriRamBhajan) के साथ आप अपनी रचनाओं को social media पर share करें। ये संकलन, भावों का, भक्ति का, ऐसा प्रवाह बनेगा जिसमें हर कोई राम-मय हो जाएगा।

भारत की उपलब्धियां, हर भारतवासी की उपलब्धि है। हमें पंच प्राणों का ध्यान रखते हुए भारत के विकास के लिए निरंतर जुटे रहना है। हम कोई भी काम करें, कोई भी फैसला लें, हमारी सबसे पहली कसौटी यही होनी चाहिए कि इससे देश को क्या मिलेगा, इससे देश का क्या लाभ होगा। राष्ट्र प्रथम - Nation First इससे बड़ा कोई मंत्र नहीं।

इसी मंत्र पर चलते हुए हम भारतीय, अपने देश को विकसित बनाएंगे, आत्मनिर्भर बनाएंगे। आप सभी 2024 में सफलताओं की नई ऊंचाई पर पहुंचे, आप सभी स्वस्थ रहें, fit रहें, खूब आनंद से रहें - मेरी यही प्रार्थना है। 2024 में हम फिर एक बार देश के लोगों की नई उपलब्धियों पर चर्चा करेंगे। ▪

गगन मे लहरता है भगवा हमारा

अटल बिहारी वाजपेयी

घिरे घोर घन दासता के भयंकर
गँवा बैठे सर्वस्व आपस में लड़कर
बुझे दीप घर-घर
हुआ शून्य अम्बर
निराशा निशा ने जो डेरा जमाया
ये जयचन्द के द्रोह का दुष्ट फल है
जो अब तक अँधेरा, सबेरा न आया।
मगर घोर तम में
पराजय के गम में
विजय की विभा ले
अँधेरे गगन में
उषा के वसन
दुश्मनों के नयन में
चमकता रहा पूज्य भगवा हमारा।
गगन मे लहरता है भगवा हमारा।

भगवा है पद्मिनि के जौहर की ज्वाला,
मिटाती अमावस
लुटाती उजाला
नया एक इतिहास क्या रच न डाला
चिता एक, जलने
हजारों खड़ी थीं
पुरुष तो मिटे,
नारियाँ सब हवन की
समिधि बन अनल के पगों पर चढ़ी थीं।
मगर जौहरों में,
घिरे कोहरों में
धुएँ के घनों में,
कि बलि के क्षणों में
धधकता रहा पूज्य भगवा हमारा।
गगन मे लहरता है भगवा हमारा।
मिटे देवता,
मिट गए शुभ्र मन्दिर
लुटी देवियाँ,
लुट गए सब नगर घर
स्वयं फूट की अग्नि में घर जलाकर
पुरस्कार हाथों में लोहे की कड़ियाँ
कपूतों की माता
खड़ी आज भी है
भरे अपनी आँखों में आँसू की लड़ियाँ।
मगर दासता के भयानक भँवर में पराजय समर में
अन्तिम क्षणों तक
शुभाशा बँधाता,
कि इच्छा जगाता
कि सब कुछ लुटाकर ही सब कुछ दिलाने
बुलाता रहा प्राण भगवा हमारा।
गगन मे लहरता है भगवा हमारा

कभी थे अकेले हुए आज इतने,
नही तब डरे तो भला अब डरेंगे?
विरोधों के सागर में
चट्टान हैं हम,
जो टकराएँगे
मौत अपनी मरेंगे।
लिया हाथ में ध्वज कभी न झुकेगा,
कदम बढ़ रहा है कभी न रुकेगा।
न सूरज के सम्मुख अँधेरा टिकेगा,
निडर हैं सभी हम
अमर हैं सभी हम।
के सर पर हमारे वरद हस्त करता,
गगन में लहरता है भगवा हमारा।

भारत को विश्वगुरु बनना है

सुबह की शांत वेला है। सदा की तरह मैं अपने भगवान् के साथ हूँ। मन को बेचैन करने वाले विचारों को बुझाने और ईश्वर के आगे दीये जलाने का प्रयास करती हूँ। आँखों के आगे धुँधलका घिर आता है। इस धुँधलके में देश को गलत दिशा में ले जाने वाले नेताओं की श्रृंखला उभरती है। पिछले दिनों उजागर हुए उच्च पदों पर आसीन, भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे हुए लोगों के चेहरे हैं। घोटाले ही घोटाले परदा उठ रहा है।

मन के बैचेन क्षण में ही वह शाश्वत पंक्ति कौंधती है 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।' लेकिन परिश्रम वाला फल की आशा न करे, यह बात मन को जँचती नहीं थी। पराभूतों का यह ध्येय वाक्य मेरे आहत मन को शांत नहीं कर पा रहा था। आखिर मैं एक कार्यकर्ता हूँ। हाड़मांस की बनी एक नारी हूँ। आजीवन मैंने फल की आशा रखी तो इसमें मैंने कुछ भी गलत नहीं किया। यह फल, यह सफलता मैंने केवल अपने लिए कब चाही थी। सौभाग्य से मुझे किसी बात की कोई कमी नहीं रही, मैं तो किसी और उद्देश्य के लिए लड़ रही थी। अपने सभी साथियों से कदम मिलाए मेरी सारी भागदौड़ और छटपटाहट केवल इसलिए थी कि दिग्भ्रमित शासकों द्वारा राष्ट्र व जनजीवन में तेजी के साथ होता जा रहा अधःपतन रोक सकूँ। अपने करोड़ों देशवासियों के बारे में मेरा सपना एकदम सामान्य है। मेरे देवता भी इसे जानते हैं। मैं तो उनसे दामन पसारे केवल इतना ही माँग रही थी कि इन करोड़ों जीवों को रोटी, कपड़ा और मकान की बुनियादी आवश्यकताओं के लिए किसी के सामने हाथ पसारने की नौबत न आए और मानव द्वारा मानव के लिए पैदा किए गए दुःखों का यथासंभव परिहार हो सके। इससे अधिक मैं कुछ भी नहीं माँग रही थी। इसी उद्देश्य से इतना सारा परिश्रम, इतनी दौड़धूप और इतना समर्पण करने के बाद थोड़े दिन के लिए ही सही, वह दिन भी देख लिया, जिससे मन को संतोष हुआ कि सपना पूरा हो सकता है। वह समय पुनः आएगा और युगों तक चलेगा। मेरे पास की पूँजी, इतना ही संतोष क्या कम है कि मैंने जीवन में कभी किसी को धोखा नहीं दिया है। लोगों को अनाप-शनाप आश्वासनों के सब्जबाग दिखाकर चुनाव नहीं जीते। मैं अपने आपको धन्य मानती हूँ कि मेरे हाथों लोगों का विश्वासघात कभी नहीं हुआ। बड़े शहरों में बसे झोंपड़पट्टी वालों की दुर्दशा का कारण मैं नहीं हूँ। दिल्ली के सिक्खों और पंजाब तथा कश्मीर के हिंदुओं का जीवन बिताने वाले लोगों को मैंने धोखा नहीं दिया है। गरीबी हटाने का जादू अपने पास होने का झूठा दावा कर मैंने किसी को नहीं भरमाया है। बड़े से बड़े घोटालों में मैं कहीं नहीं हूँ। सर्वत्र हिंसा, आतंक, अपहरण, लूट का वातावरण बनाने में मेरा कोई योगदान नहीं रहा है। मेरी इस आयु में यह संतोष धन क्या कम है।

आँखों के सामने घिर आया कुहासा छँट जाता है। आरती की ज्योति फिर से अपना प्रकाश फैलाने लगती है। मेरे देवताओं की मूर्तियाँ उस प्रकाश में फिर से देदीप्यमान हो उठती हैं। मन में उठे सारे संदेह, शंका व कुंठाएँ समाप्त हो जाती हैं। मैं आत्मचिंतन में विभोर हो जाती हूँ तो मुझे अपने भाग्य से ईर्ष्या होने लगती है। नाना खड्ग शमशेर जंगबहादुर राणा की दृढ़ता, पिता ठाकुर महेन्द्र सिंह की निस्पृहता और पति जिवाजीराव की दिलेरी मुझे विरासत में मिली है। यह त्रिवेणी संगम एक महान संस्कार धन के रूप में मुझे धरोहर के नाते मिला और वही मेरा पाथेय रहा है, बची हुई जिंदगी में भी रहेगा। शेष यात्रा भी उसी के सहारे चलती रहे, बस इससे अधिक मुझे कुछ और नहीं चाहिए; सचमुच में कुछ नहीं चाहिए। पुनः कर्तव्यपथ पर चलते रहने की प्रेरणा मिलती है। बचपन में ही मन मे एक प्रश्न उठा करता था 'मातृभूमि को गुलाम क्यों कहते हैं?' और इस प्रश्न के साथ मन पीड़ा से भर उठता था। ज्यों-ज्यों बड़ी होती गई, भारत माँ को स्वतंत्र कराने वाले आंदोलनकारियों ने प्रेरित किया। उनके संघर्ष ने मन को उद्वेलित किया। मातृभूमि को स्वतंत्र बनाना उनके लिए एक यज्ञ था। उस यज्ञ में समिधा बनने का भाव मन में घर करता गया। हिंदू दर्शन में जीवन ही एक यज्ञ है। छोटे यज्ञ से बड़े यज्ञ के लिए जीना भी यज्ञ ही है। इसलिए समाज हित में अपनी छोटी-सी जिंदगी का एक कदम भी उठे तो चिरंतन चलने वाले महायज्ञ में एक समिधा डालने के बराबर ही है। समाज शाश्वत है। समाज को दिशा देने में, उसकी दशा पर विचार करते रहने में मात्र तत्कालीन सरकार व शासन की भूमिका नहीं रहती रही है। यह संतों की भूमि है। समाज को अक्षुण्ण बनाए रखने में समय समय पर उन्होंने भी अपने जीवन की आहुति दी है। आठ सौ वर्षों तक विदेशी आक्रांताओं के प्रभाव में रहे भारत में समाज जीवन के मूल्यों के बीज तत्व को ऋषि मुनियों, संत महात्माओं और मठ आश्रमों ने ही सँभालकर रखा। पिछले सारे वर्षों से संघ परिवार की भूमिका भी इसी परंपरा को जीवित रखने का प्रयास है। अपने देश में वोट प्राप्ति का लोभ और कुरसी की खातिर राजनीतिज्ञ भी भ्रमित हुए हैं।

समाज की समरसता को जाति और धर्म के नाम पर छिन्नभिन्न करने, भोग के लिए जीने, व्यक्तिशः अपनी जिंदगी जीने के भाव घर करने लगे हैं। हिंदू जीवन पद्धति जीवन को समग्रता को देखने की है। 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' का आदर्श यहाँ नहीं चल सकता। जमाखोरी और भ्रष्टाचार बहुत दिनों तक नहीं चलेगा। ये स्थितियाँ सनातन हिंदू जीवन मूल्यों के विपरीत हैं। इसलिए समाज में कसमसाहट है। यह कसमसाहट की स्थिति समाप्त होगी। नजर के सामने संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार, गुरुजी गोलवलकर, बालासाहब देवरस की तस्वीर उभरती है। बालासाहब देवरस ने अपने जीते जी अस्वस्थता की स्थिति में अपना उाराधिकारी नियुक्त कर दिया, नई परंपरा डाली। प्रसन्नता है कि संघ परिवार की राष्ट्रवादी विचारधारा को जनमानस स्वीकारने लगा है। इस विचारधारा को आज कोई चुनौती नहीं है। यह एक व्यापक अनुभूति बन रही है कि राष्ट्र अपनी जड़ों को नहीं छोड़ सकता। किसी भी विपरीत परिस्थिति में राष्ट्र एक होकर खड़ा हो जाएगा। महान भारत की रचना, समृद्धिशाली भारत का सपना लेकर संघ परिवार आगे बढ़ रहा है। परिवार बृहत् से बृहत्तर होता जा रहा है। एक दिन भारत को पुनः विश्व गुरु बनना है। व्यक्ति जीवन में शुचिता, प्रशासकीय जीवन में पारदर्शिता, लोक जीवन में स्वावलंबन, समाज जीवन में समरसता के बिना हम लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते। **चरैवेति चरैवेति** संकल्प से राष्ट्र जीवन चिरंतन बना रहेगा। ▪

(पुस्तक राजपथ से लोकपथ से साभार)

11 सितम्बर 1893 :स्वामी विवेकानन्द द्वारा शिकागो की धर्मसभा में दिया गया ऐतिहासिक भाषण

अमेरिका निवासी बहनों और भाइयों! जिस सौहार्द और स्नेह से आपने हम लोगों का स्वागत किया है, उसके फलस्वरूप मेरा हृदय अकथनीय हर्ष से प्रफुल्लित हो रहा है। संसार के प्राचीन महर्षियों के नाम पर मैं आपको धन्यवाद देता हूँ तथा सब धर्मों की मातृस्वरूपा हिन्दू धर्म एवं भिन्न-भिन्न संप्रदायों के लाखों करोड़ों हिन्दुओं की ओर से भी आपको धन्यवाद देता हूँ। मैं उन सज्जनों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने इस सभा मंच पर से प्राच्य-प्रतिनिधियों के संबंध में आपको यह बतलाया है कि ये दूर देश से आए विद्वान् सर्वत्र सहिष्णुता का भाव प्रसारित करते रहे हैं तथा इस कारण यश और गौरव के पात्र हैं।

मुझको ऐसे धर्मावलंबी होने का गौरव है, जिसने संसार को 'सहिष्णुता' तथा सब धर्मों को मान्यता प्रदान करने की शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर ग्रहण करते हैं। आपसे यह निवेदन करते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि मैं ऐसे धर्म का अनुयायी हूँ, जिसकी पवित्र भाषा संस्कृत में अंग्रेजी शब्द exclusion (बहिष्कार) का कोई पर्यायवाची शब्द ही नहीं है। मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी की समस्त पीड़ित और शरणागत जातियों तथा विभिन्न धर्मों के बहिष्कृत मतावलंबियों को आश्रय दिया है।

मुझे यह बतलाते हुए गर्व हो रहा है कि जिस वर्ष यहूदियों का पवित्र मंदिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिला दिया गया, उसी वर्ष कुछ अभिजात यहूदी आश्रय लेने दक्षिण भारत में आए। हमारी जाति ने उन्हें अपनी छाती से लगाकर शरण दी। ऐसे धर्म में जन्म लेने का मुझे अभिमान है, जिसने पारसी जाति की रक्षा की और उसका पालन अब तक कर रहा है। भाइयों, मैं आप लोगों को एक स्तोत्र के कुछ पद सुनाता हूँ, जिसे मैं अपने बचपन से गाता रहा हूँ और जिसे प्रतिदिन लाखों मनुष्य गाया करते हैं-

रूचीनां वैचित्र्येदृजुकुटिलनानापथजुषाम्।
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥
शिव महिम्न स्तोत्र

''जैसे विभिन्न नदियाँ भिन्न-भिन्न स्थानों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार है प्रभो! भिन्न-भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जानेवाले लोग अंत में तुझमें आकर मिल जाते हैं।'' यह सभा संसार की अब तक की सर्वश्रेष्ठ सभाओं में से एक है। इस सभा के माध्यम से जगत् के लिए 'गीता' का यह उपदेश अत्यंत उपयुक्त है-

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम व्रत्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥
गीता, 4.11

''जो कोई मेरी ओर आता है- चाहे किसी रास्ते में हो- मैं उसे प्राप्त होता हूँ। लोग भिन्न-भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुए अंत में मेरी ओर ही आते हैं।''

सांप्रदायिकता, संकीर्णता और इनसे उत्पन्न भयंकर धार्मिक उन्माद हमारी इस पृथ्वी पर काफी समय तक राज कर चुके हैं। इनके घोर अत्याचार से पृथ्वी थक गई है। इस उन्माद ने अनेक बार मानव रक्त से पृथ्वी को सींचा है, सभ्यताएँ नष्ट कर डाली हैं तथा समस्त जातियों को हताश कर डाला है। यदि यह सब न होता तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता, पर अब उनका भी समय आ गया है और मेरा दृढ़ विश्वास है कि जो घंटे आज सुबह इस सभा के सम्मान के लिए बजाए गए, वे समस्त अत्याचारों तथा मानवों की पारस्परिक कटुताओं के लिए मृत्यु-नाद सिद्ध होंगे। ▪

मुझको ऐसे धर्मावलंबी होने का गौरव है, जिसने संसार को "सहिष्णुता" तथा सब धर्मों को मान्यता प्रदान करने की शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर ग्रहण करते हैं।

आपसे यह निवेदन करते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि मैं ऐसे धर्म का अनुयायी हूँ, जिसकी पवित्र भाषा संस्कृत में अंग्रेजी शब्द exclusion (बहिष्कार) का कोई पर्यायवाची शब्द ही नहीं है। मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी की समस्त पीड़ित और शरणागत जातियों तथा विभिन्न धर्मों के बहिष्कृत मतावलंबियों को आश्रय दिया है।

क्रांतिकारी विचारों के प्रेरक थे लालाजी

लाहौर से लाला जी ने कानून की पढ़ाई पूरी की, उसके बाद उन्होंने लाहौर और हिसार में अपनी वकालत की प्रैक्टिस की। आपने राष्ट्रीय स्तर पर दयानंद वैदिक स्कूल की स्थापना की जहाँ वे दयानन्द सरस्वती जी के अनुयायी भी बने।

आप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए और उसके बाद उन्होंने कई सारे राजनैतिक अभियानों में हिस्सा लिया।

ला ला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को धड़िके ग्राम (मोगा जिला पंजाब) में अग्रवाल परिवार में हुआ था। 1870 के अंत और 1880 के प्रारंभ तक जहाँ उनके पिता उर्दू शिक्षक थे वहाँ से उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा रेवारी (तब का पंजाब, अभी का हरियाणा) के सरकारी उच्च माध्यमिक स्कूल से ग्रहण की।

लाला जी हिन्दुत्व से अत्यधिक प्रेरित थे, इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने राजनीति में जाने की सोची। लाहौर में कानून की पढ़ाई के दौरान उनके मन में ये भाव गहरा हो गया था कि हिन्दुत्वता सबसे महत्वपूर्ण है। लाला लाजपत राय जी प्रखर देशभक्त, आर्य समाजी, हिन्दुत्ववादी थे। वे इस विषय पर गहन भरोसा रखते थे, और हिन्दुत्व के माध्यम से ही भारत में शांति बनाये रखना चाहते थे और मानवता को बढ़ाना चाहते थे, ताकि भारतवासी आसानी से एक-दूसरे की मदद करते हुए, एक दूसरे पर भरोसा कर सके। इसका प्रमुख कारण उस समय की सामाजिक व्यवस्था में फैली भेदभाव व ऊँच-नीच का भाव था। लाला जी हिन्दुत्व के फैलाव के माध्यम से समाज में व्याप्त इन प्रथाओं की प्रणाली को ही बदलना चाहते थे। आज उनका ये प्रयास बहुत हद तक सफल हो रहा है। लाला जी आर्य समाज के भक्त थे जब वे विद्यार्थी थे तभी उन्होंने ''आर्य राजपत्र'' की स्थापना की, जिसके वे संपादक बने।

लाहौर से लाला जी ने कानून की पढ़ाई पूरी की, उसके बाद उन्होंने लाहौर और हिसार में अपनी वकालत की प्रैक्टिस की। आपने राष्ट्रीय स्तर पर दयानंद वैदिक स्कूल की स्थापना की जहाँ वे दयानन्द सरस्वती जी के अनुयायी भी बने। आप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए और उसके बाद उन्होंने कई सारे राजनैतिक अभियानों में हिस्सा लिया। लाला जी की राजनीतिक सक्रियता से और उनका जनाधार देखकर 1907 में अचानक ही लाला जी को अंग्रेज सरकार ने निर्वासित कर मॉडले (बर्मा) भेज दिया, पर उनके खिलाफ वो किसी भी तरह के सबूत पेश न कर सकें फलतः वाइसराय लार्ड मिन्टो को उन्हें स्वदेश वापस भेजने का निर्णय करना पड़ा। लाला जी १९२० के विशेष कांग्रेस सेशन में कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष नियुक्त किये गये। उनका ये नीति वाक्य सदैव रहा कि -

''मनुष्य अपने गुणों से आगे बढ़ता है, न कि दूसरों की कृपा से।''

इसीलिए हमेशा उन्होंने पूरी ताकत के साथ अपने काम को पूरा करने का प्रयास किया, उन्हीं की कोशिशों के फलस्वरूप बाद में स्वतंत्रता आन्दोलन ने विशाल रूप ले लिया। जिसका अंत भारत को स्वतंत्र राष्ट्र बनाकर हुआ।

1888 में लाला जी ने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की थी, पर वे कांग्रेस के नरमपंथी नेताओं और कांग्रेस की भिक्षा नीति से काफी असंतुष्ट थे। बाल गंगाधर तिलक के समान वे भी उग्र राष्ट्रवादिता के हिमायती थे, जल्द ही तिलक और विपिनचन्द्र पाल के साथ उन्होंने अपना गुट बना लिया, जिसे लाल-बाल-पाल के नाम से जाना गया। इन लोगों ने कांग्रेस की नरम नीतियों का विरोध आरंभ किया, जिससे कांग्रेस के अन्दर नरमपंथियों का प्रभाव कम होने लगा और इनका प्रभाव बढ़ने लगा। बनारस कांग्रेस अधिवेशन (1905 ई.) में इन लोगों के समूह ने कांग्रेस पांडाल में अलग बैठक की। जिसमें लाला जी ने ओज पूर्ण शब्दों में कहा कि- ''अगर भारत स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहता है, तो उसको भिक्षावृत्ति का परित्याग कर स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा।''

1907 में कांग्रेस के विभाजन के बाद लाला लाजपत राय कांग्रेस से अलग हो गये। कांग्रेस से अलग होकर इसी वर्ष उन्होंने पंजाब में 'उपनिवेशीकरण अधिनियम' के विरोध में एक व्यापक आन्दोलन चलाया। लाला हरदयाल के साथ मिलकर उन्होंने क्रांतिकारी आन्दोलनों में भी भाग लिया इसीलिये सरकार ने उन्हें निर्वासित किया था। निर्वासन के बाद लाला जी अमेरिका चले गये और वहीं से राष्ट्रीय आन्दोलनों और अंग्रेजी सरकार विरोधी गतिविधियों में भाग लेते रहे। इसी दौरान उन्होंने भारत की दयनीय स्थिति से सम्बन्धित एक पुस्तक लिखी, जिसे उस समय की सरकार ने जब्त कर लिया।

1920 में लाला जी पुनः भारत आये, उस समय देश महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन की तैयारी कर रहा था, जब गाँधीजी ने अपना आन्दोलन शुरू किया तो लाला लाजपत राय ने इसमें भाग लेकर पंजाब में इसे अत्याधिक सफल बनाया, जिससे सरकार ने क्रोधित होकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया, जेल से छूटने के बाद वे फिर से राजनीति में सक्रिय हो उठे, 1923 में वे केन्द्रीय सभा के सदस्य निर्वाचित हुऐ। वे स्वराज दल के सदस्य भी बने परन्तु बाद में वे इससे अलग हो गये और एक राष्ट्रीय दल की स्थापना की। 1925 में लाला जी को हिन्दु महासभा के कलकत्ता अधिवेशन का सभापति बनाया गया।

1928 ई. मे जब साइमन कमीशन के बहिष्कार की योजना बनाई गई तो लाला जी ने उसमें काफी सक्रियता से भाग लिया और लाहौर में साइमन कमीशन विरोधी जुलूस का नेतृत्व किया, पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर बर्बरतापूर्वक लाठियाँ बरसाई, इस लाठी चार्ज में लाला जी के सिर पर गहन चोट लगी। इसी दर्दनाक चोट की वजह से इस महान युग पुरुष का देहावसान हो गया। उनकी इस असामयिक मृत्यु से पूरा देश स्तब्ध रह गया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में लाला जी का योगदान बहुमूल्य है। ▪

सूर्य नारायण का पर्व है मकर संक्रान्ति

प्रयागराज में हर साल माघ मेला लगता है, जहाँ भक्तगण कल्पवास करते है, यहाँ हर बारह वर्षों के बाद कुंभ मेला लगता है, जो कि एक महीने तक रहता है, जबकि छः वर्ष के पश्चात अर्धकुंभ लगता है।

मकर संक्रान्ति का हमारे देश में बहुत ज्यादा सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक महत्व है। इसी कारण रामचरित मानस में उल्लेखित है-

माघ मकरगत रबि जब होई।
तीरथपतिहिं आव सब कोई।।
देव दनुज किंनर नर श्रेनीं।
सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनी।।
पूजही माधव पद जल जाता।
परसि अखय बटु हरषहिं गाता।।

ऐसा माना जाता है, कि प्रयाग में संगम पर मकर संक्रान्ति के दिन सारे देव-देवियाँ स्नान करने आते है, इसीलिये प्रयाग में इस दिन स्नान करना अत्याधिक पुण्यकारक माना गया है। प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मकर संक्रान्ति होती है, क्योंकि आज ही के दिन सूर्यदेव दक्षिणायन से उत्तरायण होकर धनु से मकर राशि में प्रविष्ट होते है, जो सूर्य के पुत्र शनि की राशि है। मकर संक्रान्ति का बहुत बड़ा मेला गंगासागर में लगता है, इसके पीछे की एक कथा है, कि मकर संक्रान्ति को ही गंगाजी स्वर्ग से उतर कर भागीरथ जी के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनी के आश्रम में जाकर सागर से मिल गई थी। गंगा जी के इसी पावन जल से राजा सगर के साठ हजार पुत्रों का जो शाप से पीड़ित थे उनका उद्धार हुआ, इसी घटना की याद में ये तीर्थ गंगासागर के नाम से विख्यात हुआ और इसीलिये यहाँ पर विशाल मेले का मकर संक्रान्ति के दिन आयोजन होता है।

प्रयागराज में हर साल माघ मेला लगता है, जहाँ भक्तगण कल्पवास करते है, यहाँ हर बारह वर्षों के बाद कुंभ मेला लगता है, जो कि एक महीने तक रहता है, जबकि छः वर्ष के पश्चात अर्धकुंभ लगता है। ऐसा माना जाता है, कि मकर संक्रान्ति से सूर्य की गति तिल-तिल करके बढ़ती है, इसीलिये इस दिन तिल और गुड़ के दान का महत्व है। इस दिन को पंजाब व जम्मू-कश्मीर में 'लोहड़ी' के रूप में मनाते है, इसके पीछे एक लोक कथा है, कि मकर संक्रान्ति के ही दिन कंस ने भगवान श्रीकृष्ण को मारने के लिये लोहिता नाम की एक राक्षसी को गोकुल भेजा था, जिसे श्रीकृष्ण ने खेल-खेल में ही मार डाला था, इसी घटना की याद में इसे लोहिड़ी पर्व के रूप में मनाया जाता है। सिन्धी समाज भी मकर-संक्रान्ति के एक दिन पूर्व इसे 'लाह-लोही' के रूप में मनाते है। इसी प्रकार तमिलनाडु में मकर संक्रान्ति को 'पोंगल' के रूप में मनाते है, जिसमें तिल, चावल व दाल की खिचड़ी बनाते है, क्योंकि वे नई फसल का चावल, दाल, तिल से पूजा करके कृषि देवता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते है, इसी दिन से तमिल पंचांग का नया वर्ष पोंगल शुरु होता है। माघ मास के स्नान का प्रारम्भ पौष की पूर्णिमा से प्रारम्भ हो जाता है। भारतीय संवत्सर का ग्यारहवाँ चान्द्रमास और दसवाँ सौर मास 'माघ' कहलाता है। क्योंकि इस माह मघा नक्षत्र युक्त पूर्णिमा होती है, इसीलिये इसका नाम माघ पड़ा। धार्मिक दृष्टिकोण से माघ माह का बहुत महत्व है। इस माह में जल के भीतर डुबकी लगाने से प्राणी पापमुक्त हो जाता है। इस माह की ऐसी विशेषता है, कि इसमें जहाँ कही भी जल हो, वह गंगाजल के समान होता है। इसी प्रसंग में पद्मपुराण में एक कथा का वर्णन है कि प्राचीन काल में नर्मदा जी के तट पर सुव्रत नामक ब्राह्मण रहते थे। वे अत्यंत ज्ञानी थे उन्हें वेद, पुराणों, ज्योतिष, तर्क, मंत्र, सांख्य, योग व चौसठ कलाओं का अच्छा खासा ज्ञान था। वे अनेक देशों की भाषा व लिपियाँ भी जानते थे। इतने ज्ञानी होने के बाद भी वे अपने ज्ञान का प्रयोग धार्मिक कार्यों के लिये न करते हुए धन कमाने के लिये करते थे, जिससे उन्होंने कई स्वर्ण मुद्राएं अर्जित कर ली। धन कमाते-कमाते वे बूढ़े हो गये और बीमारी ने आ घेरा। तब उनके मन में विवेक का उदय हुआ कि मैंने अपना सारा जीवन धनार्जन में लगा दिया, परलोक की तो सोची ही नहीं, मेरा उद्धार कैसे हो? वे इसी सोच में थे कि इसी दौरान उनका संग्रहित धन भी चोरी हो गया, जिससे उन्हें धन की वास्तविक नश्वरता का बोध भी हुआ। अब उन्हें चिन्ता थी, तो सिर्फ परलोक की। व्याकुलता में उन्हें ये श्लोक याद आया-

माघे निमग्नाः सलिले सुशीते
विमुक्तपापास्त्रिदिवं प्रयान्ति।।

सुव्रत को अपने उद्धार का मूल मंत्र मिल गया, उन्होंने माघ स्नान का संकल्प लिया और नर्मदा जी में लगातार नौ दिन तक स्नान किया। दसवे दिन स्नान के बाद उनके प्राणांत हो गये। यद्यपि उन्होंने जीवन भर कोई सत्कर्म नहीं किया था, धनार्जन ही किया था, परन्तु माघ मास में स्नान के कारण निर्मल मन से पश्चाताप करते हुए उन्हें देवलोक की प्राप्ति हुई।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में हुए परिवर्तन को अन्धकार से प्रकाश की ओर हुआ परिवर्तन माना जाता है। सूर्योपासना का पर्व मकर संक्रान्ति हिन्दुओं द्वारा अंग्रेजी कलैन्डर के अनुसार मनाया जाने वाला एकमात्र पर्व है, जो प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है। ज्योतिष शास्त्र में ये माना जाता है, कि कुल 12 राशियों में से प्रत्येक राशि में सूर्य का भ्रमण काल एक माह तक होता है, इसीलिये प्रत्येक वर्ष सूर्य 14जनवरी के आस-पास मकर राशि में प्रवेश करता है। यह स्थिति वैज्ञानिकों द्वारा निर्धारित मकर रेखा के उत्तर की ओर सूर्य के प्रवेश की होती है, इसीलिये इसे सूर्य का उत्तरायण में आना भी कहा जाता है, जो धार्मिक आधार पर शुभता का प्रतीक है। ▪

पं. सलिल मालवीय

भारत के राष्ट्रवाद की अवधारणा

देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी?

किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद भी जितनी गंभीर रूप से इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए था, उतना गम्भीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

अंग्रेजों के शासनकाल में देश में जितने भी आन्दोलन चले और देश की जितनी भी राजनीति थी, उन सबका एक ही लक्ष्य था कि अंग्रेजों को हटाकर हम स्वराज्य प्राप्त करें। स्वराज्य के बाद हमारा रूप क्या होगा? हम किस दिशा में आगे बढ़ेंगे? इसका बहुत कुछ विचार नहीं हुआ था। बहुत कुछ शब्द का मैंने प्रयोग इसलिए किया है कि बिलकुल विचार नहीं हुआ था यह कहना ठीक न होगा। ऐसे लोग थे कि जिन्होंने उस समय भी बहुत-सी बातों पर विचार किया था। स्वयं गांधी जी ने हिन्द स्वराज्य लिखकर उसमें स्वराज्य आने के बाद भारत का चित्र क्या होगा, इस पर अपने विचार रखे थे। उसके पहले लोकमान्य तिलक ने भी गीता रहस्य लिखकर संपूर्ण आंदोलन के पीछे की तात्विक भूमिका क्या होगी, इसका विवेचन किया था। साथ ही उस समय दुनिया में जो भिन्न-भिन्न विचारसरणियां चल रही थी, उनकी भी तुलनात्मक दृष्टि से आलोचना की थी।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे राजनैतिक दलों ने जो प्रस्ताव स्वीकार किये, उनमें भी ये विचार आये थे। किन्तु उन सबका जितना गंभीर अध्ययन होना चाहिए था, उतना उस समय तक नहीं हुआ था। क्योंकि सबके सामने प्रमुख प्रश्न यही था कि पहले अंग्रेजों को निकालें फिर अपने घर का निर्माण कैसे करेंगे, इसका विचार कर लेंगे। इसलिए यदि विचारों के मतभेद भी कहीं थे तो लोगों ने उनको दबा करके रखा था। यहाँ तक कि समाजवाद के आधार पर आगे का भारत बनना चाहिए, इस तरह का विचार करने वाले जो लोग थे, वे कांग्रेस के अन्दर ही एक सोशलिस्ट पार्टी बनाकर काम करते रहे। उसके बाहर निकलकर उन्होंने अलग से कार्य करने का प्रयत्न नहीं किया। क्रान्तिकारी भी अपने-अपने विचारों के अनुसार स्वराज्य के लिए काम करते थे। इसी प्रकार और भी लोग थे। किन्तु प्रमुखता इसी बात की रही कि पहले देश को आजाद कर लिया जाए।

अतः देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी? किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद भी जितनी गंभीर रूप से इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए था, उतना गंभीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया और आज भी जब इतने वर्ष देश को स्वतन्त्र हुए हो गए हम यह नहीं कह सकते कि कोई दिशा निश्चित हो गयी है।

भारत किधर जाने वाला है?

समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे दल के लोगों ने कल्याणकारी राज्य, समाजवाद, उदारमतवाद, आदि का ध्येय अवश्य घोषित किया है। विविध नारे लगाये गये हैं। परन्तु ये जितने नारे लगाने वाले लोग हैं, उनके सामने उन सब विचार धाराओं का नारे से अधिक कोई महत्व नहीं रहता। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि इसका मुझे अनुभव है। एक बार एक सज्जन से बातचीत हो रही थी। वह कह रहे थे कि कांग्रेस के विरूद्ध मिल-जुलकर अपने को एक मोर्चा बनाना चाहिए ताकि अच्छी तरह से लड़ सकें। राजनीतिक दृष्टि से समय-समय पर इस प्रकार की नीतियाँ लेकर दल चलते है और इसलिए उनके इस प्रस्ताव में तो कोई अनुचित बात नहीं थी। परन्तु बात करते-करते मैंने सहज में पूछ लिया कि हम लोग मोर्चा तो शायद बना लेंगे परन्तु कुछ थोड़ा बहुत कार्यक्रम लेकर चलें? कौन सा आर्थिक कार्यक्रम लेकर चलें? कौनसा राजनैतिक कार्यक्रम लेकर चलें? इन प्रश्नों पर भी विचार करना चाहिए।

इस पर उन्होंने सहज भाव से कह दिया कि

इसकी कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, आपको जो पसन्द हो स्वीकार कर लीजिए। हम तो घोर साम्यवादी कार्यक्रम से लेकर बिल्कुल पूंजीवादी कार्यक्रम तक जो आप चाहें उसमें समर्थन कर देंगे। उनको किसी भी कार्यक्रम में कोई आपत्ति नहीं थी। उद्देश्य केवल इतना ही था कि किसी न किसी तरीके से कांग्रेस को हरा देना चाहिए। आज भी बहुत बार लोग कहते हैं कि कम्युनिस्टों तथा बाकी सब लोगों से मिलकर भी कांग्रेस को हरा दिया जाए।

साँप-नेवला एक साथ

केरल में अभी-अभी चुनाव हुए हैं। उसमें कम्युनिस्ट, मुस्लिम लीग, स्वतंत्र पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, विद्रोही कांग्रेस जो केरल कांग्रेस के नाम से आई, क्रान्तिकारी सोशलिस्ट पार्टी आदि जितनी भी पार्टियां हैं, इनमें आपस में भिन्न-भिन्न प्रकार से गठबंधन हुए। इन गठबन्धनों के कारण यह पता नहीं लग सकता था कि इनके कोई राजनीतिक सिद्धान्त, विचार अथवा आदर्श भी हैं या नहीं। विचारों की दृष्टि से यह स्थिति है। कांग्रेस में भी यही बात दिखाई दे रही है। यद्यपि कांग्रेस ने प्रजातन्त्रीय समाजवाद का सिद्धान्त स्वीकार किया है तथापि कांग्रेस के लोग जो बोलते हैं उनमें यही दिखाई देता है कि वहाँ पर एक निश्चित सिद्धान्त निश्चित कार्यक्रम नहीं। घोर कम्युनिस्ट विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर विद्यमान हैं और उस कम्युनिज्म का डटकर विरोध करते हुए पूँजीवादी विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर मौजूद हैं। अहिनकुल योग के अनुसार नकुल और साँप के सहअस्तित्व का कोई जादू का पिटारा हो सकता है तो वह आज की कांग्रेस है।

हमें आत्माभिमुख होना पड़ेगा

इस स्थिति में हम आगे बढ़ सकेंगे या नहीं, इसका हमें विचार करना चाहिए। देश में आज की अनेक समस्याओं की कारण मीमांसा करें तो पता चलेगा कि अपने गन्तव्य और उसकी दिशा का अज्ञान बहुतांश में आज की अव्यवस्था के लिए जिम्मेदार है। यह तो मैं मानता हूं कि हिन्दुस्थान के सभी 45 करोड़ लोग सब प्रश्नों पर अथवा किसी एक प्रश्न पर भी पूर्णतः एक विचार और एक मत नहीं हो सकते। किसी भी देश में यह संभव नहीं है। फिर भी राष्ट्र की एक सामान्य इच्छा नाम की कोई चीज होती है। उसको आधार बनाकर काम किया जाएं तो सर्वमान्य व्यक्ति को लगता है कि मेरे मन के मुताबिक काम हो रहा है। उसमें से विचारों की अधिकतम एकता भी पैदा होती हैं। अक्टूबर-नवम्बर 1962 में कम्युनिस्ट चीन के आक्रमण के समय जनता की अवस्था इस तथ्य का अच्छा उदाहरण है। इस समय देश में एक उत्साह की लहर पैदा हो गई थी। कर्म तथा त्याग दोनों की शक्ति जाग्रत हो गई थी। जनता और सरकार के बीच भिन्न-भिन्न दलों के बीच तथा नेता और जनता के बीच कोई खाई नहीं दिखाई देती थी। यह सब कैसे हुआ? सरकार ने वह नीति अपनाई जो जनता के मन के अनुसार तथा पुरूषार्थ का आह्वान करने वाली थी। फलतः हम एक होकर खड़े हो गए।

समस्याओं का कारण स्व के प्रति दुर्लक्ष्य

आवश्यकता है कि अपने स्व का विचार किया जाए। बिना उसके स्वराज्य का कोई अर्थ नहीं। स्वतंत्रता हमारे विकास और सुख का साधन नहीं बन सकती। जब तक हमें अपनी असलियत का पता नहीं तब तक हमें अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं हो सकता और न उसका विकास ही संभव है। परतन्त्रता में समाज का स्व दब जाता है। इसीलिए राष्ट्र स्वराज्य की कामना करते हैं जिससे वे अपनी प्रकृति और गुणधर्म के अनुसार प्रयत्न करते हुए सुख की अनुभूति कर सकें। प्रकृति बलवती होती है। उसके प्रतिकूल काम करने से अथवा उसकी ओर दुर्लक्ष्य करने से कष्ट होते हैं। प्रकृति का उन्नयन कर उसे संस्कृति बनाया जा सकता है, पर उसकी अवहेलना नहीं कर सकती। आधुनिक मनोविज्ञान बताता है कि किसी प्रकार मानव प्रकृति एवं भावों की अवहेलना से व्यक्ति के जीवन में अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति प्रायः उदासीन एवं अनमना रहता है। उसकी कर्म शक्ति क्षीण हो हो जाती है अथवा विकृत होकर विपथ गामिनी बन जाती है। व्यक्ति के समान राष्ट्र भी प्रकृति के प्रतिकूल चलने पर अनेक व्यथाओं का शिकार बनता है। आज भारत की अनेक समस्याओं का यही कारण है।

राजनीति में अवसरवादिता

राष्ट्र का मार्गदर्शन करने वाले तथा राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले अधिकांश व्यक्ति इस प्रश्न की ओर उदासीन है। फलतः भारत की राजनीति, अवसरवादी एवं सिद्धान्तहीन व्यक्तियों का अखाड़ा बन गई है। राजनीतिज्ञों तथा राजनीतिक दलों के न कोई सिद्धान्त एवं आदर्श है और न कोई आचार संहिता। एक दल छोड़कर दूसरी दल में जाने में व्यक्ति को कोई संकोच नहीं होता। दलों के विघटन अथवा विभिन्न दलों की युक्ति भी होती है तो वह किसी तात्विक मतोद अथवा समानता के आधार पर नहीं अपितु उसके मूल में चुनाव और पद ही प्रमुख रूप से रहते हैं। 1937 में जब हाफिज मुहम्मद इब्राहिम मुस्लिम लीग के टिकट पर चुने जाने के बाद कांग्रेस में सम्मिलित हुए तो उन्होंने स्वस्थ राजनीतिक परंपरा के अनुसार विधानसभा से त्याग पत्र देकर पुनः कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा और जीतकर आए। 1948 में जब कांग्रेस से अलग हटकर सोशलिस्ट पार्टी का निर्माण हुआ तब सभी सोशलिस्टों ने, जो विधानमण्डलों के सदस्य थे, त्यागपत्र देकर अपने-अपने क्षेत्र से पुनः चुनाव लड़े। किन्तु उसके बाद किसी ने इस परंपरा का निर्वाह नहीं किया। अब राजनीतिक क्षेत्र में पूर्ण स्वैच्छाचार है। इसी का परिणाम है कि आज भी सभी के विषय में जनता के मन में समान रूप से अनास्था है। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं कि जिसकी आचरणहीनता के विषय में कुछ कहा जाए तो जनता विश्वास न करे। इस स्थिति को बदलना होगा। बिना उसके समाज में व्यवस्था और एकता स्थापित नहीं की जा सकती।

हम किस ओर चलें?

हम किस ओर चले? राष्ट्र के सामने यह प्रश्न है। कुछ लोग कहते हैं कि राष्ट्र के परतन्त्र होने के पूर्व एक हजार वर्ष पहले जहाँ हमने राष्ट्र जीवन का सूत्र छोड़ दिया था वहीं से हम उसे आगे बढ़ाएँ। पर राष्ट्र कोई वस्त्र या पुस्तक के समान निर्जीव वस्तु तो है नहीं जिसे बुनते या पढ़ते समय जहाँ एक बार छोड़ दिया, वहाँ से फिर किसी विशेष अतिथि के बाद उसे आगे बढ़ाया जा सके। फिर यह कहना भी युक्ति संगत नहीं होगा कि परतन्त्रता के साथ एक हजार वर्ष पूर्व हमारे जीवन का सूत्र एकदम टूट गया है तथा तब से अब तक हम पूर्णतया निष्क्रिय अथवा गतिहीन रहे हैं। बदली हुई परिस्थितियों में अपने जीवन को बनाये रखने तथा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने में अपने जीवन को अभिव्यक्त किया। हमारे जीवन का प्रवाह अवरूद्ध नहीं अपितु आगे बढ़ता गया। गंगा की धारा की लौटाने का प्रयत्न बुद्धिमानी नहीं होगी। बनारस की गंगा हरिद्वार के समान शीतल एवं स्वच्छ चाहे न हो, परन्तु उतनी ही पवित्र एवं मुक्ति-दायिनी है। उसमें मिलने वाले जिन नदी-नालों को उसने आत्मसात कर लिया है उनकी कलुषा तथा गन्दगी की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। वे गंगा में मिलकर गंगा ही बन गये हैं। अब तो गंगा के प्रवाह को आगे ही बढ़ाना होगा।

यदि संपूर्ण स्थिति इतनी ही होती तब तो कोई कठिनाई नहीं थी। विश्व में हम अकेले ही तो नहीं है। दूसरे राष्ट्र भी है। उन्होंने पिछले एक हजार वर्ष में अभूतपूर्व उन्नति की है। हमारा संपूर्ण

ध्यान तो अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ने तथा अपनी रक्षा के प्रयत्नों में ही लगा रहा है। विश्व की इस प्रगति में हम सहभागी नहीं हो सके। अब जब हम स्वतंत्र हो गये हैं तो क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं हो जाता कि हम अपनी इस कमी को शीघ्राति-शीघ्र पूरा करके विश्व के इन प्रगट देशों के साथ खड़े हो जाएँ? यहाँ तक तो, मैं समझता हूं, मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है।

स्वदेशी की भावना सर्वव्यापी हो

समस्या तब पैदा होती है, जब हम पश्चिम की प्रगति के कारणों तथा परिणामों अथवा वास्तविकता एवं भासवान के सबन्ध में ठीक-ठीक निर्णय नहीं कर पाते। यह कठिनाई तब तक बढ़ जाती है जब हम यह देखते हैं कि इन प्रगत देशों में से ही एक ने हमारे ऊपर डेढ़ सौ वर्षों तक राज्य किया तथा अपने राज्यकाल में उसने ऐसे अनेक उपाय किये जिससे हमारे अन्दर अपने सबन्ध में तिरस्कार तथा उनके विषय में आदर का भाव पैदा हो जाए। पश्चिम के ज्ञानविज्ञान के साथ ही पश्चिमी देशों रहन सहन, बोल चाल, खान-पान आदि के तरीके भी इस देश में आये। भौतिक विज्ञान ही नहीं अपितु, नीतिशास्त्र, राज्यव्यवस्था, अर्थनीति तथा समाज धारणा के क्षेत्र में भी इन देशों के मानदण्ड हमारे मानक बन गए। आज भारत के शिक्षित वर्ग के जीवन मूल्यों पर पश्चिम का यह प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। हमें निर्णय करना पड़ेगा कि यह प्रभाव अच्छा है या बुरा। जब तक अंग्रेज थे तब तक तो हम स्वदेशी की भावना से अंग्रेजियत को दूर रखने में ही गौरव समझते थे, किन्तु अब जब अंग्रेज चला गया है तब अंग्रेजियत पश्चिम की प्रगति का द्योतक एवं माध्यम बनकर अनुकरण की वस्तु बन गयी है। यदि सत्य है तो संकुचित के भाव का आड़े लाकर राष्ट्र की प्रगति में बाधा डालना ठीक नहीं होगा। किन्तु इसके विपरीत पाश्चात्य जीवन मूल्यों और विज्ञान की प्रगति को यदि अलग किया जा सकता है तो अंग्रेजियत के मोह का परित्याग करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। पर कुछ लोग ऐसे भी है जो पाश्चात्य राजनीति एवं अर्थनीति की दिशा को ही प्रगति की दिशा समझते हैं और इसलिए भारत पर वहाँ की स्थिति का प्रक्षेपण करना चाहते हैं। अतः भारत की भावी दिशा का निर्णय करने से पूर्व यह उचित होगा कि हम पश्चिम की राजनीति के वैचारिक अधिष्ठान तथा उनकी वर्तमान पहेली का विचार कर लें।

यूरोप में राष्ट्रों का उदय

जिन विचार धाराओं ने यूरोपीय राजनीति एवं जीवन को विशेषतः प्रभावित किया है उनमें राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र तथा समाजवाद की प्रमुख रूप से गणना की जा सकती है। इसके साथ ही विश्व एकता तथा शांति का स्वप्न देखने वाले भी वहाँ हुए है और उस दिशा में भी कुछ प्रयत्न किये जा रहे हैं। इन विचारों में राष्ट्रवाद सबसे पुराना तथा बलशाली है। रोम के साम्राज्य के पतन के बाद तथा रोमन कैथोलिक चर्च के प्रति विद्रोह अथवा उसके प्रभाव के कमी के कारण यूरोप में राष्ट्रों का उदय हुआ। यूरोप का पिछला एक हजार वर्ष का इतिहास इन राष्ट्रों के आविर्भाव तथा पारस्परिक संघर्ष का इतिहास है। इन राष्ट्रों के आविर्भाव तथा पारस्परिक संघर्ष इतिहास है। इन राष्ट्रों ने यूरोप महाद्वीप से बाहर जाकर अपने उपनिवेश बनाये तथा दूसरे स्वतंत्र देशों को गुलाम बनाया। राष्ट्रवाद के उदय के कारण राष्ट्र और राज्य की एकता की प्रवृत्ति भी बढ़ी तथा राष्ट्रीय राज्य का यूरोप में उदय हुआ। साथ ही रोमन कैथोलिक चर्च के केन्द्रीय भाव में कमी होकर या तो राष्ट्रीय चर्च का निर्माण हुआ या मजहब का। मजहबी गुरुओं का राजनीति में कोई विशेष स्थान नहीं रहा। सेक्युलर स्टेट की कल्पना का इस प्रकार जन्म हुआ।

यूरोप में प्रजातंत्र का जन्म

दूसरी क्रांतिकारी कल्पना प्रजातंत्र की है जिसका यूरोप की राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव हुआ है। प्रारंभ में तो जितने राष्ट्र बने उनमें राजा ही शासनकर्ता रहा, किन्तु राजा की निरंकुशता के विरूद्ध जनता में भी धीरे धीरे जागरण हुआ। औद्योगिक क्रांति के कारण तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के परिणाम स्वरूप सभी देशों में एक वैश्य वर्ग का प्रादुर्भाव हुआ। स्वभावतः इनका पुराने सामन्तों तथा राजाओं से संघर्ष आया। इस संघर्ष ने प्रजातंत्र की तात्विक भूमिका ग्रहण की। यूनान के नगर गणराज्यों से इस विचार का उद्‌गम ढूंढा गया। प्रत्येक नागरिक की समानता, बन्धुता और स्वतंत्रता के आदर्श के सहारे जनसाधारण को इस तत्व के प्रति आकृष्ट किया गया। फ्रांस में बड़ी भारी राज्य क्रांति हुई। इंग्लैण्ड में भी समय-समय पर आन्दोलन हुए। प्रजातंत्र की जनपथ पर पकड़ हुई। राजवंश या तो समाप्त कर दिये गये अथवा उनके अधिकार मर्यादित कर वैधानिक राज्य पद्धति की नींव डाली गई। आज प्रजातंत्र यूरोप की मान्य पद्धति है। जिन्होंने प्रजातंत्र की अवहेलना की वे भी प्रजातंत्र के प्रति निष्ठा व्यक्त करने में कमी नहीं करते। हिटलर, मुसोलिनी तथा स्टालिन जैसे तानशाहों ने भी प्रजातंत्र को अमान्य नहीं किया।

व्यक्ति का शोषण होता रहा

प्रजातंत्र ने यद्यपि प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार दिया, किन्तु जिन लोगों ने प्रजातंत्र के संघर्ष का नेतृत्व किया था। शक्ति उन्हीं के हाथों में रही। औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप उत्पादन की नई पद्धति पर विश्वास हो गया था। स्वतंत्र रहकर घर में काम करने वाला मजदूर अब कारखानेदार का नौकर बनकर काम करने लगा था। अपना गाँव छोड़कर वह नगरों में आ बसा था। वहां उसके आवास की व्यवस्था बहुत ही अधूरी थी। कारखाने में जिस ढंग से काम होता था, उसके कोई नियम नहीं थे। मजदूर असंगठित एवं दुर्बल था। वह शोषण, अन्याय और उत्पीड़न का शिकार बन गया था। राज्य की शक्ति जिनके हाथों में थी, वे भी उसी वर्ग में से थे, जो उनका शोषण कर रहे थे। अतः राज्य से कोई भी आशा नहीं थी।

इस अन्यायपूर्ण अवस्था के विरूद्ध विद्रोह तथा स्थिति में सुधार की भावना लेकर कई महापुरूष खड़े हुए। उन्होंने अपने आपको समाजवादी कहा। कार्ल मार्क्स भी इन समाजवादियों में से एक है। उसने विद्यमान अन्याय का विरोध करने के प्रयत्न में अर्थव्यवस्था तथा इतिहास का अध्ययन कर एक विश्लेषण प्रस्तुत किया। कार्ल मार्क्स की विवेचना के बाद समाजवाद एक वैज्ञानिक आधार पर खड़ा हो गया। बाद में समाजवादियों ने मार्क्स को माना हो या ना, किन्तु उनके विचारों पर उसकी छाप अवश्य है। ▪

(पं. दीनदयाल उपाध्याय लिखित एकात्म मानववाद पुस्तक से साभार)

▶ डॉ. मोहन यादव को भाजपा विधायक दल का नेता चुने जाने पर प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने स्वागत किया।

▶ प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी का विधानसभा चुनाव में प्रचंड विजय पर अभिनंदन किया।

▶ प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने भाजपा अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी का मध्यप्रदेश में 48.55 प्रतिशत वोट शेयर के साथ विजय पर अभिनंदन किया।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सौजन्य भेंट की।

▶ भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने माल्यार्पण किया।

▶ प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा, संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी, ने प्रदेश पदाधिकारी बैठक में मार्गदर्शन दिया।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इंदौर में मजदूरों का हित मजदूरों को समर्पित कार्यक्रम को संबोधित किया।

▶ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शपथ ग्रहण के बाद बाबा महाकालेश्वर के दर्शन कर पूजन अर्चन किया।

शपथ